SKPF-Wincompete Test Series 2026

पाठ्य सामग्री - PART I : खण्ड 2: भारत का इतिहास

टेस्ट 06: मध्यकालीन भारत का इतिहास

अध्याय 1: इल्बारी तुर्क (इल्तुतमिश एवं बलबन) - सल्तनत का संस्थागत ढांचा

प्रस्तावना: दिल्ली सल्तनत का संक्रमण काल

दिल्ली सल्तनत का इतिहास केवल विजयों का इतिहास नहीं है, बल्कि एक विदेशी तुर्क सत्ता के 'भारतीयकरण' और उसके संस्थागत सुदृढ़ीकरण की प्रक्रिया है। कुतुबुद्दीन ऐबक ने जिस नींव को रखा, वह अस्थाई थी। इल्तुतमिश और बलबन के योगदान को समझे बिना मध्यकालीन भारतीय राजनीतिक संरचना को समझना असंभव है। RPSC की परीक्षाओं में यहाँ से प्रश्न न केवल राजाओं के नाम पर, बल्कि उनके द्वारा स्थापित **'प्रशासनिक शब्दावली'** और **'राजत्व सिद्धांतों'** पर केंद्रित होते हैं।

भाग 1: शम्सुद्दीन इल्तुतमिश (1211-1236) - सल्तनत का वास्तविक संगठनकर्ता

1.1 वैधानिकता का प्रश्न (Issue of Legitimacy)

इल्तुतमिश के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती एक 'गुलाम के गुलाम' होने के नाते अपनी सत्ता को वैध बनाना था।

- **खलीफा से खिलात (1229 ई.):** फरवरी 1229 में बगदाद के अब्बासी खलीफा 'अल-मुस्तसिर बिल्लाह' से इल्तुतमिश को 'सुल्तान-ए-आजम' (महान सुल्तान) की उपाधि और 'खिलात' (सम्मान सूचक वस्त्र) प्राप्त हुआ।
- **परीक्षा दृष्टिकोण (Defensible Point):** यह केवल एक धार्मिक औपचारिकता नहीं थी, बल्कि इसने दिल्ली सल्तनत को कानूनी रूप से गौर और गजनी के नियंत्रण से मुक्त कर एक स्वतंत्र संप्रभु राज्य का दर्जा दिलाया। इससे दिल्ली के तुर्क अमीरों में इल्तुतमिश की स्थिति सर्वोपरि हो गई।

1.2 इक्ता प्रणाली: प्रशासनिक विकेंद्रीकरण का आधार (Detailed Analysis of Iqta System)

इल्तुतमिश ने भारत में पहली बार **'इक्ता'** (Iqta) व्यवस्था को सुव्यवस्थित रूप प्रदान किया।

- **परिभाषा:** इक्ता एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ है 'हिस्सा' या 'अंश'। सुल्तान अपने अधिकारियों को नकद वेतन के बदले भूमि का एक निश्चित क्षेत्र आवंटित करता था जहाँ से वे राजस्व वसूल कर अपना और अपनी सेना का खर्च चलाते थे।
- **संरचना:**
  - **मुक्ता या वली:** इक्ता के प्रमुख को मुक्ता कहा जाता था। उसका मुख्य कार्य राजस्व संग्रह और क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखना था।
  - **फवाजिल (Fawazil):** यह RPSC का एक महत्वपूर्ण PYQ है। इक्तादार द्वारा अपनी सेना और प्रशासनिक खर्च निकालने के बाद जो अतिरिक्त राशि सरकारी खजाने में जमा की जाती थी, उसे 'फवाजिल' कहा जाता था।
- **महत्व:** इक्ता प्रणाली ने सामंतवाद को कमजोर किया और सुल्तान का नियंत्रण दूरस्थ प्रदेशों तक पहुँचाया।

1.3 मुद्रा प्रणाली का मानकीकरण (Standardization of Currency)

इल्तुतमिश पहला तुर्क सुल्तान था जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलाए। उसने भारत की मुद्रा प्रणाली में क्रांतिकारी बदलाव किए:

1. **चाँदी का टंका (Tanka):** इसका वजन 175 ग्रेन था। यह आधुनिक भारतीय रुपये का पूर्वज माना जाता है।
2. **ताँबे का जीतल (Jital):** यह छोटी मुद्रा थी।

- **टंकसालों का नाम:** उसने सिक्कों पर टंकसाल (Mint) का नाम अंकित करने की प्रथा शुरू की। सिक्कों पर 'खलीफा' का नाम अंकित करवाकर उसने अपनी धार्मिक निष्ठा और सत्ता की वैधानिकता को जनता तक पहुँचाया।

1.4 तुर्कान-ए-चहलगानी (चालीसा का गठन)

इल्तुतमिश ने अपनी सत्ता को सुरक्षित करने के लिए 40 वफादार तुर्क दासों का एक समूह बनाया, जिसे **'तुर्कान-ए-चहलगानी'** कहा गया।

- **भूमिका:** ये सुल्तान के रक्षक, प्रशासक और सलाहकार थे। बरनी (Ziauddin Barani) के अनुसार, इन्ही 40 गुलामों ने सल्तनत को मंगोलों और राजपूतों के विरुद्ध स्थिरता प्रदान की।

भाग 2: गयासुद्दीन बलबन (1266-1286) - राजत्व और अनुशासन का युग

2.1 राजत्व का सिद्धांत (Theory of Kingship)

बलबन का राजत्व सिद्धांत 'शक्ति, प्रतिष्ठा और न्याय' पर आधारित था। उसने सुल्तान के पद को 'पवित्र' बनाया।

- **नियाबत-ए-खुदाई:** वह सुल्तान को 'ईश्वर का प्रतिनिधि' मानता था।
- **जिल्ल-ए-इलाही:** उसने स्वयं को 'ईश्वर की छाया' घोषित किया।
- **ईरानी परंपराएं:** बलबन ने दरबार में ईरानी (फारसी) परंपराओं को कड़ाई से लागू किया:
  - **सिजदा (Sijda):** सुल्तान के सामने घुटनों के बल बैठकर सिर झुकाना।
  - **पाबोस (Paibos):** सुल्तान के चरणों को चूमना।
  - **नौरोज़ (Nauroz):** ईरानी नववर्ष का त्यौहार मनाना शुरू किया।
- **RAS के लिए विश्लेषण:** बलबन का मुख्य उद्देश्य 'चालीसा' (जिसका वह स्वयं सदस्य रह चुका था) के अभिमान को तोड़ना और सुल्तान की निरंकुशता स्थापित करना था।

2.2 सैन्य संगठन: दीवान-ए-आरिज का पृथक्करण

बलबन ने पहली बार सैन्य विभाग को वित्त विभाग (दीवान-ए-वजारत) से अलग किया।

- **दीवान-ए-आरिज:** उसने 'इमाद-उल-मुल्क' को पहला 'आरिज-ए-मुमालिक' नियुक्त किया।
- **उद्देश्य:** उत्तर-पश्चिमी सीमा पर मंगोलों के आक्रमणों को रोकने के लिए एक सुसज्जित और स्थायी सेना का निर्माण करना। उसने वृद्ध और अक्षम सैनिकों को पेंशन देकर सेना से हटा दिया (इक्ता के बदले नकद पेंशन)।

2.3 गुप्तचर विभाग (Spy System - Barid-i-Mumalik)

बलबन की सत्ता का एक मुख्य स्तंभ उसका जासूसी तंत्र था।

- **बरीत:** गुप्तचरों को 'बरीत' कहा जाता था। बलबन स्वयं इनकी नियुक्ति करता था और वे सीधे सुल्तान को रिपोर्ट करते थे।
- **प्रभाव:** जासूसों के डर से अमीरों और प्रांतपतियों ने विद्रोह करना छोड़ दिया। बलबन ने जासूसों को आदेश दिया था कि वे शहजादों (उसके पुत्रों) की गतिविधियों पर भी नजर रखें।

भाग 3: बलबन और मंगोल समस्या

बलबन की सीमा नीति "विस्तार के बजाय सुदृढ़ीकरण" (Consolidation over Expansion) की थी। उसने दिल्ली के चारों ओर सुरक्षा घेरा बनाया और मंगोलों के मार्ग में किलों की मरम्मत करवाई। उसके पुत्र 'शहजादा मोहम्मद' की मृत्यु मंगोलों से लड़ते हुए हुई, जो बलबन के जीवन का सबसे बड़ा व्यक्तिगत और राजनीतिक आघात था।

भाग 4: महत्वपूर्ण प्रशासनिक शब्दावली

शब्द	अर्थ	संदर्भ

wincompete

मजलिस-ए-खलवत	सुल्तान के निजी सलाहकारों की परिषद	सल्तनतकालीन प्रशासन
मुशरिफ-ए-मुमालिक	महालेखाकार (Accountant General)	दीवान-ए-वजारत
मुस्तौफी-ए-मुमालिक	महालेखा परीक्षक (Auditor General)	सल्तनतकालीन प्रशासन
दबीर-ए-खास	सुल्तान का निजी सचिव / पत्राचार विभाग का प्रमुख	दीवान-ए-इंशा
खराज	गैर-मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर	राजस्व व्यवस्था
जकात	केवल मुसलमानों से लिया जाने वाला धार्मिक कर	वित्तीय प्रशासन

इल्तुतमिश ने जहाँ सल्तनत को **'इमारत'** दी, वहीं बलबन ने उसे **'आत्मा'** प्रदान की। इल्तुतमिश की इक्ता प्रणाली और मुद्राओं ने आर्थिक आधार दिया, जबकि बलबन के राजत्व सिद्धांत ने सुल्तान के पद को गरिमा और भय से जोड़कर सल्तनत को बिखरने से बचाया।

---

wincompete

wincompete

अध्याय 2: खिलजी क्रांति - अलाउद्दीन खिलजी के प्रशासनिक एवं आर्थिक सुधार

प्रस्तावना: 'खिलजी क्रांति' का ऐतिहासिक महत्व

इतिहासकार **डॉ. मोहम्मद हबीब** और **डॉ. आर.पी. त्रिपाठी** ने 1290 ई. में खिलजी वंश की स्थापना को 'खिलजी क्रांति' की संज्ञा दी है। यह केवल एक वंश परिवर्तन नहीं था, बल्कि इसने दिल्ली सल्तनत के स्वरूप को 'जातीय तुर्क शासन' (Racial Turkic Rule) से बदलकर 'योग्यता और सत्ता' पर आधारित शासन बना दिया। अलाउद्दीन खिलजी (1296–1316) इस क्रांति का मुख्य सूत्रधार था, जिसने धर्म को राजनीति से अलग किया और एक 'सर्वशक्तिमान निरंकुशता' (All-powerful Autocracy) की स्थापना की।

भाग 1: सैन्य सुधार - स्थायी सेना और सैन्य अनुशासन

अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने एक **स्थायी केंद्रीय सेना (Standing Army)** की नींव रखी। उसने इक्तादारों पर निर्भरता समाप्त कर सीधे केंद्र द्वारा भर्ती और वेतन की प्रणाली शुरू की।

1.1 नकद वेतन और प्रशासनिक परिवर्तन

- **आरिज-ए-मुमालिक (Ariz-i-Mumalik):** सेना की भर्ती और निरीक्षण का कार्य सैन्य विभाग का प्रमुख 'आरिज-ए-मुमालिक' करता था।
- **वेतन प्रणाली:** अलाउद्दीन ने सैनिकों को जागीर या इक्ता के स्थान पर **नकद वेतन (Cash Salary)** देना शुरू किया। एक सुसज्जित घुड़सवार (एक अस्पा) को **234 टंका** वार्षिक और अतिरिक्त घोड़ा रखने वाले (दो अस्पा) को **78 टंका** अतिरिक्त दिए जाते थे।

1.2 'दाग' और 'हुलिया' प्रणाली (Dagh and Huliya System)

सैनिकों द्वारा धोखाधड़ी रोकने और निरीक्षण को प्रभावी बनाने के लिए अलाउद्दीन ने दो प्रमुख पद्धतियाँ अपनाईं:

1. **दाग (Dagh):** घोड़ों को शाही मुहर से दागने की प्रथा। इससे निरीक्षण के समय घटिया घोड़ों को पेश करना असंभव हो गया।
2. **हुलिया या चेहरा (Huliya/Chehra):** प्रत्येक सैनिक का विस्तृत शारीरिक विवरण (Descriptive Roll) रजिस्टर में दर्ज किया जाता था ताकि उसकी जगह कोई दूसरा व्यक्ति युद्ध में न जा सके।

भाग 2: आर्थिक और राजस्व सुधार - 'मसाहत' और 'बिसवा'

अलाउद्दीन का मुख्य उद्देश्य राज्य की आय बढ़ाना और विद्रोहों की जड़ (अतिरिक्त धन) को काटना था। उसने भू-राजस्व व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन किए।

2.1 मसाहत प्रणाली (Measurement of Land)

अलाउद्दीन खिलजी पहला सुल्तान था जिसने **भूमि की पैमाइश (Measurement)** के आधार पर लगान निर्धारित किया। इस पद्धति को **'मसाहत'** कहा जाता था।

- **बिसवा (Biswa):** उसने पैमाइश की मानक इकाई 'बिसवा' निर्धारित की (1 बीघा का 20वाँ भाग)।
- **राजस्व दर:** उसने उपज का **50% (आधा भाग)** खराज (लगान) के रूप में निर्धारित किया, जो सल्तनत काल में सर्वाधिक था।

wincompete

2.2 नए करों का आरोपण

उसने कृषि कर के अतिरिक्त दो नए कर लगाए:

1. **घरी कर (Ghari/House Tax):** घरों और झोपड़ियों पर लगाया जाने वाला कर।
2. **चरी कर (Chari/Grazing Tax):** दुधारू पशुओं के चरागाहों पर लगाया जाने वाला कर।

2.3 दीवान-ए-मुस्तखराज (Department of Arrears)

राजस्व अधिकारियों (खुत, मुकद्दम और चौधरी) के भ्रष्टाचार को रोकने और बकाया लगान की वसूली के लिए उसने **'दीवान-ए-मुस्तखराज'** नामक विभाग की स्थापना की। उसने बिचौलियों के विशेषाधिकार समाप्त कर उन्हें भी सामान्य किसान (बलाहार) की तरह कर देने पर मजबूर किया।

भाग 3: बाजार नियंत्रण और मूल्य निर्धारण नीति (Market Control)

अलाउद्दीन की 'बाजार नियंत्रण नीति' मध्यकालीन आर्थिक इतिहास का सबसे आश्चर्यजनक अध्याय है। इतिहासकार **जियाउद्दीन बरनी** के अनुसार, इसका मुख्य उद्देश्य कम वेतन में एक विशाल सेना का भरण-पोषण करना था।

3.1 तीन प्रमुख बाजार

अलाउद्दीन ने दिल्ली में तीन अलग-अलग श्रेणियों के बाजार स्थापित किए:

1. **शहना-ए-मंडी (Mandi):** अनाज का बाजार। यहाँ 'मलिक कबूल' को प्रधान नियुक्त किया गया।
2. **सराय-ए-अदल (Sarai-i-Adl):** निर्मित वस्तुओं, कीमती कपड़ों, चीनी, घी, मेवे और जड़ी-बूटियों का बाजार।
3. **घोड़ों, दासों और मवेशियों का बाजार:** यहाँ बिचौलियों (दलालों) का प्रभाव समाप्त कर दिया गया।

3.2 प्रशासनिक शब्दावली और अधिकारी

- **शहना-ए-मंडी:** प्रत्येक बाजार का अधीक्षक (Superintendent)।
- **बरीत (Barid):** बाजार का निरीक्षक जो सुल्तान को गुप्त रिपोर्ट भेजता था।
- **मुनहियान (Munhiyan):** सुल्तान के निजी गुप्तचर।
- **परवाना रईस (Parwana Rais):** परमिट या लाइसेंस जारी करने वाला अधिकारी (विशेषकर सराय-ए-अदल के लिए)।

3.3 राशनिंग प्रणाली (Rationing System)

अकाल या सूखा पड़ने पर अनाज की कमी न हो, इसके लिए अलाउद्दीन ने **राशनिंग प्रणाली** शुरू की। सरकारी अन्नागारों (Granaries) में अनाज जमा किया जाता था और प्रत्येक घर को निश्चित मात्रा में अनाज दिया जाता था।

भाग 4: खिलजी काल की वास्तुकला और सांस्कृतिक उपलब्धियां

अलाउद्दीन ने न केवल साम्राज्य का विस्तार किया, बल्कि वास्तुकला में 'इंडो-इस्लामिक' शैली को नए आयाम दिए।

4.1 अलाई दरवाजा (Alai Darwaza)

कुतुब मीनार परिसर में निर्मित यह दरवाजा **वैज्ञानिक पद्धति से निर्मित पहला गुंबद** माना जाता है। इसमें लाल पत्थर और सफेद संगमरमर का सुंदर प्रयोग हुआ है। **मार्शल** के अनुसार, "यह इस्लामी स्थापत्य कला का हीरा है।"

4.2 सीरी का किला (Siri Fort)

मंगोलों के आक्रमण से सुरक्षा हेतु उसने दिल्ली में 'सीरी' को अपनी राजधानी बनाया और किलेबंदी की। इसके अतिरिक्त उसने 'हज़ार सुतून' (हज़ार खंभों वाला महल) और 'हौज-ए-खास' का निर्माण करवाया।

4.3 विद्वानों का संरक्षण

अलाउद्दीन के दरबार में **अमीर खुसरो** (तूतिए हिन्द) और **अमीर हसन देहलवी** (भारत का सादी) जैसे महान कवि थे। खुसरो ने अपनी रचनाओं (जैसे 'खजाइनुल फुतूह') में अलाउद्दीन की विजयों और आर्थिक सुधारों का वर्णन किया है।

wincompete

भाग 5: RPSC विशेष - विश्लेषण एवं शब्दावली

शब्दावली	संक्षिप्त विवरण	RAS/PSI हेतु महत्व
खम्स (Khams)	लूट का माल	अलाउद्दीन ने राज्य का हिस्सा 80% और सैनिकों का 20% कर दिया था (विपरीत नियम)।
मसाहत	भूमि पैमाइश	अलाउद्दीन द्वारा शुरू की गई वैज्ञानिक लगान पद्धति।
आमिस	राजस्व अधिकारी	तहसील स्तर पर राजस्व वसूली करने वाला।
सहना	बाजार निरीक्षक	कीमतों पर नियंत्रण और माप-तौल की निगरानी।
अस्पा	घोड़ों की संख्या	एक अस्पा (1 घोड़ा), दो अस्पा (2 घोड़े)।

निष्कर्ष

अलाउद्दीन खिलजी के सुधार केवल तात्कालिक सैन्य आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं थे, बल्कि उन्होंने भारत में पहली बार एक **केंद्रीकृत नौकरशाही** और **नियोजित अर्थव्यवस्था** का खाका खींचा। हालाँकि उसकी नीतियाँ कठोर थीं, लेकिन उन्होंने उत्तर और दक्षिण भारत को एक राजनीतिक सूत्र में पिरोने का अभूतपूर्व कार्य किया।

wincompete

अध्याय 3: तुगलक नवाचार - प्रशासनिक प्रयोग एवं लोक कल्याणकारी राज्य

प्रस्तावना: तुगलक वंश का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

गयासुद्दीन तुगलक द्वारा 1320 ई. में स्थापित तुगलक वंश ने दिल्ली सल्तनत को उसके भौगोलिक विस्तार के चरम पर पहुँचाया। जहाँ खिलजी शासन 'सैन्य निरंकुशता' पर आधारित था, वहीं तुगलक काल **'प्रशासनिक नवाचार'** (Innovation) और **'लोक कल्याण'** (Public Welfare) के बीच के संघर्ष का काल है।

1.मुहम्मद बिन तुगलक (1325–1351) - विरोधाभासों का सम्मिश्रण

मुहम्मद बिन तुगलक (MBT) मध्यकालीन भारत का सबसे शिक्षित और विद्वान सुल्तान था। उसे खगोलशास्त्र, गणित, चिकित्सा और दर्शन का गहरा ज्ञान था। **जियाउद्दीन बरनी** ने उसे 'विरोधाभासों का मिश्रण' कहा है। RPSC की दृष्टि से उसकी पाँच प्रमुख योजनाएँ और कृषि सुधार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

1.1 दोआब में कर वृद्धि (Taxation in Doab)

सुल्तान ने साम्राज्य की आय बढ़ाने के लिए गंगा-यमुना दोआब के उपजाऊ क्षेत्र में भू-राजस्व की दर में वृद्धि की।

- **विस्तार:** बरनी के अनुसार यह वृद्धि 10 से 20 गुना थी, जबकि आधुनिक इतिहासकार इसे उपज का 50% मानते हैं।
- **विफलता का कारण:** दुर्भाग्यवश, उसी समय दोआब में भीषण अकाल और महामारी (प्लेग) फैल गई। अधिकारियों ने निर्दयतापूर्वक कर वसूली जारी रखी, जिससे किसानों ने विद्रोह कर दिया।
- **रक्षात्मक तथ्य:** सुल्तान ने बाद में अपनी गलती मानी और किसानों को राहत देने के लिए 'सोनधर' ऋण बांटे।

1.2 राजधानी परिवर्तन: दिल्ली से देवगिरी (1326–27)

यह सुल्तान की सबसे विवादास्पद योजना थी। उसने देवगिरी का नाम बदलकर **'दौलताबाद'** रखा।

- **रणनीतिक उद्देश्य:** सुल्तान दक्षिण भारत पर प्रभावी नियंत्रण चाहता था क्योंकि देवगिरी साम्राज्य के केंद्र में स्थित थी। साथ ही, दिल्ली मंगोलों के सीधे निशाने पर थी।
- **इब्नबतूता का विवरण:** प्रसिद्ध मोरक्को यात्री इब्नबतूता (जो 1333 में भारत आया) के अनुसार, दिल्ली की जनता द्वारा सुल्तान को अपमानजनक पत्र लिखे जाने के कारण उसने दंडस्वरूप यह निर्णय लिया।
- **परिणाम:** पूरी जनता को दिल्ली छोड़ने का आदेश दिया गया। मार्ग की कठिनाइयों के कारण भारी जनहानि हुई। अंततः सुल्तान को पुनः दिल्ली लौटने का आदेश देना पड़ा क्योंकि उत्तर भारत पर नियंत्रण कमजोर हो रहा था।

1.3 सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन (Token Currency - 1329–30)

मुहम्मद बिन तुगलक विश्व इतिहास में **'सांकेतिक मुद्रा'** के सफल प्रयोगकर्ताओं (जैसे चीन के कुबलई खान) से प्रभावित था।

- **तकनीकी पक्ष:** उसने चाँदी के टंका के स्थान पर ताँबे और पीतल के सिक्के चलाए जिनका मूल्य चाँदी के बराबर रखा गया।
- **विफलता का कारण:** सुल्तान टकसाल पर नियंत्रण नहीं रख सका। "प्रत्येक हिंदू का घर टकसाल बन गया" (बरनी का कथन)। नकली सिक्कों की बाढ़ आ गई, जिससे व्यापार ठप हो गया। अंततः सुल्तान को सरकारी खजाने से चाँदी देकर नकली सिक्कों को वापस लेना पड़ा।

1.4 कृषि सुधार: 'दीवान-ए-अमीर-कोही' (Department of Agriculture)

wincompete

RPSC परीक्षाओं में यह सबसे अधिक पूछा जाने वाला प्रश्न है। सुल्तान ने कृषि विकास हेतु एक पृथक विभाग **'दीवान-ए-अमीर-कोही'** बनाया।

- **नवाचार:** उसने 'फसल चक्र' (Crop Rotation) की योजना बनाई और बंजर भूमि को खेती योग्य बनाने हेतु सरकारी सहायता दी।
- **सोनधर (Sondhar):** अकाल के समय किसानों को बीज, हल और बैल खरीदने के लिए नकद ऋण दिए गए जिन्हें 'सोनधर' या 'तकावी' कहा गया।

2: फिरोज शाह तुगलक (1351–1388) - कल्याणकारी निरंकुशता

मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु के बाद फिरोज शाह तुगलक (FST) सुल्तान बना। उसने तुष्टीकरण की नीति अपनाई और शासन को **'इस्लामी शरीयत'** के अनुसार चलाने का प्रयास किया।

2.1 राजस्व व्यवस्था और कर सुधार

फिरोज ने उन सभी 24 कष्टदायक करों (Abwabs) को समाप्त कर दिया जो शरीयत में मान्य नहीं थे। उसने केवल 4 प्रमुख कर लागू रखे:

1. **खराज (Kharaj):** लगान (उपज का 1/10)।
2. **खम्स (Khams):** युद्ध में लूट का माल (राज्य का 1/5 हिस्सा)।
3. **जकात (Zakat):** मुसलमानों से लिया जाने वाला धार्मिक कर।
4. **जजिया (Jizya):** गैर-मुसलमानों से लिया जाने वाला कर।

- **विशेष तथ्य:** फिरोज तुगलक पहला सुल्तान था जिसने **ब्राह्मणों पर भी जजिया** लगाया।

2.2 नहर तंत्र और सिंचाई इंजीनियरिंग (Irrigation Works)

फिरोज तुगलक को 'नहरों का निर्माता' कहा जाता है। उसने उत्तर भारत में सिंचाई हेतु नहरों का जाल बिछाया।

- **प्रमुख नहरें:** 1. **उलुघखानी नहर:** यमुना नदी से हिसार तक।
  2. **राजबवाहा नहर:** सतलज नदी से घग्गर तक।
- **हक-ए-शर्ब (Haq-i-Sharb):** यह सिंचाई कर था। जो किसान सरकारी नहरों से पानी लेते थे, उन्हें अपनी उपज का 1/10 भाग कर के रूप में देना पड़ता था।

2.3 लोक कल्याणकारी विभाग (Welfare Departments)

फिरोज ने शासन को सेवा भाव से जोड़ा, जिसके तहत कई नए विभाग स्थापित किए गए:

- **दीवान-ए-खैरात (Diwan-i-Khairat):** अनाथ मुस्लिम लड़कियों के विवाह और विधवाओं की सहायता हेतु।
- **दीवान-ए-बंदगान (Diwan-i-Bundagan):** दासों की देखभाल हेतु। उसके पास **1,80,000 दास** थे।
- **दार-उल-शफा (Dar-ul-Shafa):** दिल्ली में स्थापित एक निःशुल्क अस्पताल जहाँ कुशल हकीम तैनात थे।

2.4 नगर निर्माण और सार्वजनिक कार्य

फिरोज तुगलक ने लगभग **300 नए नगरों** की स्थापना की।

- **प्रमुख नगर:** फिरोजाबाद (उसकी राजधानी), हिसार, फतेहाबाद, जौनपुर (जूना खान/MBT की स्मृति में) और फिरोजपुर।
- **ऐतिहासिक संरक्षण:** उसने टोपरा और मेरठ से **अशोक के दो स्तंभों** को मंगवाकर दिल्ली में स्थापित करवाया। उसने कुतुब मीनार की ऊपरी मंजिलों की मरम्मत भी करवाई जो बिजली गिरने से क्षतिग्रस्त हो गई थीं।

3: तुगलक प्रशासन - पदानुक्रम और शब्दावली

तुगलक काल में वजीर (प्रधानमंत्री) का पद अपने चरमोत्कर्ष पर था। 'खान-ए-जहाँ मकबूल' (फिरोज का वजीर) एक प्रभावशाली व्यक्तित्व था।

प्रशासनिक शब्दावली

शब्दावली	विवरण	परीक्षा महत्व
वजारत (Wazarat)	वित्त विभाग का प्रमुख	तुगलक काल वजारत का स्वर्ण काल था।
मुशरिफ-ए-मुमालिक	महालेखाकार	आय का विवरण रखने वाला।
मुस्तौफी-ए-मुमालिक	महालेखा परीक्षक	खर्चों की जाँच करने वाला।
मजलिस-ए-आली	अमीरों की परिषद	सुल्तान की परामर्शदात्री संस्था।
इद्रार (Idrar)	विद्वानों को दी जाने वाली सहायता	फिरोज तुगलक द्वारा दी जाने वाली पेंशन।

4: तुगलक स्थापत्य की विशेषताएं

तुगलक वास्तुकला खिलजी काल के अलंकरण के विपरीत **'सादगी'** और **'विशालता'** पर आधारित थी।

- **ढलवां दीवारें (Slopping Walls):** इसे 'बटै' (Batter) शैली कहा जाता है। दीवारें नीचे से चौड़ी और ऊपर से पतली होती थीं ताकि मजबूती बनी रहे। (गयासुद्दीन तुगलक के मकबरे में स्पष्ट है)।
- **प्रमुख इमारतें:** तुगलकाबाद का किला, गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा, फिरोज शाह कोटला।

5:मुहम्मद बिन तुगलक बनाम फिरोज तुगलक: तुलनात्मक अध्ययन

1. **धार्मिक नीति:** MBT धर्मनिरपेक्ष और तार्किक था (वह होली मनाता था और जैन विद्वानों से मिलता था), जबकि FST कट्टर सुन्नी था जिसने उलेमाओं को प्रसन्न रखने की नीति अपनाई।
2. **सैन्य सुधार:** MBT ने सेना में योग्यता को महत्व दिया, जबकि FST ने सैन्य पदों को **वंशानुगत (Hereditary)** बना दिया, जिससे कालांतर में सेना कमजोर हुई।
3. **मुद्रा:** MBT का प्रयोग विफल रहा, जबकि FST ने 'अद्धा' और 'बिख' (ताँबे-चाँदी के मिश्रित सिक्के) चलाए जो सफल रहे।

निष्कर्ष

तुगलक युग दिल्ली सल्तनत के पतन और उत्कर्ष दोनों का साक्षी है। मुहम्मद बिन तुगलक के प्रयोग समय से आगे थे, लेकिन व्यावहारिक दूरदर्शिता की कमी ने उन्हें विफल कर दिया। दूसरी ओर, फिरोज तुगलक ने लोक कल्याणकारी कार्यों से जनता का विश्वास जीता, लेकिन उसकी वंशानुगत और तुष्टीकरण की नीतियों ने सल्तनत के सैन्य ढांचे को खोखला कर दिया, जिसका लाभ 1398 में **तैमूर लंग** के आक्रमण को मिला।

अध्याय 4: लोदी वंश और अफगान संप्रभुता - प्रथम अफगान साम्राज्य एवं विकेंद्रीकरण

प्रस्तावना: अफगान राजत्व का उदय

1451 ई. में बहलोल लोदी द्वारा लोदी वंश की स्थापना दिल्ली सल्तनत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ थी। यह तुर्कों के 'निरंकुश केंद्रीकरण' के स्थान पर अफगानों की **'जनतांत्रिक राजशाही'** (Democratic Monarchy) का प्रयोग था। जहाँ इल्तुतमिश और बलबन ने सुल्तान को 'ईश्वर की छाया' बनाकर सर्वोपरि रखा, वहीं लोदी शासकों (विशेषकर बहलोल) ने सुल्तान को 'समानों में प्रथम' (First among equals) माना। इस अध्याय में हम अफगान संप्रभुता के इसी बदलते स्वरूप और उसके प्रशासनिक प्रभावों का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

भाग 1: बहलोल लोदी (1451–1489) - बंधुत्व और सामंजस्य का युग

बहलोल लोदी लोदी वंश का संस्थापक और दिल्ली की गद्दी पर बैठने वाला पहला अफगान शासक था। उसका शासनकाल अफगान सरदारों के साथ 'भाईचारे' की नीति पर आधारित था।

1.1 बहलोल का राजत्व सिद्धांत: 'मसनद-ए-आली'

बहलोल लोदी जानता था कि अफगान स्वभाव से स्वतंत्र और कबीलाई स्वाभिमान वाले होते हैं। इसलिए उसने बलबन की तरह निरंकुशता नहीं दिखाई।

- **समानता का व्यवहार:** वह दरबार में ऊँचे सिंहासन पर बैठने के बजाय अपने सरदारों के साथ कालीन पर बैठता था।
- **मसनद-ए-आली (Masnad-i-Ali):** उसने अपने प्रमुख अमीरों को 'मसनद-ए-आली' कहकर संबोधित किया। यदि कोई अमीर बीमार या नाराज होता था, तो सुल्तान स्वयं उसके घर जाकर उसे मनाता था।
- **RPSC हेतु विश्लेषण:** बहलोल की यह नीति 'विकेंद्रीकरण' का सबसे बड़ा उदाहरण है। उसने सुल्तान के पद की प्रतिष्ठा की तुलना में अफगान कबीलों की एकता को प्राथमिकता दी।

1.2 सैन्य विजय: जौनपुर का विलय

बहलोल लोदी की सबसे बड़ी उपलब्धि **जौनपुर के शर्की राज्य** को दिल्ली सल्तनत में पुनः मिलाना था। जौनपुर की विजय ने दिल्ली की खोई हुई प्रतिष्ठा को वापस दिलाया और साम्राज्य की सीमाएँ पूर्व की ओर विस्तृत कीं।

भाग 2: सिकंदर लोदी (1489–1517) - लोदी वंश का चरमोत्कर्ष

बहलोल के पुत्र निजाम खान ने 'सिकंदर शाह' की उपाधि धारण की। वह लोदी वंश का सबसे योग्य और शक्तिशाली शासक सिद्ध हुआ। उसने बहलोल की 'भाईचारे' की नीति को त्यागकर पुनः **केंद्रीकरण** की ओर कदम बढ़ाए।

wincompete

2.1 प्रशासनिक और राजस्व सुधार: 'गज-ए-सिकंदरी'

सिकंदर लोदी ने कृषि और व्यापार के विकास हेतु भूमि मापन की एक नई इकाई शुरू की।

- **गज-ए-सिकंदरी:** यह 30 इंच का एक मानक पैमाना था, जो मुगल काल (अकबर के समय) तक प्रचलित रहा। इसका उद्देश्य लगान निर्धारण में पारदर्शिता लाना था।
- **व्यापारिक चुंगी की समाप्ति:** उसने खाद्यान्न पर से 'जकात' (व्यापारिक कर) हटा दिया ताकि अनाज सस्ता हो सके और जनता को राहत मिले।

2.2 आगरा नगर की स्थापना (1504 ई.)

RPSC परीक्षाओं में यह तथ्य बार-बार पूछा जाता है। सिकंदर लोदी ने राजस्थान के शासकों पर नियंत्रण रखने और व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा हेतु 1504 में **आगरा** नगर की स्थापना की। 1506 में उसने इसे अपनी राजधानी बनाया।

2.3 धार्मिक नीति और साहित्यिक योगदान

सिकंदर लोदी एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था। उसने ज्वालामुख़ी मंदिर की मूर्ति को तोड़कर उसके टुकड़ों को कसाइयों को मांस तौलने के लिए दे दिया था।

- **गुलरुखी (Gulrukhi):** वह फारसी भाषा में 'गुलरुखी' उपनाम से कविताएँ लिखता था।
- **फरहंगे-सिकंदरी:** उसके समय में आयुर्वेद के एक प्रसिद्ध ग्रंथ का फारसी में अनुवाद हुआ, जिसे 'फरहंगे-सिकंदरी' या 'तिब्ब-ए-सिकंदरी' कहा गया।
- **संगीत:** उसे संगीत का शौक था; 'लज्जत-ए-सिकंदरशाही' उसके काल का प्रमुख संगीत ग्रंथ है।

भाग 3: इब्राहिम लोदी (1517–1526) - संप्रभुता का संघर्ष और पतन

इब्राहिम लोदी ने सुल्तान के पद की गरिमा को 'निरंकुशता' से जोड़ने का प्रयास किया, जो अफगान सरदारों को स्वीकार्य नहीं था। उसने कहा, "सुल्तान का कोई सगा-संबंधी नहीं होता, उसका केवल दास होता है।"

3.1 अफगान अमीरों से संघर्ष

इब्राहिम ने अपने पिता और दादा की उदार नीति के विपरीत अफगान अमीरों को कड़े अनुशासन में रखने का प्रयास किया। उसने पुराने अनुभवी सरदारों (जैसे आजम हुमायूँ) को जेल में डाल दिया। इसके परिणामस्वरूप पंजाब के गवर्नर **दौलत खान लोदी** और इब्राहिम के चाचा **आलम खान** ने विद्रोह कर दिया।

3.2 राजस्थान के संदर्भ में: राणा सांगा से संघर्ष (Battle of Khatoli and Dholpur)

RPSC की दृष्टि से यह भाग अत्यंत महत्वपूर्ण है।

1. **खातौली का युद्ध (1517):** इब्राहिम लोदी और मेवाड़ के **महाराणा सांगा** के बीच हुआ, जिसमें सांगा विजयी रहे।
2. **बाड़ी (धौलपुर) का युद्ध (1518):** सांगा ने पुनः लोदी सेना को पराजित किया।

- **निष्कर्ष:** इन युद्धों ने इब्राहिम की सैन्य कमजोरी को उजागर किया और बाबर के भारत आगमन का मार्ग प्रशस्त किया।

3.3 पानीपत का प्रथम युद्ध (21 अप्रैल, 1526)

दौलत खान लोदी और आलम खान के निमंत्रण पर बाबर ने भारत पर आक्रमण किया।

- **रणभूमि:** पानीपत के मैदान में बाबर की आधुनिक 'तुगलुमा' युद्ध पद्धति और तोपखाने के सामने अफगान वीरता विफल रही।
- **शहादत:** इब्राहिम लोदी **दिल्ली सल्तनत का एकमात्र सुल्तान** था जो युद्ध भूमि में लड़ते हुए मारा गया। इसके साथ ही दिल्ली सल्तनत का अंत हुआ और मुगल साम्राज्य की नींव पड़ी।

भाग 4: अफगान प्रशासन - केंद्रीकरण बनाम कबीलाई लोकतंत्र

लोदी प्रशासन 'इक्ता' प्रणाली पर आधारित था, लेकिन यहाँ इक्तादारों को 'वजहदार' कहा जाता था।

प्रशासनिक शब्दावली

शब्दावली	विवरण	ऐतिहासिक संदर्भ
मसनद-ए-आली	उच्च अफगान सरदारों की उपाधि	बहलोल लोदी का युग
गज-ए-सिकंदरी	भूमि मापन की इकाई	राजस्व सुधार
गुलरुखी	सिकंदर लोदी का साहित्यिक नाम	फारसी कविताएँ
वजहदार	लोदी काल के इक्तादार	प्रशासनिक विकेंद्रीकरण
खराज	भू-राजस्व	उपज का 1/3 या 1/2 भाग

भाग 5: लोदी स्थापत्य - 'मकबरों का युग'

लोदी काल को स्थापत्य कला में 'मकबरों का काल' (Age of Tombs) कहा जाता है।

- **दोहरे गुंबद (Double Dome):** लोदी स्थापत्य की सबसे बड़ी विशेषता 'दोहरा गुंबद' है। इसका पहला उदाहरण **सिकंदर लोदी का मकबरा** है। यह तकनीक इमारत को बाहर से ऊँचा दिखाने और भीतर से तापमान नियंत्रित करने के लिए अपनाई गई थी।
- **अष्टकोणीय मकबरे (Octagonal Tombs):** लोदी शासकों और उनके अमीरों के मकबरे अक्सर आठ कोनों वाले होते थे।
- **प्रमुख इमारतें:** लोदी गार्डन (दिल्ली), मोठ की मस्जिद (सिकंदर लोदी के वजीर मियाँ भुवा द्वारा निर्मित), शीश गुंबद।

भाग 6: लोदी वंश के पतन के कारण

1. **राजत्व सिद्धांत का विरोधाभास:** बहलोल की उदारता ने अमीरों को बहुत शक्तिशाली बना दिया, जबकि इब्राहिम की कठोरता ने उन्हें शत्रु बना दिया।
2. **राणा सांगा का उदय:** राजस्थान में सांगा की शक्ति ने लोदी साम्राज्य की जड़ों को कमजोर किया।
3. **बाबर का तोपखाना:** अफगानों के पास आधुनिक युद्ध तकनीक (तोपखाना और बारूद) का अभाव था।
4. **विकेंद्रीकृत जागीरदारी:** लोदी साम्राज्य वास्तव में 'जागीरों का परिसंघ' (Confederacy of Jagirs) था, जहाँ केंद्रीय शक्ति कमजोर होते ही क्षेत्रीय सरदार स्वतंत्र हो गए।

निष्कर्ष

लोदी वंश दिल्ली सल्तनत का एक शानदार उपसंहार (Epilogue) था। बहलोल लोदी ने इसे स्थिरता दी, सिकंदर लोदी ने इसे वैभव दिया और इब्राहिम लोदी के हठ ने इसे इतिहास के पन्नों में समेट दिया। आगरा की स्थापना और गज-ए-सिकंदरी जैसे नवाचारों ने आने वाले मुगल प्रशासन के लिए आधार तैयार किया।

अध्याय 5: सल्तनतकालीन प्रशासन, इक्ता प्रणाली और भू-राजस्व शब्दावली

प्रस्तावना: सल्तनतकालीन शासन का स्वरूप

दिल्ली सल्तनत का शासन मुख्य रूप से **'सैन्य धर्मतंत्र' (Military Theocracy)** पर आधारित था। इसका स्वरूप केंद्रीकृत और निरंकुश था, जहाँ सुल्तान समस्त शक्ति का केंद्र होता था। सल्तनतकालीन प्रशासन ने प्राचीन भारतीय ग्राम व्यवस्था और फारसी-अरबी प्रशासनिक प्रणालियों के मध्य एक अद्भुत 'समन्वय' स्थापित किया।

1: केंद्रीय प्रशासन - सत्ता के स्तंभ

सुल्तान शासन का प्रधान था, लेकिन उसे परामर्श देने के लिए **'मजलिस-ए-खलवत'** (परामर्शदात्री परिषद) होती थी। प्रशासनिक कार्यों के सुचारु संचालन हेतु चार प्रमुख विभाग (मंत्रालय) थे, जिन्हें 'दीवान' कहा जाता था।

1.1 दीवान-ए-वजारत (वित्त विभाग)

इसका प्रमुख **'वजीर'** (प्रधानमंत्री) होता था। वजीर सुल्तान के बाद सबसे शक्तिशाली अधिकारी था।

- **भूमिका:** राजस्व संग्रह, व्यय का नियंत्रण और अन्य विभागों पर निगरानी।
- **विकास:** तुगलक काल 'वजारत का स्वर्ण काल' माना जाता है।
- **सहायक अधिकारी:** * **मुशरिफ-ए-मुमालिक:** महालेखाकार (आय का लेखा-जोखा)।
    - **मुस्तौफी-ए-मुमालिक:** महालेखा परीक्षक (खर्चों की जाँच)।

1.2 दीवान-ए-आरिज (सैन्य विभाग)

इसका प्रमुख **'आरिज-ए-मुमालिक'** कहलाता था। बलबन ने इसे एक पृथक विभाग के रूप में स्थापित किया।

- **कार्य:** सैनिकों की भर्ती, प्रशिक्षण, वेतन वितरण और घोड़ों का निरीक्षण।
- **नोट:** आरिज मुख्य सेनापति नहीं होता था; सुल्तान स्वयं प्रधान सेनापति था।

1.3 दीवान-ए-इंशा (पत्राचार विभाग)

इसका प्रमुख **'दबीर-ए-खास'** या 'अमीर-ए-मुंशी' होता था।

- **कार्य:** शाही आदेशों (फरमान) का प्रारूप तैयार करना और प्रांतीय गवर्नरों के साथ पत्राचार करना। यह सुल्तान का 'सचिवालय' था।

1.4 दीवान-ए-रिसालत (धार्मिक एवं विदेशी विभाग)

इसका प्रमुख **'सद्र-उस-सुद्दूर'** होता था।

- **कार्य:** धार्मिक मामलों का प्रबंधन, दान-पुण्य की देखरेख और विद्वानों को वजीफा देना। अक्सर यही अधिकारी **'काजी-उल-कुजात'** (मुख्य न्यायाधीश) के रूप में भी कार्य करता था।

2: इक्ता प्रणाली - विकास और परिवर्तन (Iqta System)

इक्ता प्रणाली दिल्ली सल्तनत का सबसे विशिष्ट प्रशासनिक नवाचार था, जिसने सामंतवाद को राजकीय नियंत्रण में बदला।

2.1 इक्ता का ऐतिहासिक विकास

इक्ता एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ है 'भूमि का टुकड़ा'। भारत में इसे सुव्यवस्थित रूप **इल्तुतमिश** ने दिया।

- **प्रारंभिक स्वरूप (13वीं सदी):** इक्तादार (मुक्ति या वली) केवल भू-राजस्व के संग्राहक थे। उन्हें प्राप्त आय से अपनी सेना रखनी होती थी।
- **अलाउद्दीन खिलजी के सुधार:** उसने छोटे इक्ताओं को समाप्त कर भूमि को **'खालसा'** (सीधे केंद्र के अधीन) में बदल दिया।
- **तुगलक काल:** फिरोज तुगलक ने इक्ता को **'वंशानुगत'** बना दिया, जिससे केंद्रीय नियंत्रण कमजोर हुआ।
- **लोदी काल:** इक्तादारों को 'वजहदार' कहा जाने लगा और वे काफी स्वतंत्र हो गए।

2.2 इक्ता के प्रकार

1. **बड़े इक्ता:** ये प्रांतों के समान थे, जिनके प्रमुख (मुक्ति) के पास प्रशासनिक और सैन्य दोनों शक्तियाँ थीं।
2. **छोटे इक्ता:** ये केवल वेतन के बदले दी गई भूमि थी, जहाँ इक्तादार को केवल राजस्व वसूली का अधिकार था।

3: भू-राजस्व और वित्तीय शब्दावली (Revenue Terminology)

सल्तनत की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था। राजस्व व्यवस्था के तकनीकी शब्दों को समझना RPSC के लिए अनिवार्य है।

3.1 प्रमुख कर (Taxes)

1. **खराज (Kharaj):** गैर-मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर (उपज का 1/3 से 1/2)।
2. **उश्र (Ushr):** मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर (उपज का 1/10)।
3. **खम्स (Khams):** युद्ध में लूटे गए माल का हिस्सा। शरीयत के अनुसार राज्य का 1/5 और सैनिकों का 4/5 भाग होता था। (अलाउद्दीन और MBT ने इसे उलट दिया था)।
4. **जकात (Zakat):** केवल मुसलमानों से लिया जाने वाला संपत्ति कर (2.5%)।
5. **जजिया (Jizya):** गैर-मुसलमानों से लिया जाने वाला सुरक्षात्मक कर।

3.2 महत्वपूर्ण शब्दावली (Defensible Data)

- **मसाहत:** भूमि की पैमाइश के आधार पर लगान निर्धारण (अलाउद्दीन द्वारा प्रारंभ)।
- **बिसवा:** भूमि मापने की मानक इकाई।
- **फवाजिल (Fawazil):** इक्तादारों द्वारा केंद्र को भेजी जाने वाली अतिरिक्त बचत राशि।
- **अवाब (Abwabs):** मुख्य लगान के अतिरिक्त लिए जाने वाले उप-कर (जैसे चरी, घरी)।
- **हुकूक-ए-दीवानी:** राजस्व अधिकारियों के विशेषाधिकार।
- **बलाहार:** साधारण किसान।

4: स्थानीय प्रशासन - इकाईयाँ और अधिकारी

सल्तनत साम्राज्य को प्रशासनिक सुगमता हेतु विभिन्न इकाइयों में विभाजित किया गया था।

1. **प्रांत (इक्ता):** प्रमुख 'मुक्ति' या 'वली'।
2. **शिक्क (Shiq):** 14वीं शताब्दी (तुगलक काल) में प्रांतों को 'शिक्कों' (जिलों) में बाँटा गया। प्रमुख अधिकारी **'शिक्कदार'** था।
3. **परगना:** कई गाँवों का समूह। प्रमुख अधिकारी **'आमिल'** (राजस्व) और 'मुशरिफ' थे।
4. **ग्राम:** प्रशासन की सबसे छोटी इकाई। यहाँ स्थानीय हिंदू वंशानुगत अधिकारी प्रभावी थे:
    - **खुत:** ज़मींदार।
    - **मुकद्दम:** गाँव का मुखिया।
    - **पटवारी:** राजस्व लेखाकार।

wincompete

5: न्याय और गुप्तचर विभाग

5.1 न्याय व्यवस्था

न्याय का स्रोत शरीयत, हदीस और सुल्तान के आदेश (जवाबित) थे।

- **काजी-उल-कुजात:** सुल्तान के बाद सर्वोच्च न्यायाधीश।
- **अमीर-ए-दाद:** वह अधिकारी जो सुल्तान की अनुपस्थिति में बड़े मुकदमों की सुनवाई करता था।

5.2 गुप्तचर विभाग (Espionage)

- **बरीत-ए-मुमालिक:** गुप्तचर विभाग का प्रमुख।
- **बरीत:** आधिकारिक समाचार लेखक/गुप्तचर।
- **मुनहियान:** गुप्त रूप से सूचना एकत्र करने वाले जासूस (विशेषकर अलाउद्दीन के काल में)।

6:सल्तनतकालीन प्रशासन की विफलता के बीज

1. **वंशानुगत सिद्धांत:** फिरोज तुगलक द्वारा प्रशासनिक और सैन्य पदों को वंशानुगत बनाना।
2. **निरंकुशता और विकेंद्रीकरण का द्वंद्व:** जब सुल्तान शक्तिशाली (अलाउद्दीन) था तो केंद्रीकरण रहा, लेकिन कमजोर सुल्तानों के समय अमीर और इक्तादार स्वतंत्र हो गए।
3. **उलेमा वर्ग का हस्तक्षेप:** धर्म और राजनीति के घालमेल ने कई तार्किक योजनाओं (जैसे MBT की) को विफल कर दिया।

निष्कर्ष

सल्तनतकालीन प्रशासन ने एक ऐसा ढाँचा तैयार किया जिसने भारत में एक विशाल साम्राज्य को तीन शताब्दियों तक संगठित रखा। इक्ता प्रणाली ने जहाँ राजस्व सुनिश्चित किया, वहीं 'दीवान-ए-वजारत' ने वित्तीय अनुशासन। इसी प्रशासनिक नींव पर आगे चलकर शेरशाह सूरी और अकबर ने अपनी महान प्रशासनिक इमारतों का निर्माण किया।

wincompete

दीवान-ए-इंशा
(पत्राचार)
दीवान-ए-रिसालत
(धार्मिक)
सुल्तान
दीवान-ए-वजारत
(वित्त)
दीवान-ए-आरिज
(सैन्य)
इक्ता
इक्ता प्रणाली
राजस्व संग्रह (खराज)

अध्याय 6: विजयनगर स्थापत्य - हम्पी के मंदिर, विट्ठल स्वामी मंदिर और शहरी नियोजन

विजयनगर - 'विस्मृत साम्राज्य' का स्थापत्य वैभव

विजयनगर साम्राज्य का उदय दक्षिण भारत में तुंगभद्रा नदी के तट पर हिंदू धर्म और संस्कृति के पुनर्जागरण के रूप में हुआ। स्थापत्य कला की दृष्टि से, विजयनगर शैली (विजयनगर स्कूल) द्रविड़ वास्तुकला का अंतिम और सबसे भव्य चरण मानी जाती है। इसमें चोल, पांड्य, होयसल और चालुक्य शैलियों का समन्वय तो था ही, साथ ही इसमें अपनी विशिष्ट मौलिकताएं भी थीं। **डॉ. ए.एल. बाशम** के अनुसार, "विजयनगर के खंडहर आज भी उस वैभव की गवाही देते हैं जो कभी रोम के समकक्ष था।"

1: शहरी नियोजन और दुर्गबंदी (Urban Planning and Fortification)

विजयनगर (हम्पी) का शहरी नियोजन मध्यकालीन विश्व के सबसे उन्नत नियोजनों में से एक था। विदेशी यात्रियों जैसे **डोमिंगो पायस (Domingo Paes)** और **अब्दुर रज्जाक** के विवरणों से इसकी भव्यता स्पष्ट होती है।

1.1 सात परतों वाली किलेबंदी (Seven-layered Fortification)

अब्दुर रज्जाक, जो फारस के सुल्तान का राजदूत बनकर आया था, लिखता है कि विजयनगर सात अभेद्य दीवारों से घिरा हुआ था।

- **कृषि क्षेत्र का समावेश:** विजयनगर की किलेबंदी की सबसे अनूठी विशेषता यह थी कि बाहरी दीवारों के भीतर न केवल शहर, बल्कि **खेत, बगीचे और सिंचाई के साधन** भी शामिल थे। यह सामरिक रणनीति शत्रु द्वारा घेराबंदी किए जाने पर रसद आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए अपनाई गई थी।
- **निर्माण तकनीक:** दीवारों के निर्माण में गारे (Mortar) या चूने का प्रयोग नहीं किया गया था। बड़े-बड़े ग्रेनाइट के पत्थरों को 'इंटरलॉकिंग' (Interlocking) तकनीक से जोड़ा गया था।

1.2 आवासीय और राजकीय केंद्र (The Royal Center)

शहर को विभिन्न केंद्रों में विभाजित किया गया था:

- **राजकीय केंद्र (Royal Center):** यहाँ राजा का महल, सभा भवन और महत्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान स्थल थे। यहाँ स्थित **'महानवमी डिब्बा' (Mahanavami Dibba)** एक विशाल पत्थर का मंच है जहाँ से राजा सैन्य परेड और महानवमी के उत्सव का निरीक्षण करता था।
- **बाजार की सड़कें:** मंदिरों के सामने विशाल और चौड़ी सड़कें थीं, जिनके दोनों ओर स्तंभों वाले बरामदे थे जहाँ विश्वभर के व्यापारी (अरबी, पुर्तगाली) रत्न, घोड़े और वस्त्रों का व्यापार करते थे।

2: मंदिर स्थापत्य की विशिष्टताएं (Key Features of Temple Architecture)

विजयनगर शैली ने मंदिर वास्तुकला में कुछ नए तत्वों का समावेश किया, जो इसे चोल शैली से अलग बनाते हैं।

2.1 रायगोपुरम (Rayagopuram)

विजयनगर के राजाओं (राय) ने मंदिरों के प्रवेश द्वार पर अत्यंत ऊँचे और भव्य द्वारों का निर्माण करवाया, जिन्हें 'रायगोपुरम' कहा जाता है। ये सुल्तान के प्रभुत्व और विजय के प्रतीक थे।

2.2 कल्याण मण्डप (Kalyana Mandapa)

मंदिर परिसर के भीतर देवी-देवताओं के विवाह उत्सव मनाने के लिए विशेष रूप से निर्मित स्तंभों वाले हॉल को 'कल्याण मण्डप' कहा जाता है। ये मण्डप अपनी सूक्ष्म नक्काशी और अलंकृत स्तंभों के लिए प्रसिद्ध हैं।

2.3 हजार स्तंभों वाले मण्डप (Aman Mandapa)

wincompete

विजयनगर शैली के मंदिरों में स्तंभों की प्रधानता है। इन स्तंभों पर **'यली' (Yali)** नामक एक काल्पनिक जीव (शेर और हाथी का सम्मिश्रण) का अंकन विजयनगर की पहचान है।

3: विट्ठल स्वामी मंदिर - स्थापत्य का चरमोत्कर्ष

विट्ठल स्वामी मंदिर विजयनगर शैली का सबसे पूर्ण और कलात्मक उदाहरण है। इसका निर्माण **महाराणा कृष्णदेव राय** (तुलुव वंश) के शासनकाल में शुरू हुआ और उनके उत्तराधिकारियों के समय पूर्ण हुआ।

3.1 संगीत मय स्तंभ (Musical Pillars)

मंदिर के मुख्य मण्डप (महा मण्डप) में 56 नक्काशीदार स्तंभ हैं। इन स्तंभों की विशेषता यह है कि इन्हें थपथपाने पर **सप्त स्वर (सारेगामा)** की ध्वनियाँ निकलती हैं। इसीलिए इन्हें 'संगीत मय स्तंभ' (Musical Pillars) कहा जाता है।

3.2 पत्थर का रथ (The Stone Chariot)

मंदिर प्रांगण में बना पत्थर का रथ वास्तव में भगवान विष्णु के वाहन 'गरुड़' का मंदिर है। यह रथ इतना जीवंत लगता है जैसे इसे अभी खींचा जा सकता हो। **RPSC परीक्षा हेतु ध्यान दें:** वर्तमान में भारतीय मुद्रा के **50 रुपये के नोट** पर हम्पी के इसी पत्थर के रथ का चित्र अंकित है।

4: विरुपाक्ष मंदिर और अन्य महत्वपूर्ण संरचनाएँ

4.1 विरुपाक्ष मंदिर (Virupaksha Temple)

यह हम्पी का सबसे प्राचीन और पवित्र मंदिर है, जो भगवान शिव (विजयनगर के कुलदेवता) को समर्पित है। 1509 ई. में कृष्णदेव राय ने अपने राज्याभिषेक की स्मृति में इसके सामने का भव्य गोपुरम बनवाया था।

4.2 हजार राम मंदिर (Hazara Rama Temple)

यह मंदिर शाही परिवार के निजी उपयोग के लिए था। इसकी दीवारों पर **रामायण के प्रसंगों** को अत्यंत सूक्ष्मता से उकेरा गया है।

5: धर्मनिरपेक्ष स्थापत्य (Secular Architecture)

विजयनगर में केवल मंदिर ही नहीं, बल्कि धर्मनिरपेक्ष इमारतें भी इंडो-इस्लामिक शैली के प्रभाव को दर्शाती हैं।

- **लोटस महल (Lotus Mahal):** यह एक दो मंजिला महल है जिसकी बनावट कमल के फूल के समान है। इसमें इस्लामी मेहराबों और हिंदू छतरियों का सुंदर मिश्रण है।
- **गजशाला (Elephant Stables):** शाही हाथियों को रखने के लिए गुंबददार इमारतों की एक लंबी पंक्ति, जो इस्लामी वास्तुकला के प्रभाव को पुष्ट करती है।

6: जल प्रबंधन और सिंचाई (Water Management)

विजयनगर साम्राज्य ने तुंगभद्रा नदी के पानी का कुशलतापूर्वक उपयोग करने के लिए उत्कृष्ट इंजीनियरिंग का प्रदर्शन किया।

- **कमलापुर टैंक:** एक विशाल जलाशय जिसका पानी नहरों के माध्यम से शहर और खेतों तक पहुँचाया जाता था।
- **हिरिया नहर (Hiriya Canal):** यह नहर आज भी हम्पी के खेतों को सींचती है, जो विजयनगर के शासकों की दूरदर्शिता का प्रमाण है।

wincompete

भाग 7:

शब्दावली	विवरण	परीक्षा महत्व
यली (Yali)	स्तंभों पर उकेरा गया पौराणिक जीव	विजयनगर शैली की पहचान
महानवमी डिब्बा	11,000 वर्ग फुट का पत्थर का मंच	सामाजिक-सांस्कृतिक केंद्र
रायगोपुरम	मंदिर का भव्य प्रवेश द्वार	संप्रभुता का प्रतीक
अमर-नायक	विजयनगर के सैन्य कमांडर	प्रशासनिक-राजस्व व्यवस्था
अयंगार (Ayangar)	ग्रामीण प्रशासन के 12 अधिकारी	स्थानीय स्वशासन

विजयनगर का स्थापत्य केवल ईंट-पत्थर का ढांचा नहीं था, बल्कि वह दक्षिण भारत की सांस्कृतिक अस्मिता का रक्षक था। हम्पी का शहरी नियोजन आज के 'स्मार्ट सिटी' अवधारणा के प्रारंभिक बीज प्रस्तुत करता है। 1565 में **तालीकोटा (राक्षस-तांगड़ी) के युद्ध** के बाद इस शहर को बेरहमी से नष्ट किया गया, लेकिन इसके अवशेष आज भी विश्व विरासत का गौरव हैं।

---

wincompete

wincompete

अध्याय 7: विजयनगर साहित्य का स्वर्ण काल - कृष्णदेव राय एवं अष्टदिग्गज परंपरा

विजयनगर और भाषाई पुनर्जागरण

विजयनगर साम्राज्य (1336-1646) का काल दक्षिण भारतीय साहित्य के इतिहास में एक संक्रमणकालीन और पुनर्जागरण का युग था। जहाँ दिल्ली सल्तनत के प्रभाव में उत्तर भारत में फारसी और ब्रजभाषा का विकास हो रहा था, वहीं सुदूर दक्षिण में विजयनगर के शासकों ने संस्कृत के साथ-साथ 'देशज भाषाओं' (तेलुगु, कन्नड़ और तमिल) को राज्याश्रय प्रदान कर एक 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' की नींव रखी। कृष्णदेव राय (1509-1529) का शासनकाल न केवल सैन्य विजयों का, बल्कि **'तेलुगु साहित्य का क्लासिक युग'** माना जाता है।

भाग 1: कृष्णदेव राय - एक विद्वान सम्राट (Andhra Bhoja)

कृष्णदेव राय स्वयं एक उच्च कोटि के विद्वान और कवि थे। उनकी विद्वत्ता के कारण उन्हें **'आंध्र भोज'**, **'अभिनव भोज'** और **'सकल कला भोज'** जैसी उपाधियों से विभूषित किया गया। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से सिद्ध किया कि एक शासक केवल तलवार से नहीं, बल्कि कलम से भी साम्राज्य को अमर बना सकता है।

1.1 'अमुक्तमाल्यद' (Amuktamalyada): एक साहित्यिक महाकाव्य

यह तेलुगु साहित्य के **'पंचमहाकाव्यों'** में से एक है। इसकी रचना कृष्णदेव राय ने स्वयं की थी।

- **विषय वस्तु:** यह कृति भगवान रंगनाथ (विष्णु) और भक्त कवयित्री **अंडाल (गोदादेवी)** के विवाह पर आधारित है। 'अमुक्तमाल्यद' का शाब्दिक अर्थ है— "वह जिसने स्वयं पहनकर माला भगवान को अर्पित की।"
- **राजनीतिक दर्शन (Rajaneeti):** इस पुस्तक का चौथा अध्याय अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें कृष्णदेव राय ने **'राजधर्म'** और शासन व्यवस्था के सिद्धांतों का वर्णन किया है, जिसकी तुलना कौटिल्य के अर्थशास्त्र से की जा सकती है। उन्होंने लिखा है कि "एक राजा को प्रजा के कल्याण के लिए सदैव उद्यत रहना चाहिए और व्यापार को प्रोत्साहित करना चाहिए।"
- **भाषाई महत्ता:** इसी ग्रंथ में उन्होंने तेलुगु को सभी भाषाओं में सर्वश्रेष्ठ बताते हुए कहा— *"देसा बासलंदु तेलुगु लेस्सा"* (देश की सभी भाषाओं में तेलुगु सर्वश्रेष्ठ है)।

1.2 संस्कृत रचनाएँ

कृष्णदेव राय ने संस्कृत भाषा में भी कई महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की, जो उनकी बहुमुखी प्रतिभा को दर्शाते हैं:

1. **जाम्बवती कल्याणम (Jambavati Kalyanam):** यह एक संस्कृत नाटक है जो कृष्ण और जाम्बवती के विवाह की कथा पर आधारित है।
2. **उषा परिणय (Usha Parinayam):** प्रेम और पौराणिक आख्यान पर आधारित नाटक।
3. **मदालसा चरितम:** दार्शनिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित ग्रंथ।

भाग 2: अष्टदिग्गज - साहित्यिक संप्रभुता के आठ स्तंभ

कृष्णदेव राय के दरबार को **'भुवन विजयम'** (विद्वत सभा) कहा जाता था। इस सभा की शोभा आठ महान तेलुगु कवि बढ़ाते थे, जिन्हें सामूहिक रूप से **'अष्टदिग्गज'** कहा जाता था। इन कवियों ने तेलुगु काव्य में 'प्रबंध' (Prabandha) शैली को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया।

2.1 अल्लासानी पेद्दन (Allasani Peddana)

इन्हें अष्टदिग्गजों में सर्वोपरि स्थान प्राप्त था। कृष्णदेव राय उन्हें अपना गुरु मानते थे और उन्हें **'आंध्र कविता पितामह'** की उपाधि दी थी।

- **प्रमुख कृति:** *'मनुचरितम'* (Svarochisha Manusamvaba)।
- **विशेषता:** पेद्दन की भाषा शैली में संस्कृत और तेलुगु का अद्भुत सम्मिश्रण था।

2.2 नंदी थिम्मन (Nandi Thimmana)

Wincompete

इन्हें 'मुक्कु थिम्मन' भी कहा जाता था।

- **प्रमुख कृति:** *'पारिजात अपहरणम'* (Parijatapaharanam)।
- **विशेषता:** यह कृति अपनी सरल और कोमल पदावली (Mridu Pada Riti) के लिए प्रसिद्ध है।

2.3 तेनाली रामकृष्ण (Tenali Ramakrishna)

तेनालीराम अपनी चतुराई और हास्य के लिए प्रसिद्ध थे, लेकिन वे एक गंभीर विद्वान भी थे।

- **प्रमुख कृति:** *'पाण्डुरंग महात्म्यम'*। यह काव्य उच्च कोटि के दार्शनिक भावों से युक्त है।
- **अन्य कृति:** *'उद्भट आराध्य चरितम'*।

2.4 अन्य दिग्गज कवि:

4. **धूर्जटि:** *'कालहस्ती महात्म्यम'* (भगवान शिव के प्रति अनन्य भक्ति)।
5. **मादय्यागरी मलन:** *'राजशेखर चरितम'*।
6. **अय्यलराजू रामचंद्र:** *'सकल सार संग्रह'*।
7. **पिंगली सूरन:** *'राघव पांडवीय'* (एक द्वयर्थी काव्य जिसमें रामायण और महाभारत दोनों की कथा साथ चलती है—अत्यंत कठिन काव्य प्रयोग)।
8. **रामराज भूषण:** *'वसुचरितम'*।

भाग 3: विजयनगर में संस्कृत एवं कन्नड़ साहित्य का विकास

यद्यपि कृष्णदेव राय का काल तेलुगु का स्वर्ण युग था, परंतु संपूर्ण विजयनगर काल में संस्कृत और कन्नड़ साहित्य ने भी अभूतपूर्व प्रगति की।

3.1 संस्कृत साहित्य और वेद भाष्य

विजयनगर के संस्थापक हरिहर और बुक्का के गुरु **माधवाचार्य (विद्यारण्य)** और उनके भाई **सायण** ने संस्कृत साहित्य को नई दिशा दी।

- **वेद भाष्य:** सायण ने चारों वेदों पर प्रमाणिक भाष्य (टीका) लिखा। RPSC के लिए यह 'रक्षात्मक तथ्य' है कि वेदों का आधुनिक सुव्यवस्थित स्वरूप सायण की टीकाओं पर ही आधारित है।
- **गंगादेवी:** बुक्का प्रथम की पुत्रवधू। उन्होंने अपने पति की मदुरै विजय पर **'मधुरा विजयम'** (वीर कम्पराय चरितम) नामक ऐतिहासिक महाकाव्य लिखा। यह मध्यकालीन महिला लेखन का श्रेष्ठ उदाहरण है।

3.2 कन्नड़ साहित्य और हरिदास आंदोलन

विजयनगर के संरक्षण में कन्नड़ साहित्य में 'वचन' और 'कीर्तन' परंपरा का विकास हुआ।

- **भीम कवि:** *'बसव पुराण'* (वीरशैव धर्म का प्रमुख ग्रंथ)।
- **कुमारव्यास:** *'गदुगु भारत'* (कन्नड़ भाषा में महाभारत का रूपांतरण)।
- **पुरंदर दास और कनक दास:** इन्हें 'कर्नाटक संगीत का पितामह' माना जाता है। इन्होंने कन्नड़ में 'देवनामा' (भक्ति गीत) लिखे, जिसने भक्ति आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाया।

भाग 4: भाषाई विकास और विदेशी यात्रियों के साक्ष्य

विजयनगर के शासकों ने तमिल साहित्य को भी संरक्षण दिया। **स्वराजिका** और **विल्लिपुत्तूर** जैसे तमिल कवियों ने इसी काल में अपनी रचनाएँ कीं।

- **निकोलो कोंटी (Nicolo Conti):** इतालवी यात्री ने विजयनगर की शिक्षा पद्धति की प्रशंसा की।
- **अब्दुर रज्जाक:** उसने लिखा कि राजा स्वयं विद्वानों की परीक्षा लेता था और उन्हें स्वर्ण मुद्राओं (दीनार) से सम्मानित करता था।

भाग 5:

व्यक्तित्व/पुस्तक	विशेष तथ्य	परीक्षा महत्व
आंध्र कविता पितामह	अल्लासानी पेद्दन की उपाधि	RAS/PSI PYQ
गुलरुखी	सिकंदर लोदी का उपनाम (समकालीन संदर्भ)	तुलनात्मक अध्ययन
प्रबंध	तेलुगु काव्य की एक विशिष्ट शैली	साहित्य विधा
कनक दास	'हरिभक्ति सार' के लेखक	भक्ति साहित्य
विद्वत गोष्ठी	राजदरबार में होने वाली साहित्यिक चर्चाएँ	सांस्कृतिक शब्दावली

विजयनगर का साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं था, बल्कि वह सामाजिक और राजनीतिक मूल्यों का संवाहक था। कृष्णदेव राय द्वारा 'अमुक्तमाल्यद' में दी गई प्रशासनिक सलाह आज भी लोक प्रशासन के विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक है। इस काल ने यह सिद्ध किया कि जब राज्य कला और साहित्य को संरक्षण देता है, तो वह केवल एक साम्राज्य नहीं, बल्कि एक 'सभ्यता' बन जाता है।

wincompete

अध्याय 8: विजयनगर का समाज और विदेशी यात्रियों के वृत्तांत

इतिहास के झरोखे से विजयनगर

विजयनगर साम्राज्य (1336–1646) मध्यकालीन भारत का वह गौरवशाली अध्याय है, जिसने दक्षिण भारत की सांस्कृतिक अस्मिता को न केवल संरक्षित किया, बल्कि उसे वैश्विक पहचान दिलाई। इस साम्राज्य की सामाजिक व्यवस्था की सबसे प्रामाणिक जानकारी हमें उन विदेशी यात्रियों से मिलती है, जो यहाँ की चकाचौंध, सैन्य शक्ति और सामाजिक विविधता से मंत्रमुग्ध होकर इसके साक्षी बने। **सतीश चंद्र** और **निलकंठ शास्त्री** जैसे इतिहासकारों ने इन विदेशी वृत्तांतों को विजयनगर के सामाजिक इतिहास के पुनर्निर्माण का 'प्राथमिक स्रोत' माना है।

भाग 1: विजयनगर के साक्षी - प्रमुख विदेशी यात्री

1.1 निकोलो कोंटी (Nicolo Conti) - 1420-21 ई.

यह इतालवी यात्री **देवराय प्रथम** के शासनकाल में विजयनगर आया था।

- **सामाजिक विवरण:** कोंटी ने विजयनगर के विशाल आकार (60 मील का घेरा) और वहाँ मनाए जाने वाले त्योहारों का वर्णन किया। उसने पहली बार **सती प्रथा** और **बहुविवाह** (विशेषकर राजाओं के बीच) का विस्तृत उल्लेख किया। उसने 'दीपावली' और 'होली' जैसे त्योहारों को जनमानस के मुख्य पर्व के रूप में चित्रित किया।

1.2 अब्दुर रज्जाक (Abdur Razzaq) - 1442-43 ई.

यह फारस (ईरान) के सुल्तान मिर्जा शाहरुख का राजदूत बनकर **देवराय द्वितीय** के काल में आया।

- **आर्थिक-सामाजिक विवरण:** रज्जाक ने विजयनगर की समृद्धि के बारे में लिखा— *"आँख ने ऐसा कुछ नहीं देखा और कान ने ऐसा कुछ नहीं सुना कि विश्व में इसके समान कोई दूसरा नगर है।"* उसने समाज में रत्नों और सोने के प्रति आकर्षण का उल्लेख किया, जहाँ बाजार में हीरे-जवाहरात खुलेआम बिकते थे। उसने सात दीवारों वाली किलेबंदी के भीतर कृषि क्षेत्रों के होने को समाज की आत्मनिर्भरता का प्रतीक बताया।

1.3 डोमिंगो पायस (Domingo Paes) - 1520-22 ई.

यह पुर्तगाली यात्री **कृष्णदेव राय** के शासनकाल में आया।

- **सांस्कृतिक विवरण:** पायस ने कृष्णदेव राय के व्यक्तित्व और **महानवमी उत्सव** का आँखों देखा विवरण दिया। उसने विजयनगर के बाजारों में मिलने वाली वस्तुओं की विविधता और जनसंख्या के घनत्व को रोम के समान बताया। उसने विजयनगर की महिलाओं की वेशभूषा और आभूषणों का विस्तृत वर्णन किया।

1.4 फर्नाओ नुनिज (Fernao Nuniz) - 1535-37 ई.

यह पुर्तगाली घोड़ा व्यापारी **अच्युतदेव राय** के समय आया।

- **प्रशासनिक-सामाजिक विवरण:** नुनिज का विवरण विजयनगर के इतिहास और सामाजिक कुरीतियों जैसे सती प्रथा के वीभत्स रूप पर प्रकाश डालता है। उसने राजकीय सेवा में महिलाओं की भूमिका (लेखक, सुरक्षाकर्मी, ज्योतिषी) का जो विवरण दिया, वह मध्यकालीन विश्व के लिए अद्वितीय था।

wincompete

भाग 2: सामाजिक संरचना और वर्ण व्यवस्था

विजयनगर का समाज पारंपरिक **वर्णाश्रम धर्म** पर आधारित था, लेकिन दक्षिण भारत की विशिष्टताओं के कारण यहाँ कुछ नवीन वर्ग उभरे।

2.1 ब्राह्मणों का वर्चस्व

ब्राह्मण समाज में सर्वोच्च स्थान पर थे। वे केवल पुरोहित नहीं थे, बल्कि दुर्गों के रक्षक, सेनापति और मंत्री भी थे। **नुनिज** के अनुसार, ब्राह्मण अत्यंत चतुर और शासन के कार्यों में निपुण थे। उन्हें मृत्युदंड से मुक्त रखा गया था।

2.2 मध्य वर्ग और व्यापारिक समुदाय

- **शेट्टी या चेट्टी:** व्यापारिक समुदाय को 'शेट्टी' कहा जाता था। इनका समाज की अर्थव्यवस्था पर पूर्ण नियंत्रण था।
- **वीर पांचाल:** शिल्पकार समुदाय (लोहार, सुनार, बढ़ई) को सामूहिक रूप से 'वीर पांचाल' कहा जाता था। इनका सामाजिक सम्मान उच्च था।

2.3 निम्न वर्ग और अस्पृश्यता

समाज में ऊँच-नीच का भेद विद्यमान था। **कैवल्य** और **जुलहा** जैसे समुदाय निम्न श्रेणी में रखे गए थे। हालांकि, विजयनगर के राजाओं ने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई, जिससे विभिन्न संप्रदायों (शैव, वैष्णव, जैन) के बीच संघर्ष कम हुआ।

भाग 3: महिलाओं की स्थिति - मध्यकालीन आधुनिकता

विजयनगर समाज में महिलाओं की स्थिति अन्य समकालीन साम्राज्यों की तुलना में अधिक सक्रिय और विविध थी।

3.1 सार्वजनिक जीवन में भागीदारी

विजयनगर संभवतः एकमात्र ऐसा साम्राज्य था जहाँ महिलाओं को प्रशासन और सैन्य गतिविधियों में स्थान मिला। **नुनिज** लिखता है कि:

- महिलाएँ **कुश्ती** लड़ती थीं।
- वे **ज्योतिषी** और **भविष्यवक्ता** थीं।
- वे लेखाकार (Accountant) और लिपिक के रूप में कार्य करती थीं।
- राजा की अंगरक्षक सेना में सशस्त्र महिलाएँ तैनात रहती थीं।

3.2 सामाजिक कुरीतियाँ: सती और बाल विवाह

सकारात्मक पहलुओं के साथ-साथ समाज में कठोर प्रथाएँ भी थीं।

- **सती प्रथा:** बारबोसा और नुनिज ने सती प्रथा का अत्यंत मार्मिक वर्णन किया है। यह उच्च वर्ग और राजघरानों में अधिक प्रचलित थी। इसे एक धार्मिक कृत्य माना जाता था।
- **देवदासी प्रथा:** मंदिरों में नृत्य और सेवा के लिए समर्पित महिलाओं (देवदासियों) का सम्मानजनक स्थान था। उन्हें समाज में संपत्ति रखने का अधिकार था और वे धार्मिक उत्सवों की मुख्य केंद्र थीं।

भाग 4: दास प्रथा (Slavery in Vijayanagar)

विजयनगर में दास प्रथा का प्रचलन था। इसे **'बेसवग्गा'** कहा जाता था (मनुष्यों की खरीद-बिक्री)।

- **निकोलो कोंटी** के अनुसार, दासों के साथ दुर्व्यवहार कम होता था और वे परिवार के सदस्य के समान रहते थे। युद्धबंदियों को अक्सर दास बना लिया जाता था।

भाग 5: खान-पान, वेशभूषा और मनोरंजन

5.1 आहार विहार

समाज में शाकाहार और मांसाहार दोनों प्रचलित थे। ब्राह्मणों को छोड़कर समाज के अन्य वर्ग (क्षत्रिय और सामान्य जनता) मांस का सेवन करते थे। विदेशी यात्रियों ने बाजारों में मांस की प्रचुरता का उल्लेख किया है।

5.2 वेशभूषा

Wincompete

- **वस्त्र:** पुरुष कमर के नीचे धोती और सिर पर पगड़ी (कुल्लई) पहनते थे। सूती और रेशमी वस्त्रों का प्रयोग अधिक था।
- **आभूषण:** स्त्री और पुरुष दोनों आभूषणों के शौकीन थे। **डोमिंगो पायस** लिखता है कि ऊँचे अधिकारियों के आभूषणों की चमक से आँखें चौंधिया जाती थीं।

5.3 मनोरंजन

- **महानवमी उत्सव:** यह नौ दिनों तक चलने वाला सबसे बड़ा राजकीय और सामाजिक उत्सव था। इसमें सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पशु बलि और सैन्य शक्ति का प्रदर्शन होता था।
- **खेल:** शतरंज, पासा और कुश्ती अत्यंत लोकप्रिय थे। नाटक और यक्षगान लोक मनोरंजन के मुख्य साधन थे।

भाग 6:

शब्दावली	विवरण	ऐतिहासिक संदर्भ
बेसवग्गा	मनुष्यों की खरीद-बिक्री (दास प्रथा)	सामाजिक कुरीति
विप्रुलु	ब्राह्मणों का समूह	सामाजिक श्रेणी
महानवमी डिब्बा	वह मंच जहाँ उत्सव मनाया जाता था	स्थापत्य एवं संस्कृति
गौड़ा	गाँव का मुखिया	स्थानीय सामाजिक नेता
कुल्लई	विजयनगर की विशिष्ट पगड़ी	वेशभूषा

विजयनगर का समाज एक ओर जहाँ अपनी प्राचीन हिंदू परंपराओं के प्रति कट्टर था, वहीं दूसरी ओर वह महिलाओं की शिक्षा और विदेशी व्यापार के प्रति अत्यंत उदार था। विदेशी यात्रियों के वृत्तांत यह सिद्ध करते हैं कि 15वीं-16वीं शताब्दी में विजयनगर केवल एक क्षेत्रीय शक्ति नहीं, बल्कि एक अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक केंद्र था। इसकी सामाजिक जटिलता और प्रगतिशीलता ही इसे मध्यकाल का सबसे आकर्षक साम्राज्य बनाती है।

---

wincompete

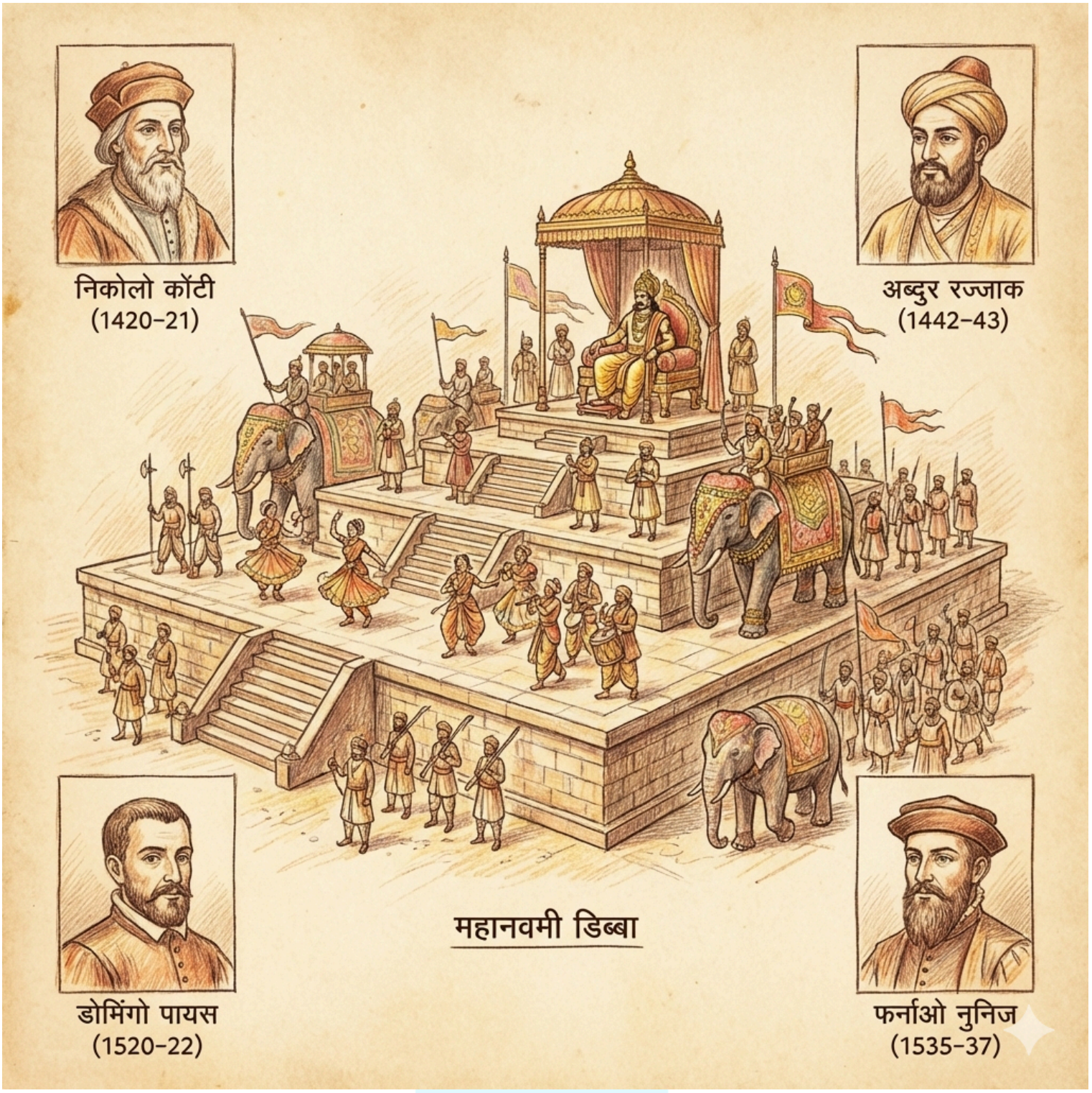
निकोलो कोंटी
(1420–21)
अब्दुर रज्जाक
(1442–43)
महानवमी डिब्बा
डोमिंगो पायस
(1520–22)
फर्नाओ नुनिज
(1535–37)

wincompete

अध्याय 9: विजयनगर की ललित कलाएं - संगीत, नृत्य एवं चित्रकला का उत्कर्ष

विजयनगर - दक्षिण भारतीय कलाओं का संगम

विजयनगर साम्राज्य (1336–1646) केवल युद्धों और दुर्गों का साम्राज्य नहीं था, बल्कि यह दक्षिण भारत की ललित कलाओं के संरक्षण का सबसे बड़ा केंद्र था। जब उत्तर भारत में इंडो-इस्लामिक कला के नए प्रयोग हो रहे थे, तब विजयनगर के शासकों ने प्राचीन भारतीय कला परंपराओं (संगीत, नाट्य और चित्रकला) को पुनर्जीवित कर उन्हें 'शास्त्रीय' स्वरूप प्रदान किया। **डॉ. आनंद कुमारस्वामी** के अनुसार, "विजयनगर की कला में वह जीवंतता और धार्मिक ऊर्जा है जो चोल काल के बाद दक्षिण भारत में लुप्त होने लगी थी।"

भाग 1: विजयनगर और संगीत कला - कर्नाटक संगीत की आधारशिला

विजयनगर काल को 'कर्नाटक संगीत' (Carnatic Music) के विकास का स्वर्ण युग माना जाता है। इस काल में संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं था, बल्कि वह भक्ति (Bhakti) का मुख्य मार्ग था।

1.1 पुरंदर दास - कर्नाटक संगीत के पितामह

RPSC परीक्षाओं हेतु सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तित्व। **पुरंदर दास** को 'कर्नाटक संगीत का पितामह' (Grandfather of Carnatic Music) कहा जाता है।

- **योगदान:** उन्होंने संगीत के शिक्षण हेतु एक व्यवस्थित पद्धति तैयार की (जैसे 'स्वरवलि' और 'अलंकार') जो आज भी कर्नाटक संगीत की शिक्षा का आधार है।
- **साहित्यिक रूप:** उन्होंने हजारों 'पद' (कीर्तन) लिखे जिन्हें **'पुरंदर उपनिषद'** कहा जाता है। उन्होंने संगीत को जटिलता से निकालकर सरल कन्नड़ भाषा के माध्यम से आम जनता तक पहुँचाया।

1.2 अन्य संगीतज्ञ और विद्वान

- **विद्यारण्य स्वामी:** विजयनगर के आध्यात्मिक प्रणेता। उन्होंने **'संगीतसार'** नामक ग्रंथ लिखा, जो विजयनगर संगीत परंपरा का आधार स्तंभ है।
- **रामामात्य (Ramamatya):** कृष्णदेव राय और रामराय के काल के महान संगीतज्ञ। उन्होंने **'स्वरमेलकलानिधि'** नामक ऐतिहासिक ग्रंथ लिखा। इस ग्रंथ में पहली बार रागों के वर्गीकरण की वैज्ञानिक पद्धति (Melakarta system के बीज) प्रस्तुत की गई।
- **कनक दास:** पुरंदर दास के समकालीन। उन्होंने संगीत के माध्यम से सामाजिक बुराइयों पर प्रहार किया।

1.3 वाद्य यंत्रों का विकास

विजयनगर के मंदिरों (विशेषकर विट्ठल स्वामी मंदिर) की दीवारों पर विभिन्न वाद्य यंत्रों का अंकन मिलता है।

- **वीणा:** विजयनगर का सबसे प्रिय वाद्य यंत्र था। कृष्णदेव राय स्वयं वीणा वादन में निपुण थे।
- **मृदंगम और बाँसुरी:** सामूहिक संगीत गोष्ठियों के अनिवार्य अंग थे।

भाग 2: नृत्य कला - यक्षगान और शास्त्रीय शैलियाँ

विजयनगर में नृत्य को 'राजकीय कला' का दर्जा प्राप्त था। यहाँ मंदिरों (देवदासी परंपरा) और राजदरबार दोनों में नृत्य का विकास हुआ।

2.1 यक्षगान (Yakshagana) - लोक और शास्त्र का समन्वय

यह विजयनगर की सबसे अनूठी देन है। यक्षगान एक 'नाट्य-नृत्य' (Dance Drama) है जिसकी उत्पत्ति इसी काल में हुई।

- **विशेषता:** इसमें भारी वेशभूषा, मुखौटे और उच्च स्वर में संगीत (भागवत) का प्रयोग होता है। इसमें रामायण और महाभारत की कथाओं को मंचित किया जाता था।

wincompete

- **विकास:** विजयनगर के राजाओं ने गाँवों में यक्षगान की मंडलियों को संरक्षण दिया, जिससे यह एक शक्तिशाली सांस्कृतिक माध्यम बना।

2.2 भरतनाट्यम और कुचिपुड़ी का विकास

- **भरतनाट्यम:** यद्यपि यह चोल काल से प्रचलित था, लेकिन विजयनगर में इसे 'कल्याण मण्डपों' के माध्यम से एक नया मंच मिला। मंदिरों की दीवारों पर उत्कीर्ण **108 करण** (नृत्य मुद्राएँ) इस काल की तकनीकी श्रेष्ठता को दर्शाती हैं।
- **कुचिपुड़ी:** वर्तमान आंध्र प्रदेश के कुचिपुड़ी गाँव से उत्पन्न इस शैली को विजयनगर के राजाओं ने विशेष बढ़ावा दिया। सिद्धेंद्र योगी जैसे विद्वानों ने इस काल में कुचिपुड़ी को शास्त्रीय नियमों में बांधा।

2.3 राजकीय नृत्यशालाएँ

विदेशी यात्री **डोमिंगो पायस** लिखता है कि महल के भीतर एक विशाल 'नृत्यशाला' थी जहाँ राजकुमारियाँ और दासियाँ नृत्य का अभ्यास करती थीं। यहाँ खंभों पर नृत्य की विभिन्न मुद्राओं के चित्र बने हुए थे ताकि सीखने वाले उन्हें देखकर अपनी कमियाँ सुधार सकें।

भाग 3: विजयनगर चित्रकला - लेपाक्षी और भित्ति चित्रण

विजयनगर शैली की चित्रकला को 'लेपाक्षी शैली' के नाम से भी जाना जाता है। यह अजंता की गुफाओं के बाद भारत में भित्ति चित्रकला (Mural Painting) का सबसे भव्य उदाहरण है।

3.1 लेपाक्षी मंदिर (Lepakshi Temple) के चित्र

अनंतपुर (आंध्र प्रदेश) में स्थित लेपाक्षी मंदिर विजयनगर चित्रकला का सर्वोत्तम नमूना है।

- **विषय वस्तु:** मुख्य रूप से शिव के विभिन्न अवतारों (वीरभद्र), रामायण और महाभारत के प्रसंगों का चित्रण है।
- **तकनीक और रंग:** इन चित्रों में लाल, पीले और गेरुए रंगों की प्रधानता है। रेखाएँ अत्यंत गहरी और कोणीय (Angular) हैं।
- **अनोखी विशेषता:** यहाँ 'झूलता हुआ खंभा' (Hanging Pillar) है, लेकिन कलात्मक दृष्टि से यहाँ की छत पर बना **'वीरभद्र'** का विशाल चित्र (जो भारत का सबसे बड़ा भित्ति चित्र माना जाता है) अद्वितीय है।

3.2 चित्रकला की विशिष्ट शैली

- **मानव आकृतियाँ:** विजयनगर के चित्रों में चेहरे पार्श्व (Side Profile) से दिखाए जाते हैं, जिनमें बड़ी आँखें और नुकीली नाक प्रमुख है।
- **वेशभूषा चित्रण:** चित्रों में राजाओं और रानियों की विस्तृत वेशभूषा, पगड़ी और आभूषणों का सूक्ष्म अंकन मिलता है, जो तत्कालीन समाज के अध्ययन का स्रोत भी है।

भाग 4: मूर्तिकला और धातु शिल्प

विजयनगर के मूर्तिकारों ने पत्थर और धातु दोनों में महारत हासिल की थी।

4.1 एकाश्म मूर्तियाँ (Monolithic Statues)

- **उग्र नरसिंह:** हम्पी में स्थित भगवान नरसिंह की 6.7 मीटर ऊँची प्रतिमा, जो एक ही पत्थर को काटकर बनाई गई है। यह विजयनगर की भव्यता का प्रतीक है।
- **सासवकालु गणेश:** राई के दाने के समान दिखने वाली विशाल गणेश प्रतिमा।

wincompete

4.2 धातु शिल्प (Bronze Casting)

विजयनगर के शिल्पकारों ने चोलों की 'लुप्त मोम पद्धति' (Lost-wax process) को जारी रखा।

- **विशेष उदाहरण:** तिरुपति मंदिर में स्थित **कृष्णदेव राय और उनकी रानियों** की धातु की आदमकद मूर्तियाँ। ये मूर्तियाँ यथार्थवादी चित्रण (Portraiture) का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

भाग 5:

शब्दावली / व्यक्तित्व	विवरण	ऐतिहासिक महत्व
पुरंदर उपनिषद	पुरंदर दास के कीर्तनों का संग्रह	संगीत और दर्शन
यली (Yali)	मूर्तिकला में प्रयुक्त पौराणिक जीव	विजयनगर स्तंभ कला
स्वरमेलकलानिधि	रामामात्य द्वारा रचित संगीत ग्रंथ	रागों का वैज्ञानिक विभाजन
तलिकोट्टा का युद्ध	1565 में कला और संस्कृति का विनाशकारी अंत	ऐतिहासिक संदर्भ
लेपाक्षी	विजयनगर चित्रकला का मुख्य केंद्र	भित्ति चित्रकला

भाग 6:

विजयनगर की ललित कलाएँ केवल राजसी वैभव का प्रदर्शन नहीं थीं, बल्कि वे एक **'सांस्कृतिक प्रतिरोध'** (Cultural Resistance) का माध्यम थीं। जब उत्तर भारत में शैलियाँ बदल रही थीं, विजयनगर ने अपनी जड़ों को थामे रखा। कर्नाटक संगीत का वर्तमान स्वरूप और यक्षगान जैसी जीवंत कलाएँ विजयनगर साम्राज्य की ही विरासत हैं। सतीश चंद्र के अनुसार, "विजयनगर की सांस्कृतिक उपलब्धियां ही वह वास्तविक कारण हैं जिसके कारण दक्षिण भारत अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखने में सफल रहा।"

wincompete

अध्याय 10: विजयनगर का प्रशासनिक ढांचा एवं उन्नत सिंचाई अभियांत्रिकी

प्रस्तावना: संप्रभुता और संसाधन प्रबंधन का समन्वय

विजयनगर साम्राज्य (1336–1646) की स्थिरता केवल उसकी सैन्य शक्ति पर नहीं, बल्कि उसके विशिष्ट प्रशासनिक ढांचे—**नायंकार प्रणाली** और उसकी भौगोलिक चुनौतियों को अवसर में बदलने वाली **जल प्रबंधन तकनीक** पर टिकी थी। जहाँ 'नायंकार प्रणाली' ने साम्राज्य को एक विकेंद्रीकृत सैन्य आधार प्रदान किया, वहीं उन्नत सिंचाई प्रणालियों ने तुंगभद्रा के शुष्क क्षेत्र में कृषि समृद्धि सुनिश्चित की। **निलकंठ शास्त्री** के अनुसार, "विजयनगर का राजकीय तंत्र सामंतवाद और केंद्रीय नियंत्रण के बीच का एक अनूठा संतुलन था।"

भाग 1: नायंकार प्रणाली - विजयनगर की सैन्य-प्रशासनिक रीढ़

विजयनगर की 'नायंकार प्रणाली' (Nayankara System) इस साम्राज्य की सबसे प्रमुख विशेषता थी। इसे अक्सर दिल्ली सल्तनत की 'इक्ता प्रणाली' का दक्षिण भारतीय रूपांतरण माना जाता है, परंतु इसमें कतिपय मौलिक अंतर थे।

1.1 अमर-नायक: परिभाषा एवं भूमिका

विजयनगर के सैन्य कमांडरों को **'नायक'** कहा जाता था। राजा (राय) इन नायकों को उनके सैन्य सेवा के बदले निश्चित भू-क्षेत्र प्रदान करता था, जिसे **'अमरम'** (Amaram) कहा जाता था। इसी कारण इन्हें **'अमर-नायक'** कहा गया।

- **दायित्व:** अमर-नायकों का मुख्य कार्य अपने क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखना, राजस्व वसूलना और सुल्तान की सहायता हेतु एक निश्चित संख्या में **पैदल सेना, घुड़सवार और हाथी** तैयार रखना था।
- **राजकीय भेंट:** अमर-नायक प्रतिवर्ष सुल्तान को अपनी आय का एक निश्चित हिस्सा भेंट के रूप में भेजते थे और अपनी निष्ठा प्रदर्शित करने के लिए व्यक्तिगत रूप से उपहारों के साथ दरबार में उपस्थित होते थे।

1.2 नायंकार बनाम इक्ता प्रणाली (तुलनात्मक विश्लेषण)

RPSC की मुख्य परीक्षा की दृष्टि से यह अत्यंत महत्वपूर्ण है:

- **स्थायित्व:** इक्तादार अक्सर स्थानांतरित (Transfer) किए जाते थे, जबकि अमर-नायक अपने क्षेत्रों में अधिक स्थाई थे और कालांतर में उनके पद वंशानुगत (Hereditary) हो गए।
- **स्वायत्तता:** नायकों के पास अपने क्षेत्र में न्याय और आंतरिक प्रशासन की अधिक स्वायत्तता थी।
- **पतन का कारण:** साम्राज्य की कमजोरी के समय इन्हीं शक्तिशाली नायकों (जैसे मदुरै, तंजौर और जिंजी के नायक) ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया, जो विजयनगर के पतन का कारण बना।

भाग 2: स्थानीय प्रशासन - आयगार प्रणाली (Ayagar System)

विजयनगर के शासकों ने ग्राम प्रशासन को स्वायत्त बनाए रखा। गाँवों का प्रबंधन 12 अधिकारियों के एक समूह द्वारा किया जाता था, जिन्हें **'आयगार'** कहा जाता था।

2.1 बारह आयगार और उनके कार्य

गाँव के इन 12 अधिकारियों के पद वंशानुगत थे और उन्हें सेवा के बदले कर-मुक्त भूमि (मान्यम) दी जाती थी।

- **गौड़ा (Gowda):** गाँव का मुखिया, जो शांति और राजस्व का उत्तरदायी था।
- **करणम (Karnam):** गाँव का लेखापाल (Accountant)।
- **तलारी (Talari):** गाँव का चौकीदार या पुलिस अधिकारी।
- **महत्व:** ये अधिकारी सरकारी कर्मचारी नहीं थे, बल्कि सामुदायिक सेवक थे। इनके हस्तक्षेप के बिना केंद्र सरकार ग्राम प्रशासन में बदलाव नहीं कर सकती थी।

wincompete

भाग 3: विजयनगर की जल प्रबंधन तकनीक - सिंचाई अभियांत्रिकी

विजयनगर (हम्पी) एक अर्ध-शुष्क क्षेत्र में स्थित था जहाँ वार्षिक वर्षा कम थी। तुंगभद्रा नदी एकमात्र स्थायी जल स्रोत थी। यहाँ के शासकों ने जल संरक्षण की जो तकनीक अपनाई, वह मध्यकालीन विश्व के लिए एक मिसाल है।

3.1 तुंगभद्रा पर एनीकट (Dams and Anicuts)

विजयनगर के शासकों ने तुंगभद्रा नदी पर पत्थरों के विशाल बांध (एनीकट) बनाए।

- **तकनीक:** इन बांधों के निर्माण में चूने या गारे के बजाय बड़े ग्रेनाइट पत्थरों को 'सीसा' (Lead) भरकर जोड़ा गया था ताकि वे पानी के तीव्र वेग को सहन कर सकें।
- **नहर तंत्र:** बांधों से पानी को मुख्य शहर तक पहुँचाने के लिए लंबी नहरें खोदी गईं।

3.2 हिरिया नहर (Hiriya Canal) - जीवनदायिनी

यह विजयनगर की सबसे महत्वपूर्ण सिंचाई नहर थी।

- **विशेषता:** यह नहर तुंगभद्रा पर बने एक एनीकट से निकलती थी और 'धार्मिक केंद्र' को 'राजकीय केंद्र' से अलग करने वाली घाटी को सींचती थी। इसका निर्माण संगम वंश के राजाओं ने करवाया था और यह आज भी कार्यरत है।

3.3 जलाशय और टांके (Tanks and Reservoirs)

जहाँ नदियाँ नहीं पहुँच सकती थीं, वहाँ वर्षा जल के संचयन के लिए विशाल कृत्रिम झीलें बनाई गईं।

- **कमलापुरम जलाशय:** 15वीं शताब्दी में निर्मित यह जलाशय सिंचाई के साथ-साथ शहर के राजकीय केंद्र तक पानी पहुँचाने के लिए उपयोग किया जाता था।
- **डोमिंगो पायस का विवरण:** पुर्तगाली यात्री पायस ने कृष्णदेव राय द्वारा बनवाए गए एक विशाल जलाशय का वर्णन किया है, जिसके निर्माण हेतु राजा ने 15,000 पुरुषों को काम पर लगाया था।

3.4 जल सेतु (Aqueducts)

विजयनगर के इंजीनियरों ने पानी को पहाड़ी ढलानों और ऊँचे क्षेत्रों तक पहुँचाने के लिए पत्थर के **'जल सेतु'** (Aqueducts) बनाए। हम्पी के खंडहरों में आज भी पत्थर की बनी नालियों का जाल देखा जा सकता है, जो जल विज्ञान (Hydrology) के प्रति उनकी गहरी समझ को दर्शाता है।

भाग 4: राजस्व व्यवस्था - 'शिष्ट' और 'अठवण'

विजयनगर की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था, जिसके लिए राजस्व विभाग (अठवण) अत्यधिक संगठित था।

- **शिष्ट (Sist/Rekhai):** केंद्रीय भू-राजस्व को 'शिष्ट' कहा जाता था। सामान्यतः यह उपज का **1/6 भाग** होता था, लेकिन भूमि की उर्वरता और सिंचाई सुविधाओं के आधार पर इसमें भिन्नता थी।
- **अन्य कर:** वाणिज्यिक कर (व्यापार पर), चरागाह कर और विवाह कर (Marriage Tax) भी प्रचलित थे। कृष्णदेव राय ने बाद में जनहित में विवाह कर को समाप्त कर दिया था।

भाग 5: आर्थिक समृद्धि और मुद्रा प्रणाली

विजयनगर मध्यकाल में रत्नों और विदेशी व्यापार का सबसे बड़ा केंद्र था।

- **वराह (Varaha):** विजयनगर की मुख्य स्वर्ण मुद्रा 'वराह' या **'पैगोडा'** कहलाती थी। इस पर भगवान वेंकटेश्वर या दुर्गा के चित्र अंकित होते थे।
- **विदेशी साक्ष्य:** अब्दुर रज्जाक लिखता है कि यहाँ के अमीर लोग अपने घरों के तहखानों में पिघला हुआ सोना भरकर रखते थे।

wincompete

भाग 6:

शब्दावली	विवरण	ऐतिहासिक महत्व
अमरम (Amaram)	नायकों को दी गई सैन्य भूमि	नायंकार प्रणाली का आधार
अठवण (Athavana)	राजस्व विभाग	वित्तीय प्रशासन
मान्यम (Manyam)	कर-मुक्त भूमि	स्थानीय प्रशासन
कन्दम (Kandam)	सेना का विभाग	सैन्य प्रशासन
शिष्ट (Sist)	भू-राजस्व की मानक दर	अर्थव्यवस्था

विजयनगर साम्राज्य की सफलता का रहस्य उसकी 'अनुकूलन क्षमता' में था। उन्होंने नायंकार प्रणाली के माध्यम से सामंती शक्तियों को संतुलित किया और जल प्रबंधन के माध्यम से एक शुष्क क्षेत्र को उद्यान नगरी में बदल दिया। हम्पी की सिंचाई व्यवस्था यह सिद्ध करती है कि विजयनगर के शासक केवल योद्धा नहीं, बल्कि महान 'सिविल इंजीनियर' भी थे। **सतीश चंद्र** के अनुसार, "विजयनगर की प्रशासनिक और सिंचाई उपलब्धियां ही वे आधार थे जिन्होंने इसे तीन शताब्दियों तक दक्षिण भारत का अभेद्य दुर्ग बनाए रखा।"

wincompete

अध्याय 11: मुगल-अफगान संघर्ष - बाबर, हुमायूँ और शेरशाह सूरी का प्रशासनिक हस्तक्षेप

उत्तर भारत का सत्ता संघर्ष (1526–1556)

16वीं शताब्दी का पूर्वार्ध भारत के राजनीतिक इतिहास में एक 'संक्रमण काल' था। यह संघर्ष केवल दो व्यक्तियों या वंशों के बीच नहीं था, बल्कि दो अलग-अलग प्रशासनिक विचारधाराओं—मुगलों की 'केंद्रीकृत राजशाही' और अफगानों की 'कबीलाई लोकतंत्र/संघीय' विचारधारा के बीच था। पानीपत के प्रथम युद्ध (1526) ने दिल्ली सल्तनत का अंत तो किया, लेकिन अफगानों की शक्ति को पूरी तरह समाप्त नहीं किया। बाबर से लेकर हुमायूँ तक मुगलों को अफगानों से निरंतर चुनौती मिली, जिसका चरमोत्कर्ष शेरशाह सूरी के उदय के रूप में हुआ।

भाग 1: बाबर और अफगान चुनौती - साम्राज्य की अस्थिर नींव

बाबर ने 1526 में इब्राहिम लोदी को हराकर दिल्ली पर अधिकार किया, लेकिन उसकी सबसे बड़ी समस्या पूर्वी भारत (बिहार और बंगाल) में संगठित अफगान थे, जिनका नेतृत्व **महमूद लोदी** और **शेर खान (भावी शेरशाह)** कर रहे थे।

1.1 पानीपत के बाद की स्थिति

इब्राहिम लोदी की मृत्यु के बाद अफगान सरदार बिखरे हुए थे लेकिन पराजित नहीं। वे मुगलों को 'विदेशी आक्रमणकारी' मानते थे और भारत से उन्हें बाहर करने हेतु प्रयासरत थे।

- **घाघरा का युद्ध (6 मई, 1529):** यह बाबर का भारत में अंतिम महत्वपूर्ण युद्ध था। उसने बिहार के अफगानों को संयुक्त रूप से पराजित किया।
- **विशेष तथ्य:** घाघरा का युद्ध **मध्यकाल का पहला युद्ध था जो जल और थल (Land and Water) दोनों पर लड़ा गया।** इसने मुगलों की सामरिक श्रेष्ठता सिद्ध की।

भाग 2: हुमायूँ की विफलता और अफगान पुनरुत्थान

हुमायूँ (1530–1540) के समय अफगान चुनौती एक संगठित शक्ति के रूप में उभरी। यहाँ संघर्ष का केंद्र शेर शाह सूरी था।

2.1 शेर शाह सूरी का उदय

शेर शाह (फरीद) ने बिहार के दक्षिण में अपनी शक्ति सुदृढ़ की। हुमायूँ ने उसकी शक्ति को समय रहते नहीं पहचाना, जो उसकी सबसे बड़ी भूल सिद्ध हुई।

- **चुनार का घेरा (1532):** हुमायूँ ने चुनार के किले को घेरा, लेकिन शेर शाह ने कूटनीतिक रूप से संधि कर ली और मुगलों का समय नष्ट किया।

2.2 निर्णायक संघर्ष: चौसा और बिलग्राम

1. **चौसा का युद्ध (26 जून, 1539):** गंगा नदी के तट पर शेर शाह ने अचानक आक्रमण कर हुमायूँ को पराजित किया। हुमायूँ ने निजाम नामक भिश्ती की मदद से अपनी जान बचाई।
2. **बिलग्राम या कन्नौज का युद्ध (17 मई, 1540):** यह मुगल-अफगान संघर्ष का निर्णायक मोड़ था। हुमायूँ बुरी तरह पराजित होकर भारत छोड़ने पर मजबूर हुआ और भारत में **'द्वितीय अफगान साम्राज्य' (Suri Dynasty)** की स्थापना हुई।

भाग 3: शेरशाह सूरी का प्रशासनिक हस्तक्षेप - मध्यकालीन भारत का 'अग्रदूत'

शेरशाह सूरी (1540–1545) का शासनकाल केवल 5 वर्ष का था, लेकिन उसके प्रशासनिक हस्तक्षेप इतने दूरगामी थे कि उन्हें अकबर के प्रशासन का 'पूर्वाभ्यास' (Precursor) माना जाता है।

wincompete

3.1 केंद्रीय प्रशासन: विभागीय पुनर्गठन

शेरशाह ने सुल्तान की निरंकुशता को 'लोक कल्याण' से जोड़ा।

- **दीवान-ए-वजारत:** वित्त विभाग।
- **दीवान-ए-आरिज:** सैन्य विभाग (उसने अलाउद्दीन की 'दाग' और 'हुलिया' प्रथा को पुनः प्रभावी बनाया)।
- **दीवान-ए-रसालत:** विदेश और धार्मिक मामले।
- **दीवान-ए-इंशा:** शाही सचिवालय।

3.2 प्रांतीय एवं स्थानीय प्रशासन: सरकार और परगना

शेरशाह ने साम्राज्य को इकाइयों में विभाजित कर उत्तरदायित्व निर्धारित किया:

1. **सरकार (Sarkar):** आधुनिक जिले के समान। प्रमुख अधिकारी: **शिकदार-ए-शिकदारान** (शांति व्यवस्था) और **मुंसिफ-ए-मुंसिफान** (न्याय/राजस्व)।
2. **परगना (Pargana):** कई गाँवों का समूह। प्रमुख अधिकारी: **शिकदार, मुंसिफ, फौतदार (खजांची) और कारकून (लेखक)।**
3. **ग्राम:** शासन की सबसे छोटी इकाई, जहाँ मुकद्दम और पटवारी का उत्तरदायित्व बना रहा।

3.3 राजस्व सुधार: 'रई' और 'जब्ती' (Land Revenue System)

महत्वपूर्ण नवाचार:

- **भूमि पैमाइश:** उसने **'गज-ए-सिकंदरी'** (32 अंगुल का पैमाना) और 'सन की डंडी' (Jarib) का प्रयोग किया।
- **रई (Rai):** शेरशाह ने फसलों की दर सूची (Schedule of rates) तैयार करवाई जिसे 'रई' कहा गया।
- **राजस्व दर:** सामान्यतः उपज का **1/3 भाग** लगान के रूप में लिया जाता था।
- **पट्टा एवं कबूलियत:** यह शेरशाह की सबसे बड़ी देन थी। उसने प्रत्येक किसान को **'पट्टा'** (भूमि का कानूनी दस्तावेज) दिया और किसान से **'कबूलियत'** (लगान स्वीकार करने का पत्र) लिखवाया। इससे भ्रष्टाचार और बिचौलियों का प्रभाव कम हुआ।

3.4 मुद्रा सुधार: 'रुपया' का जन्म

शेरशाह को **आधुनिक मुद्रा प्रणाली का जनक** माना जाता है।

- **रुपया (Rupiya):** उसने शुद्ध चाँदी का सिक्का चलाया जिसका वजन **178 ग्रेन** था। यह सिक्का 1835 ई. तक भारत में मानक मुद्रा बना रहा।
- **दाम (Dam):** ताँबे का सिक्का जिसका वजन 380 ग्रेन था।
- **विनिमय दर:** 1 रुपया = 64 दाम।

3.5 संचार एवं लोक कल्याण: 'सराय' और सड़कें

शेरशाह ने व्यापार और सैन्य आवाजाही हेतु सड़कों का निर्माण करवाया:

- **सड़क-ए-आजम (Grand Trunk Road):** सोनार गाँव (बंगाल) से पेशावर तक।
- **सराय:** उसने सड़कों के किनारे **1700 सरायों** का निर्माण करवाया। इन सरायों को **'साम्राज्य की धमनियां' (Arteries of the Empire)** कहा जाता है। यहाँ हिंदुओं और मुसलमानों के लिए अलग-अलग ठहरने और भोजन की व्यवस्था थी। सरायों का उपयोग 'डाक चौकियों' के रूप में भी होता था।

भाग 4: राजस्थान के संदर्भ में संघर्ष (Giri Sumel Battle)

मुगल-अफगान संघर्ष की आंच राजस्थान तक पहुँची।

- **गिरी-सुमेल का युद्ध (जनवरी 1544):** शेरशाह सूरी और मारवाड़ के **राव मालदेव** के बीच जैतारण (पाली) में भीषण युद्ध हुआ।
- **ऐतिहासिक परिणाम:** मालदेव के सेनापतियों **जैता और कूपा** की वीरता से शेरशाह इतना प्रभावित हुआ कि उसने कहा— *"मैं मुट्ठी भर बाजरे के लिए हिंदुस्तान की सल्तनत खो देता।"* यह कथन शेरशाह की सैन्य कठिनाई और राजस्थानी वीरता का प्रमाण है।

भाग 5: मुगलों का प्रत्यावर्तन (Restoration of Mughals)

शेरशाह की मृत्यु (1545, कालिंजर अभियान) के बाद उसके उत्तराधिकारी कमजोर सिद्ध हुए। 15 वर्ष के निर्वासन के बाद हुमायूँ ने पुनः अवसर देखा।

- **मच्छीवाड़ा और सरहिंद का युद्ध (1555):** हुमायूँ ने अफगानों को पराजित कर पुनः दिल्ली के सिंहासन पर अधिकार किया। लेकिन 1556 में दीन-पनाह पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरकर उसकी मृत्यु हो गई।
- **लेनपूल का कथन:** "हुमायूँ जीवन भर लुढ़कता रहा और लुढ़कते हुए ही उसकी मृत्यु हो गई।"

भाग 6:

शब्दावली	विवरण	ऐतिहासिक महत्व
जरिबाना	सर्वेक्षण शुल्क (2.5%)	शेरशाह के राजस्व सुधार
महाशिलाना	कर संग्रह शुल्क (5%)	किसानों पर अतिरिक्त प्रभार
मसाहत	भूमि पैमाइश	अलाउद्दीन और शेरशाह का साझा आधार
पट्टा/कबूलियत	किसान-राज्य समझौता	प्रशासनिक पारदर्शिता
तुगलुमा	बाबर की युद्ध पद्धति	मुगलों की सामरिक शक्ति

मुगल-अफगान संघर्ष केवल युद्धों का सिलसिला नहीं था। शेरशाह सूरी ने अफगान शासन के दौरान जो प्रशासनिक हस्तक्षेप किए (जैसे रुपया, पट्टा प्रणाली, सराय), उन्हीं पर आगे चलकर अकबर ने अपने विशाल मुगल साम्राज्य की भव्य इमारत खड़ी की। सतीश चंद्र के अनुसार, "यदि शेरशाह कुछ वर्ष और जीवित रहता, तो मुगलों का भारत में पुनः आगमन लगभग असंभव होता।" शेरशाह ने सिद्ध किया कि एक सफल शासक के लिए सैन्य विजय से अधिक उसका प्रशासनिक कौशल महत्वपूर्ण है।

wincompete

अध्याय 12: मुगल-राजपूत संबंध - सहयोग, समन्वय और प्रतिरोध का युग

प्रस्तावना: एक नए युग का सूत्रपात

मुगल-राजपूत संबंधों का इतिहास केवल युद्धों और संधियों का विवरण नहीं है, बल्कि यह दो महान संस्कृतियों के बीच 'राजनीतिक सह-अस्तित्व' (Political Co-existence) का एक सफल प्रयोग था। मुगल सम्राट अकबर ने यह भली-भांति समझ लिया था कि भारत में एक सुदृढ़ और स्थायी साम्राज्य की स्थापना राजपूतों के सक्रिय सहयोग के बिना असंभव है। अकबर की 'सुलह-ए-कुल' की नीति ने राजपूतों को साम्राज्य का 'शत्रु' बनाने के बजाय 'साझेदार' (Partner) बना दिया। यह अध्याय अकबर से लेकर औरंगजेब तक के उन ऐतिहासिक मोड़ों का विश्लेषण करता है जिन्होंने भारत के राजनीतिक मानचित्र को प्रभावित किया।

भाग 1: अकबर और राजपूत सहयोग की नींव (1562–1605)

अकबर ने अपनी राजपूत नीति के माध्यम से अफगान चुनौती को संतुलित किया और मुगलों को एक राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया।

1.1 आमेर से प्रथम गठबंधन (1562 ई.)

RPSC परीक्षाओं के लिए यह आधारभूत तथ्य है। 1562 में अजमेर की यात्रा के दौरान अकबर का मेल आमेर के राजा भारमल से हुआ।

- सांभर का विवाह: भारमल ने अपनी पुत्री (इतिहास में प्रसिद्ध हरखा बाई/मरियम-उज़-ज़मानी) का विवाह अकबर से किया। यह मुगलों और राजपूतों के बीच प्रथम वैवाहिक और राजनीतिक संधि थी।
- दूरगामी प्रभाव: इस गठबंधन ने आमेर को मुगलों का सबसे विश्वसनीय सहयोगी बना दिया। भगवान दास और कुंवर मानसिंह को मुगल दरबार में उच्च मनसब प्रदान किए गए।

1.2 सुलह-ए-कुल और धार्मिक उदारता

अकबर ने राजपूतों का विश्वास जीतने हेतु कई दमनकारी प्रथाओं का अंत किया:

- तीर्थ यात्रा कर की समाप्ति (1563): हिंदुओं पर लगने वाले धार्मिक यात्रा कर को हटाया।
- जजिया कर की समाप्ति (1564): गैर-मुसलमानों पर लगने वाले जजिया को समाप्त कर अकबर ने स्वयं को एक 'उदार सम्राट' के रूप में स्थापित किया।
- इबादतखाना और मजहर (1579): इन धार्मिक नवाचारों ने राजपूतों को मुगल राजसत्ता के निकट लाया।

भाग 2: मेवाड़ का प्रतिरोध - स्वाभिमान बनाम साम्राज्य विस्तार

जहाँ अधिकांश राजपूत राज्यों ने मुगलों की अधीनता स्वीकार की, वहीं मेवाड़ के सिसोदिया वंश ने 'राजपूती आन' की रक्षा हेतु दीर्घकालिक संघर्ष का मार्ग चुना।

2.1 चित्तौड़ का घेरा और उदय सिंह (1567-68)

अकबर ने मेवाड़ की सामरिक महत्ता को देखते हुए चित्तौड़ पर आक्रमण किया।

- जैमल और फत्ता की वीरता: राणा उदय सिंह के सेनापतियों, जैमल मेड़तिया और फत्ता सिसोदिया ने अभूतपूर्व वीरता दिखाई। उनकी वीरता से प्रभावित होकर अकबर ने आगरा किले के द्वार पर उनकी गजारूढ़ मूर्तियाँ लगवाईं।
- साका और जौहर: चित्तौड़ का तीसरा साका इसी समय हुआ।

2.2 महाराणा प्रताप और हल्दीघाटी का युद्ध (18 जून, 1576)

RPSC का सर्वाधिक पसंदीदा 'कोर टॉपिक'।

wincompete

- राजनैतिक पृष्ठभूमि: अकबर ने प्रताप को समझाने हेतु चार दूत मंडल भेजे (क्रम: जलाल खान, मानसिंह, भगवान दास, टोडरमल)। प्रताप के इनकार के बाद युद्ध अपरिहार्य हो गया।
- युद्ध का स्वरूप: आमेर के कुंवर मानसिंह मुगल सेना के प्रधान सेनापति थे। यह युद्ध केवल धार्मिक नहीं, बल्कि राजनीतिक संप्रभुता का युद्ध था।
- सामरिक विश्लेषण: चेतक की वीरता, झाला बीदा का आत्म-बलिदान और प्रताप का पहाड़ियों (कोल्यारी) की ओर प्रस्थान। अबुल फजल ने इसे 'खमनौर का युद्ध' और बदायूँनी ने 'गोगुन्दा का युद्ध' कहा है। जेम्स टॉड ने इसे 'मेवाड़ की थर्मोपॉली' की संज्ञा दी।

भाग 3: मुगल प्रशासन में राजपूतों की भूमिका - मनसबदारी तंत्र

राजपूत केवल युद्ध के साथी नहीं थे, बल्कि वे मुगल साम्राज्य के 'प्रशासनिक स्तंभ' बन गए।

3.1 राजा मानसिंह (आमेर): मुगलों का सेनापति

मानसिंह को अकबर ने 7000 का मनसब और 'फरजंद' (पुत्र) की उपाधि दी थी।

- साम्राज्य विस्तार: मानसिंह ने काबुल, बंगाल, बिहार और उड़ीसा की विजय में मुख्य भूमिका निभाई।
- सांस्कृतिक प्रभाव: बंगाल में उन्होंने 'अकबर नगर' (राजमहल) की स्थापना की और राजस्थान के मंदिर स्थापत्य को उत्तर-पूर्व भारत तक पहुँचाया।

3.2 बीकानेर के राय सिंह और अन्य शासक

- राय सिंह: इन्हें मुगलों का 'स्तंभ' माना जाता था। उन्होंने गुजरात और दक्कन अभियानों में मुगलों की सहायता की। मुंशी देवी प्रसाद ने उन्हें 'राजपूताने का कर्ण' कहा है।
- मोटा राजा उदय सिंह (मारवाड़): मारवाड़ के प्रथम शासक जिन्होंने मुगलों से वैवाहिक संबंध स्थापित किए।

भाग 4: जहाँगीर और शाहजहाँ का काल - सहयोग का परिपक्व चरण

4.1 मुगल-मेवाड़ संधि (1615 ई.)

हुमायूँ और अकबर जो नहीं कर सके, वह जहाँगीर ने कूटनीति से कर दिखाया।

- अमर सिंह और जहाँगीर: महाराणा प्रताप के पुत्र अमर सिंह और शहजादा खुर्रम (शाहजहाँ) के बीच संधि हुई।
- संधि की शर्तें (Defensible Data): 1. राणा स्वयं मुगल दरबार में उपस्थित नहीं होगा (युवराज करण सिंह जाएगा)।
  2. मेवाड़ को वैवाहिक संबंधों के लिए विवश नहीं किया जाएगा।
  3. चित्तौड़ किले की मरम्मत नहीं की जाएगी।
- निष्कर्ष: यह पराजय नहीं, बल्कि 'सम्मानजनक समझौता' था।

4.2 शाहजहाँ और राजपूत

शाहजहाँ के काल में राजपूतों (विशेषकर मारवाड़ के जसवंत सिंह और आमेर के मिर्जा राजा जयसिंह) ने मुगलों के दक्कन और मध्य एशिया (बल्ख-बदख्शां) अभियानों का नेतृत्व किया। मिर्जा राजा जयसिंह ने मुगलों की सेवा में 46 वर्ष व्यतीत किए।

भाग 5: औरंगजेब और राजपूत नीति का पतन - प्रतिरोध का चरमोत्कर्ष

औरंगजेब की 'धार्मिक कट्टरता' और 'साम्राज्यवादी हठ' ने उस राजपूत स्तंभ को हिला दिया जिस पर मुगल साम्राज्य टिका था।

5.1 मारवाड़ का उत्तराधिकार संघर्ष (Jodhpur Succession)

महाराजा जसवंत सिंह की मृत्यु (1678, जमरूद) के बाद औरंगजेब ने मारवाड़ को 'खालसा' (सीधे नियंत्रण में) कर लिया।

- अजीत सिंह और दुर्गादास राठौड़: वीर दुर्गादास राठौड़ ने अजीत सिंह की रक्षा की और औरंगजेब के विरुद्ध 30 वर्षीय संघर्ष शुरू किया।
- राठौड़-सिसोदिया गठबंधन (1680): औरंगजेब की नीतियों के विरुद्ध मेवाड़ (राजसिंह) और मारवाड़ (अजीत सिंह) एक हो गए।

5.2 महाराणा राजसिंह का प्रतिरोध

मेवाड़ के महाराणा राजसिंह ने औरंगजेब की हिंदू-विरोधी नीतियों का खुलकर विरोध किया।

- जजिया का विरोध: उन्होंने औरंगजेब को एक कड़ा पत्र लिखकर जजिया कर लगाने की आलोचना की।
- सांस्कृतिक रक्षक: औरंगजेब द्वारा तोड़े जा रहे मंदिरों से मूर्तियों को बचाकर मेवाड़ में शरण दी (जैसे सिहाड़ में श्रीनाथजी और कांकरोली में द्वारकाधीश)।

भाग 6: महत्वपूर्ण शब्दावली और विश्लेषण

शब्दावली	विवरण	ऐतिहासिक संदर्भ
वतन जागीर	राजाओं को उनके ही पैतृक राज्य में दी गई जागीर	मुगल-राजपूत प्रशासनिक समन्वय
टीका	राजा के राज्याभिषेक को मुगल सम्राट की स्वीकृति	संप्रभुता का प्रदर्शन
डोला	वैवाहिक संबंधों के माध्यम से शांति स्थापना	अकबर की प्रारंभिक नीति
फरजंद	'दत्तक पुत्र' या अत्यंत प्रिय (मानसिंह को प्राप्त उपाधि)	व्यक्तिगत घनिष्ठता
चक्रव्यूह (हल्दीघाटी)	हाथियों का युद्ध (लूणा, रामप्रसाद बनाम गजराज, गजमुक्ता)	युद्ध तकनीक

मुगल-राजपूत संबंधों का इतिहास यह सिद्ध करता है कि भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में शासन के लिए 'तलवार' से अधिक 'सद्भाव' और 'साझेदारी' की आवश्यकता होती है। जब तक अकबर की 'सुलह-ए-कुल' और जहाँगीर-शाहजहाँ की 'समन्वय' की नीति रही, मुगल साम्राज्य फलता-फूलता रहा। औरंगजेब द्वारा राजपूतों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप और विश्वासघात ने मुगलों के सबसे वफादार रक्षकों को उनका सबसे बड़ा शत्रु बना दिया, जो अंततः मुगल साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण बना। सतीश चंद्र के अनुसार, "मुगल-राजपूत संबंधों का टूटना केवल एक सैन्य विफलता नहीं थी, बल्कि एक महान राजनीतिक दर्शन का अंत था।

अध्याय 13: मुगल दक्कन नीति - विस्तार, साम्राज्यवादी सीमाएँ और पतन के बीज

प्रस्तावना: दक्कन का सामरिक एवं आर्थिक महत्व

मुगल दक्कन नीति केवल भू-भाग विस्तार की लालसा नहीं थी, बल्कि यह उत्तर और दक्षिण भारत के बीच राजनीतिक प्रभुत्व की एक अनिवार्य आवश्यकता थी। विंध्याचल के दक्षिण में स्थित दक्कन के सल्तनत (अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा, बीदर और बरार) न केवल आर्थिक रूप से समृद्ध थे, बल्कि वे मुगलों के लिए एक निरंतर सामरिक चुनौती भी बने हुए थे। इतिहासकारों के अनुसार, मुगलों की दक्कन नीति तीन चरणों में विकसित हुई: **अकबर का विस्तारवाद, शाहजहाँ का समन्वय और औरंगजेब का पूर्ण विलय।**

भाग 1: अकबर और दक्कन में मुगलों का प्रवेश (1591–1605)

अकबर पहला मुगल सम्राट था जिसने उत्तर भारत को सुदृढ़ करने के बाद विंध्य पार करने का साहस किया। उसका मुख्य उद्देश्य दक्कन के राज्यों को मुगल संप्रभुता के अधीन लाना और पुर्तगालियों के प्रभाव को कम करना था।

1.1 प्रारंभिक राजनयिक प्रयास

1591 ई. में अकबर ने दक्कन के चार प्रमुख राज्यों (अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा और खानदेश) में दूत भेजे। केवल **खानदेश** के अली खान ने मुगल अधीनता स्वीकार की, जबकि अन्य ने मना कर दिया।

1.2 अहमदनगर का घेरा और चाँद बीबी (1595–1600)

मुगल सेना ने शहजादा मुराद और अब्दुल रहीम खान-ए-खाना के नेतृत्व में अहमदनगर पर आक्रमण किया।

- **चाँद बीबी का प्रतिरोध:** अहमदनगर की संरक्षिका चाँद बीबी ने मुगलों का डटकर मुकाबला किया। 1596 की संधि के अनुसार 'बरार' का क्षेत्र मुगलों को दिया गया।
- **अंतिम विजय:** 1600 ई. में अहमदनगर पर मुगलों का अधिकार हो गया, यद्यपि संघर्ष आगे भी जारी रहा।

1.3 खानदेश विजय और असीरगढ़ (1601)

खानदेश को 'दक्कन का प्रवेश द्वार' कहा जाता था। असीरगढ़ का किला अपनी अभेद्यता के लिए प्रसिद्ध था।

- **अकबर की अंतिम विजय:** असीरगढ़ की विजय अकबर के जीवन की **अंतिम विजय** थी। कहा जाता है कि अकबर ने इस किले के फाटकों को 'सोने की कुंजियों' (घूस देकर) से खोला था।
- **परिणाम:** अकबर ने दक्कन में तीन नए सूबे बनाए— **खानदेश, बरार और अहमदनगर।**

भाग 2: जहाँगीर और शाहजहाँ का काल - मलिक अम्बर की चुनौती

जहाँगीर के समय दक्कन में मुगलों को सबसे बड़ी चुनौती **मलिक अम्बर** से मिली, जो अहमदनगर का वजीर था।

2.1 मलिक अम्बर: दक्षिण का टोडरमल

मलिक अम्बर एक इथियोपियाई (अबीसीनियाई) दास था जिसने अपनी प्रतिभा से सत्ता प्राप्त की।

- **गुरिल्ला युद्ध पद्धति (Bergigiri):** उसने मुगलों की विशाल सेना के विरुद्ध 'छापामार युद्ध' प्रणाली को विकसित किया। उसने मराठों को अपनी सेना में शामिल किया, जिससे मराठों को युद्ध का प्रशिक्षण मिला।
- **राजस्व सुधार:** उसने दक्कन में टोडरमल की पद्धति के आधार पर भू-राजस्व व्यवस्था (Measurement system) लागू की।
- **जहाँगीर की विफलता:** जहाँगीर के पूरे शासनकाल में मलिक अम्बर मुगलों के लिए 'नासूर' बना रहा। खुर्रम (शाहजहाँ) ने 1617 और 1621 में उसे संधि के लिए विवश किया, जिसके उपलक्ष्य में जहाँगीर ने उसे 'शाहजहाँ' की उपाधि दी।

2.2 शाहजहाँ की दक्कन नीति और 1636 की संधियाँ

शाहजहाँ ने दक्कन में अधिक आक्रामक और स्पष्ट नीति अपनाई।

- **अहमदनगर का अंत (1633):** महावत खान ने अहमदनगर के अंतिम सुल्तान मुर्तजा तृतीय को बंदी बनाकर अहमदनगर को मुगल साम्राज्य में पूरी तरह मिला लिया।
- **बीजापुर और गोलकुंडा की संधियाँ (1636):** शाहजहाँ ने इन दोनों राज्यों को संधि के लिए विवश किया। उन्होंने मुगल संप्रभुता स्वीकार की और वार्षिक कर देना तय किया।
- **RPSC हेतु महत्वपूर्ण:** इसी काल में **शहजादा औरंगजेब** को दो बार दक्कन का सूबेदार बनाया गया (1636-44 और 1653-58)।

भाग 3: औरंगजेब की दक्कन नीति - 'दक्कन का नासूर' (1681–1707)

औरंगजेब का काल मुगल दक्कन नीति का अंतिम और सबसे विवादास्पद चरण है। उसने अपने शासनकाल के अंतिम **26 वर्ष** दक्कन में बिताए।

3.1 बीजापुर और गोलकुंडा का विलय

औरंगजेब संधियों से संतुष्ट नहीं था, वह इन शिया राज्यों का पूर्ण उन्मूलन चाहता था।

1. **बीजापुर की विजय (1686):** सुल्तान सिकंदर आदिल शाह ने आत्मसमर्पण किया।
2. **गोलकुंडा की विजय (1687):** सुल्तान अबुल हसन कुतुब शाह को बंदी बनाया गया।

3.2 मराठा चुनौती और औरंगजेब

बीजापुर और गोलकुंडा के पतन ने मुगलों और मराठों (शिवाजी के उत्तराधिकारी) के बीच की बाधा समाप्त कर दी। औरंगजेब ने संभाजी को बंदी बनाकर मार डाला (1689), लेकिन इससे मराठा प्रतिरोध समाप्त होने के बजाय 'जन-आंदोलन' बन गया। राजाराम और ताराबाई के नेतृत्व में मराठों ने मुगलों को थका दिया।

3.3 दक्कन का नासूर (Deccan Ulcer)

इतिहासकार **वी.ए. स्मिथ** ने कहा है— *"जिस प्रकार स्पेन के नासूर ने नेपोलियन को बर्बाद कर दिया, उसी प्रकार दक्कन के नासूर ने औरंगजेब को नष्ट कर दिया।"*

- औरंगजेब दक्कन को जीतने में तो सफल रहा, लेकिन उसे 'नियंत्रित' करने में विफल रहा। उसकी अनुपस्थिति में उत्तर भारत में अव्यवस्था फैल गई और साम्राज्य का खजाना खाली हो गया।

भाग 4: प्रशासनिक एवं आर्थिक संकट - पतन के बीज

दक्कन विस्तार ने मुगल साम्राज्य के सामने **'जागीरदारी और मनसबदारी संकट'** (Crisis of the Empire) उत्पन्न कर दिया।

4.1 बे-जागीरी की स्थिति

दक्कन विजय के बाद बड़ी संख्या में दक्कनी अमीरों को मुगल मनसबदारी में शामिल किया गया। इससे जागीरों की मांग बढ़ गई, लेकिन उपजाऊ भूमि (जागीर) सीमित थी। इस स्थिति को इतिहासकारों ने **'बे-जागीरी'** कहा है।

- **मनसबदारों में असंतोष:** जागीर न मिलने के कारण मनसबदार अपनी सेना का खर्च नहीं उठा पा रहे थे, जिससे मुगल सैन्य शक्ति कमजोर हुई।

4.2 वित्तीय बोझ

निरंतर युद्धों के कारण साम्राज्य का वित्तीय ढांचा चरमरा गया। दक्कन से प्राप्त राजस्व युद्ध के खर्चों की तुलना में नगण्य था।

भाग 5:

शब्दावली	विवरण	ऐतिहासिक संदर्भ
बरगीगिरी (Bergigiri)	छापामार युद्ध पद्धति	मलिक अम्बर और मराठे
खालसा	सीधे केंद्र के नियंत्रण वाली भूमि	जागीरदारी संकट के समय वृद्धि
पिएत्रा ड्यूरा	वास्तुकला की तकनीक	शाहजहाँ कालीन वैभव (दक्कन विजय के स्मारक)
चौथ एवं सरदेशमुखी	मराठों द्वारा वसूले जाने वाले कर	दक्कन में मुगल राजस्व की चुनौती
नासूर (Ulcer)	औरंगजेब की दक्कन विफलता का प्रतीक	वी.ए. स्मिथ का उद्धरण

मुगल दक्कन नीति 'विस्तारवाद' और 'व्यावहारिकता' के बीच के संघर्ष की कहानी है। अकबर और शाहजहाँ ने 'सीमित विस्तार और संधियों' के माध्यम से दक्कन को नियंत्रित रखा, लेकिन औरंगजेब की 'पूर्ण विलय' की नीति आत्मघाती सिद्ध हुई। दक्कन के राज्यों के पतन ने मराठों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया और मुगलों की वित्तीय रीढ़ तोड़ दी। सतीश चंद्र के अनुसार, "मुगल साम्राज्य का पतन दक्कन की पहाड़ियों में औरंगजेब की हठधर्मिता के साथ ही शुरू हो गया था।"

---

wincompete

अध्याय 14: मराठा चुनौती - शिवाजी का स्वराज्य, छापामार युद्ध और औरंगजेब का संघर्ष

प्रस्तावना: मराठा उत्कर्ष के कारण एवं पृष्ठभूमि

17वीं शताब्दी में दक्षिण भारत के राजनीतिक क्षितिज पर मराठा शक्ति का उदय कोई आकस्मिक घटना नहीं थी, बल्कि यह दशकों से चल रहे सामाजिक, धार्मिक और भौगोलिक परिवर्तनों का परिणाम था। **महादेव गोविंद रानाडे** के अनुसार, "मराठा शक्ति का उत्कर्ष केवल एक व्यक्ति की सफलता नहीं, बल्कि एक राष्ट्र की जागृति थी।" सह्याद्रि की दुर्गम भौगोलिक स्थिति, महाराष्ट्र के भक्ति आंदोलन (तुकाराम, नामदेव, एकनाथ) द्वारा पैदा की गई सांस्कृतिक एकता और मराठों का दक्कन की सल्तनतों में प्रशासनिक अनुभव—इन तीनों कारकों ने मिलकर शिवाजी के 'हिंदवी स्वराज्य' के लिए आधार तैयार किया।

भाग 1: छत्रपति शिवाजी महाराज - प्रारंभिक संघर्ष एवं शक्ति संचय

शिजी (1627-1680) ने एक छोटे जागीरदार के पुत्र से 'छत्रपति' बनने तक का सफर अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में तय किया।

1.1 स्वराज्य की अवधारणा (Concept of Swarajya)

शिवाजी का लक्ष्य केवल एक स्वतंत्र राज्य नहीं, बल्कि एक 'स्वराज्य' (Self-rule) की स्थापना करना था, जहाँ शासन का आधार न्याय, प्रजा-कल्याण और स्वदेशी संस्कृति हो। उन्होंने 'हिंदवी स्वराज्य' के माध्यम से भारतीय उपमहाद्वीप में मुगलों की विदेशी सत्ता को पहली बार एक सशक्त वैचारिक चुनौती दी।

1.2 बीजापुर से संघर्ष एवं अफजल खान वध (1659)

शिवाजी की बढ़ती शक्ति से चिंतित होकर बीजापुर के सुल्तान ने अपने कुशल सेनापति **अफजल खान** को उन्हें बंदी बनाने भेजा।

- **प्रतापगढ़ की घटना:** अफजल खान ने कूटनीति से शिवाजी को मारने का प्रयास किया, लेकिन शिवाजी ने अपनी चपलता और 'बाघ नख' (Tiger claws) से उसका वध कर दिया। इस घटना ने शिवाजी को एक अजेय नायक के रूप में स्थापित कर दिया।

भाग 2: मुगल-मराठा संघर्ष - औरंगजेब की प्रथम चुनौती

औरंगजेब ने दक्कन पर पूर्ण नियंत्रण हेतु मराठों को कुचलना अनिवार्य समझा।

2.1 शाइस्ता खान की विफलता (1663)

औरंगजेब ने अपने मामा और दक्कन के सूबेदार शाइस्ता खान को शिवाजी के विरुद्ध भेजा।

- **लाल महल पर छापा:** शिवाजी ने पुणे स्थित शाइस्ता खान के शिविर पर रात में साहसिक छापा मारा। शाइस्ता खान की अंगुलियाँ कट गईं और उसे भागना पड़ा। मुगलों के लिए यह एक महान अपमानजनक घटना थी।

2.2 मिर्जा राजा जयसिंह का अभियान एवं पुरंदर की संधि (1665)

RPSC परीक्षाओं हेतु सबसे महत्वपूर्ण खंड, क्योंकि इसमें राजस्थान का सीधा संबंध है। औरंगजेब ने आमेर के अनुभवी कूटनीतिज्ञ **मिर्जा राजा जयसिंह** को विशाल सेना के साथ भेजा।

- **जयसिंह की रणनीति:** जयसिंह ने शिवाजी को चारों ओर से घेर लिया और उनके किलों की घेराबंदी कर उन्हें संधि हेतु विवश कर दिया।
- **पुरंदर की संधि (22 जून, 1665):** इसकी शर्तें 'रक्षात्मक तथ्यों' (Defensible Facts) के रूप में यहाँ दी गई हैं:
    1. शिवाजी ने अपने **35 किलों में से 23 किले** मुगलों को सौंप दिए।
    2. शिवाजी ने मुगलों की संप्रभुता स्वीकार की और बीजापुर के विरुद्ध मुगलों की सहायता का वचन दिया।
    3. शिवाजी के पुत्र संभाजी को मुगल दरबार में **5000 का मनसब** दिया गया।
    4. शिवाजी को स्वयं दरबार में उपस्थित होने की छूट दी गई (मिर्जा राजा की व्यक्तिगत गारंटी पर)।

wincompete

2.3 आगरा की यात्रा एवं साहसिक पलायन (1666)

जयसिंह के आश्वासन पर शिवाजी औरंगजेब से मिलने आगरा (जयपुर भवन) आए।

- **अपमान एवं बंदी:** औरंगजेब ने उन्हें 5000 के मनसबदारों की श्रेणी में खड़ा कर अपमानित किया। शिवाजी के विरोध करने पर उन्हें 'नजरबंद' कर दिया गया।
- **पलायन:** शिवाजी और संभाजी फलों की टोकरियों में छिपकर अत्यंत नाटकीय ढंग से कैद से निकल गए और सुरक्षित महाराष्ट्र पहुँचे।

भाग 3: स्वराज्य का सुदृढ़ीकरण एवं राज्याभिषेक (1674)

1670 के बाद शिवाजी ने मुगलों को दिए गए अधिकांश किले पुनः जीत लिए।

3.1 रायगढ़ में राज्याभिषेक

6 जून, 1674 को शिवाजी ने रायगढ़ के दुर्ग में अपना राज्याभिषेक करवाया।

- **शास्त्रीय मान्यता:** काशी के विद्वान **गागा भट्ट** ने उन्हें क्षत्रिय घोषित करते हुए राज्याभिषेक संपन्न किया।
- **उपाधियाँ:** उन्होंने **'छत्रपति'**, **'हेंदव धर्मोद्धारक'** (हिंदू धर्म का रक्षक) और **'गौ-ब्राह्मण प्रतिपालक'** की उपाधियाँ धारण कीं। उन्होंने अपना एक नया संवत (राज्याभिषेक शक) शुरू किया।

भाग 4: शिवाजी का प्रशासनिक ढांचा - 'अष्टप्रधान'

शिवाजी केवल एक महान योद्धा नहीं, बल्कि एक कुशल प्रशासक भी थे। उनका प्रशासन प्राचीन भारतीय सिद्धांतों और तत्कालीन सैन्य आवश्यकताओं का मिश्रण था।

4.1 अष्टप्रधान परिषद (The Council of Eight)

सुल्तान की सहायता हेतु 8 मंत्रियों का एक समूह था, जिन्हें 'अष्टप्रधान' कहा जाता था। **नोट:** यह सलाहकार परिषद थी, निर्णय लेने की अंतिम शक्ति छत्रपति के पास थी।

1. **पेशवा (मुखय प्रधान):** राजा का प्रधानमंत्री। शासन की देखभाल और समन्वय करना।
2. **अमात्य (मजूमदार):** वित्त एवं राजस्व मंत्री। आय-व्यय का लेखा-जोखा रखना।
3. **मंत्री (वाकयानवीस):** राजा के दैनिक कार्यों और दरबार की घटनाओं का रिकॉर्ड रखना।
4. **सचिव (शुरुनवीस):** सरकारी पत्राचार और पत्रों की भाषा शैली की देखभाल करना।
5. **सुमंत (दबीर):** विदेश मंत्री। अन्य राज्यों के साथ संबंधों और दूतों का प्रबंधन।
6. **सेनापति (सर-ए-नौबत):** सैन्य भर्ती, संगठन और अनुशासन का प्रमुख।
7. **पंडित राव (दानाध्यक्ष):** धर्म, दान और विद्वानों के मामलों का प्रमुख।
8. **न्यायाधीश:** न्याय प्रशासन का प्रमुख (हिंदू शास्त्रानुसार)।

भाग 5: सैन्य व्यवस्था एवं छापामार रणनीति

शिवाजी की सैन्य शक्ति का आधार उनका अनुशासन और **'गनिमी कावा'** (छापामार युद्ध पद्धति) थी।

5.1 गनिमी कावा (Guerilla Warfare)

सह्याद्रि की पहाड़ियों का लाभ उठाकर शिवाजी ने विशाल मुगल सेनाओं को थका दिया। वे अचानक आक्रमण करते और जंगलों-पहाड़ों में गायब हो जाते थे। मुगलों के लिए यह 'अदृश्य शत्रु' से लड़ने जैसा था।

5.2 सैन्य वर्गीकरण

wincompete

- **पाइगा (Paiga):** यह नियमित घुड़सवार सेना थी, जिन्हें राज्य द्वारा घोड़ा और शस्त्र दिए जाते थे।
- **शिलहदार (Shiledar):** ये अस्थाई घुड़सवार थे जो अपना घोड़ा और शस्त्र स्वयं लाते थे।
- **दुर्ग प्रबंधन:** किलों की सुरक्षा हेतु तीन अधिकारी होते थे— **हवलदार, सर-ए-नौबत और सबनीस** (ब्राह्मण)। इससे सत्ता का संतुलन बना रहता था।

भाग 6: राजस्व प्रणाली - चौथ एवं सरदेशमुखी

शिवाजी ने एक नई आर्थिक व्यवस्था लागू की जो उनके साम्राज्य विस्तार का आधार बनी।

1. **स्वराज्य (Swarajya):** वह क्षेत्र जो सीधे शिवाजी के नियंत्रण में था। यहाँ भू-राजस्व उपज का **33% से 40%** था।
2. **चौथ (Chauth):** पड़ोसी राज्यों (मुगल या दक्कन के राज्यों) से उनकी आय का **1/4 (25%)** हिस्सा वसूला जाता था। इसके बदले मराठे उन पर आक्रमण न करने और सुरक्षा का वचन देते थे।
3. **सरदेशमुखी (Sardeshmukhi):** शिवाजी स्वयं को महाराष्ट्र का 'वंशानुगत सरदेशमुख' मानते थे। इस नाते वे अतिरिक्त **1/10 (10%)** कर वसूलते थे।

भाग 7:

शब्दावली	विवरण	ऐतिहासिक संदर्भ
मुलक-ए-कादिम	शिवाजी के पूर्वजों की पैतृक जागीर	राजस्व प्रशासन
काठी	भूमि मापन का पैमाना (अन्नाजी दत्तो द्वारा विकसित)	राजस्व सुधार
मिरासदार	वंशानुगत भूमि का स्वामी	सामाजिक संरचना
मोकासा	नकद वेतन के बदले दी गई जागीर (बाद के मराठा काल में)	सैन्य प्रशासन
सर-ए-नौबत	सेना का प्रधान सेनापति	अष्टप्रधान

wincompete

मराठा चुनौती ने औरंगजेब की उस भ्रांति को तोड़ दिया कि भारत को केवल एक 'इस्लामी साम्राज्य' के रूप में शासित किया जा सकता है। शिवाजी ने 'स्वराज्य' और 'सुशासन' का जो आदर्श प्रस्तुत किया, उसने आगे चलकर 18वीं शताब्दी में मराठों को भारत की अग्रणी शक्ति बना दिया। औरंगजेब ने अपना पूरा जीवन मराठों को कुचलने में लगा दिया, लेकिन वह सफल नहीं हो सका। **सतीश चंद्र** के अनुसार, "शिवाजी ने मराठों को एक ऐसा 'राष्ट्र' बना दिया जिसने मुगलों के वैभव को इतिहास के पन्नों में समेटने में मुख्य भूमिका निभाई।"

अध्याय 15: मुगल प्रशासनिक चुनौतियां - मनसबदारी और जागीरदारी संकट

प्रस्तावना: मुगल सत्ता के दो आधार स्तंभ

मुगल साम्राज्य की स्थिरता और विस्तार मुख्य रूप से दो संस्थागत ढांचों पर टिकी थी— **मनसबदारी प्रणाली** (सैन्य-नौकरशाही ढांचा) और **जागीरदारी प्रणाली** (राजस्व-वित्तीय ढांचा)। जहाँ मनसबदारी ने साम्राज्य को एक अनुशासित सैन्य नेतृत्व प्रदान किया, वहीं जागीरदारी ने उस नेतृत्व के भरण-पोषण हेतु वित्तीय संसाधन सुनिश्चित किए। इतिहासकारों, विशेषकर **सतीश चंद्र** और **इरफान हबीब** के अनुसार, 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इन दोनों प्रणालियों में आए संरचनात्मक दोषों ने मुगल साम्राज्य के पतन का मार्ग प्रशस्त किया।

भाग 1: मनसबदारी प्रणाली - विकास एवं तकनीकी पक्ष

अकबर द्वारा 1575 ई. में व्यवस्थित की गई मनसबदारी प्रणाली एक ऐसी व्यवस्था थी जिसमें प्रत्येक सैन्य और नागरिक अधिकारी को एक **'मनसब'** (पद/ओहदा) दिया जाता था।

1.1 जात और सवार (Zat and Sawar)

मनसबदारी को दो भागों में विभाजित किया गया था:

- **जात (Zat):** यह अधिकारी के व्यक्तिगत पद, प्रतिष्ठा और उसके वेतन को निर्धारित करता था।
- **सवार (Sawar):** यह उस निश्चित संख्या को दर्शाता था जो मनसबदार को घुड़सवारों और घोड़ों के रूप में सेना में रखनी होती थी।
- **श्रेणियाँ:** यदि जात और सवार बराबर हों तो वह 'प्रथम श्रेणी', यदि सवार, जात के आधे से अधिक हो तो 'द्वितीय श्रेणी', और यदि सवार, जात के आधे से कम हो तो 'तृतीय श्रेणी' का मनसबदार कहलाता था।

1.2 तकनीकी नवाचार: दह-बिस्ती और दु-अस्पा सिह-अस्पा

- **दह-बिस्ती नियम (10:20 Rule):** प्रत्येक 10 घुड़सवारों के लिए 20 घोड़े रखना अनिवार्य था ताकि युद्ध के समय थके हुए घोड़ों को बदला जा सके।
- **दु-अस्पा सिह-अस्पा (जहाँगीर काल):** जहाँगीर ने मनसबदारों के व्यक्तिगत पद (जात) को बढ़ाए बिना उनकी सैन्य क्षमता (सवार) बढ़ाने के लिए यह नियम लागू किया। इसमें मनसबदार को अपने 'सवार' पद के दोगुने या तिगुने घोड़े रखने पड़ते थे।

भाग 2: जागीरदारी प्रणाली - वित्तीय आधार

मुगल काल में वेतन देने की दो पद्धतियाँ थीं— **'नकद'** (नकदी) और **'भूमि आवंटन'** (जागीर)। जागीरदारी प्रणाली मनसबदारी का ही वित्तीय पूरक थी।

2.1 जागीरों के प्रकार (Types of Jagirs)

1. **तन जागीर:** वेतन के बदले दी जाने वाली जागीर (हस्तांतरणीय)।
2. **वतन जागीर:** राजपूत राजाओं को उनके पैतृक राज्यों में दी गई जागीर (गैर-हस्तांतरणीय)।
3. **मशरुत जागीर:** किसी विशिष्ट पद या सैन्य सेवा की शर्त पर दी गई जागीर।
4. **इनाम जागीर:** बिना किसी सेवा की शर्त के धार्मिक या विद्वान व्यक्तियों को दी गई जागीर।

2.2 जागीर हस्तांतरण की नीति

मुगल शासक (विशेषकर अकबर से शाहजहाँ तक) जागीरों को प्रत्येक 3-4 वर्ष में हस्तांतरित करते थे ताकि कोई मनसबदार किसी विशेष क्षेत्र में अपनी जड़ें न जमा सके और स्थानीय विद्रोह न कर सके।

भाग 3: जागीरदारी संकट (The Jagirdari Crisis)

17वीं शताब्दी के अंत में, विशेषकर औरंगजेब के काल में, जागीरदारी व्यवस्था चरमरा गई। **सतीश चंद्र** ने इसे 'जागीरदारी संकट' (Jagirdari Crisis) की संज्ञा दी है।

3.1 बे-जागीरी की स्थिति

औरंगजेब की दक्कन नीति के कारण बड़ी संख्या में मराठा और दक्कनी अमीरों को मनसब दिए गए। इससे मनसबदारों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई, लेकिन आवंटित की जाने वाली भूमि (जागीर) सीमित थी।

- **पायबाकी (Paibaqi):** वह भूमि जो जागीर में दिए जाने हेतु सुरक्षित रखी जाती थी, वह समाप्त होने लगी। मनसबदार जागीर पाने के लिए वर्षों तक प्रतीक्षा करने लगे। इस स्थिति को **'बे-जागीरी'** कहा गया।

3.2 जमा और हासिल के बीच का अंतर

- **जमा (Jama):** वह राजस्व जो कागजों पर अनुमानित था।
- **हासिल (Hasil):** वह वास्तविक राजस्व जो वसूल किया जाता था।
- **संकट:** दक्कन में निरंतर युद्ध और अशांति के कारण 'हासिल' (वास्तविक आय) 'जमा' (अनुमानित आय) से बहुत कम थी। मनसबदार अपनी सेना का खर्च उठाने में असमर्थ हो गए और उन्होंने किसानों का शोषण शुरू कर दिया।

भाग 4: मनसबदारी में गिरावट और औरंगजेब के सुधार

जागीरों की कमी को दूर करने के लिए औरंगजेब ने कई प्रशासनिक प्रयोग किए जो अंततः असफल रहे।

4.1 मासिक पैमाना (Monthly Scale - माहवार)

शाहजहाँ ने 'माहवार' पद्धति शुरू की थी, जिसे औरंगजेब ने विस्तार दिया। यदि किसी जागीर से पूरे वर्ष का राजस्व नहीं मिल रहा है, तो उसे '8-मासा' या '6-मासा' जागीर घोषित कर दिया जाता था और मनसबदार के वेतन और सैन्य उत्तरदायित्व में उसी अनुपात में कटौती कर दी जाती थी। इससे मुगल सेना की वास्तविक मारक क्षमता (Effective Strength) कम हो गई।

4.2 खिजरी और खुराकी

औरंगजेब ने मनसबदारों पर कई नए शुल्क लगाए जैसे 'खुराकी-ए-दावब' (हाथियों और जानवरों के भरण-पोषण का खर्च)। इससे मनसबदारों की शुद्ध आय कम हो गई और उनमें असंतोष फैल गया।

भाग 5: किसानों का असंतोष और कृषि संकट (Agrarian Crisis)

इरफान हबीब के अनुसार, जागीरदारी संकट केवल अमीरों का संकट नहीं था, बल्कि यह एक **कृषि संकट** था।

- **किसानों का पलायन:** जागीरदारों को पता था कि उनकी जागीर कभी भी हस्तांतरित हो सकती है, इसलिए वे कम समय में किसानों से अधिकतम लगान वसूलना चाहते थे। इससे तंग आकर किसान अपनी जमीन छोड़कर भागने लगे या सशस्त्र विद्रोह (जैसे जाट, सतनामी और सिख विद्रोह) में शामिल हो गए।

---

wincompete

भाग 6:)

शब्दावली	विवरण	ऐतिहासिक संदर्भ
पातिशाब (Patishab)	मनसबदारों द्वारा घोड़ों के निरीक्षण की प्रक्रिया	सैन्य अनुशासन
मशरुत सवार	अतिरिक्त सेना रखने हेतु दिया गया अस्थायी मनसब	युद्धकालीन आवश्यकता
दह-साला	टोडरमल द्वारा विकसित 10 वर्षीय राजस्व प्रणाली	जागीर निर्धारण का आधार
खास-ए-शरिफा	सुल्तान की व्यक्तिगत आय हेतु आरक्षित भूमि (खालसा)	वित्तीय प्रशासन
दाह-नयिका	औरंगजेब के समय लिया जाने वाला 10% अतिरिक्त कर	राजस्व संकट

भाग 7:

मुगल साम्राज्य का पतन केवल औरंगजेब की व्यक्तिगत विफलताओं या धार्मिक कट्टरता का परिणाम नहीं था, बल्कि यह **मनसबदारी और जागीरदारी प्रणालियों के संस्थागत पतन** का परिणाम था। जब तक राज्य के पास देने के लिए उपजाऊ भूमि (जागीर) थी, तब तक मनसबदार साम्राज्य के प्रति वफादार रहे। जैसे ही 'बे-जागीरी' का संकट आया, मनसबदारों के गुट बन गए और उन्होंने क्षेत्रीय स्वायत्तता की ओर कदम बढ़ा दिए।

सतीश चंद्र का यह तर्क सर्वाधिक रक्षात्मक है कि औरंगजेब की दक्कन विजय ने साम्राज्य के भूगोल को इतना बढ़ा दिया कि उसका प्रशासनिक भार (मनसबदारों की भीड़) जागीरदारी व्यवस्था सहन नहीं कर पाई। इसी 'प्रशासनिक पक्षाघात' ने 18वीं शताब्दी के क्षेत्रीय राज्यों (जैसे हैदराबाद, अवध, बंगाल) के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।

---

wincompete

अध्याय 16: इंडो-इस्लामिक वास्तुकला - मेहराब, गुंबद और पिएत्रा-ड्यूरा तकनीक का विकास

प्रस्तावना: दो संस्कृतियों का स्थापत्य समन्वय

मध्यकालीन भारत में तुर्कों और मुगलों के आगमन के साथ स्थापत्य कला की एक नई शैली का प्रादुर्भाव हुआ, जिसे **'इंडो-इस्लामिक' (Indo-Islamic)** या 'हिंद-इस्लामी' वास्तुकला कहा जाता है। यह शैली प्राचीन भारतीय **'शतीरी' (Trabeate)** पद्धति (जिसमें बीम और खंभों का प्रयोग होता था) और इस्लामी **'मेहराबी' (Arcuate)** पद्धति (जिसमें मेहराब और गुंबद का प्रयोग होता था) का एक अद्भुत समन्वय थी। जहाँ भारतीय शैली अलंकरण और ठोस संरचना पर आधारित थी, वहीं इस्लामी शैली विशालता, प्रकाश और ज्यामितीय परिशुद्धता पर केंद्रित थी।

भाग 1: संरचनात्मक नवाचार - मेहराब और गुंबद का विज्ञान

मध्यकालीन वास्तुकला की सबसे बड़ी तकनीकी क्रांति 'मेहराब' और 'गुंबद' का वैज्ञानिक प्रयोग था।

1.1 मेहराब (The Arch): वास्तविक मेहराब का उदय

प्राचीन भारतीय वास्तुकला में द्वारों के ऊपर पत्थर के सीधे लट्ठे (Lintels) रखे जाते थे। तुर्कों ने **'वास्तविक मेहराब' (True Arch)** की तकनीक पेश की।

- **तकनीक:** इसमें मेहराब के मध्य में एक 'कुंज पत्थर' (**Keystone**) लगाया जाता था, जो पूरी संरचना के भार को पार्श्व दीवारों पर स्थानांतरित कर देता था। इससे द्वारों के बीच खंभों की आवश्यकता समाप्त हो गई और बड़े प्रवेश द्वार बनाना संभव हुआ।
- **विकास:** भारत में 'वास्तविक मेहराब' का पहला सफल उदाहरण **बलवन का मकबरा** (दिल्ली) माना जाता है, जबकि इसका कलात्मक चरमोत्कर्ष **अलाई दरवाजा** (अलाउद्दीन खिलजी) में दिखाई देता है।

1.2 गुंबद (The Dome): विशालता का प्रतीक

गुंबद न केवल विशाल आंतरिक स्थान प्रदान करता था, बल्कि यह दूर से ही इमारत की भव्यता को दर्शाता था।

- **तकनीक:** वर्गाकार आधार पर गोल गुंबद बनाने के लिए **'कोणीय मेहराब' (Squinch Arch)** पद्धति का प्रयोग किया गया।
- **दोहरा गुंबद (Double Dome):** यह तकनीक लोदी काल में शुरू हुई और मुगलों (हुमायूँ का मकबरा) में परिपक्व हुई। इसमें दो परतें होती थीं—भीतरी परत छत को आनुपातिक ऊँचाई देती थी और बाहरी परत इमारत को बाहर से विशाल दिखाती थी।

भाग 2: सल्तनतकालीन स्थापत्य - प्रयोग और सुदृढ़ीकरण

2.1 इल्बारी एवं खिलजी शैली

- **कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद:** यह भारत में निर्मित पहली मस्जिद थी। इसमें हिंदू मंदिरों के स्तंभों का पुन: उपयोग किया गया।
- **अलाई दरवाजा (1311 ई.):** यह इंडो-इस्लामिक स्थापत्य का 'हीरा' माना जाता है। इसमें पहली बार **लाल पत्थर और सफेद संगमरमर** का समन्वय और घोड़े के नाल की आकृति वाली मेहराब (Horse-shoe Arch) का प्रयोग हुआ।

2.2 तुगलक एवं लोदी शैली

- **तुगलक शैली:** इसमें भव्यता के स्थान पर 'सादगी' और 'मजबूती' पर जोर दिया गया। इसकी मुख्य विशेषता **'ढलवां दीवारें' (Batter/Slopping walls)** थीं।
- **लोदी शैली:** इसे 'मकबरों का युग' कहा जाता है। इसमें अष्टकोणीय मकबरे और दोहरे गुंबद की शुरुआत हुई।

भाग 3: मुगल वास्तुकला - पिएत्रा-ड्यूरा और संगमरमर का वैभव

मुगल वास्तुकला इंडो-इस्लामिक शैली का चरमोत्कर्ष थी। अकबर ने जहाँ लाल बलुआ पत्थर को प्राथमिकता दी, वहीं शाहजहाँ ने सफेद संगमरमर को 'अमरता' प्रदान की।

3.1 पिएत्रा-ड्यूरा तकनीक (Pietra Dura - Parchinkari)

इसे 'पच्चीकारी' या 'जड़ाऊ काम' भी कहा जाता है।

- **परिभाषा:** सफेद संगमरमर की सतह को खोदकर उसमें कीमती और अर्ध-कीमती पत्थर (जैसे लाजवर्द, अकीक, मूंगा, पुखराज) जड़कर फूल-पत्तियों के बेल-बूटे बनाना।
- **सर्वप्रथम प्रयोग:** भारत में पिएत्रा-ड्यूरा तकनीक का व्यापक और व्यवस्थित प्रयोग पहली बार **इत्माद-उद-दौला के मकबरे** (नूरजहाँ द्वारा निर्मित) में किया गया।
- **चरमोत्कर्ष:** शाहजहाँ द्वारा निर्मित **ताजमहल** में यह तकनीक अपनी पूर्णता पर पहुँची।

3.2 बाग-स्थापत्य (Charbagh Style)

मुगलों ने वास्तुकला को प्रकृति से जोड़ा। 'चारबाग' पद्धति में इमारत एक वर्गाकार बाग के मध्य स्थित होती थी, जो नहरों द्वारा चार बराबर भागों में विभाजित होता था। इसका पहला उत्कृष्ट उदाहरण **हुमायूँ का मकबरा** है।

भाग 4: मुगल सम्राटों का व्यक्तिगत योगदान

4.1 अकबर: फतेहपुर सीकरी का निर्माण

अकबर की वास्तुकला में राजस्थानी और गुजराती शैली का गहरा प्रभाव था।

- **बुलंद दरवाजा:** गुजरात विजय की स्मृति में निर्मित यह विश्व का सबसे ऊँचा प्रवेश द्वार है।
- **जोधाबाई महल और पंचमहल:** इनमें खंभों और छतरियों का प्रयोग भारतीय शतीरी पद्धति के प्रभाव को दर्शाता है।

4.2 शाहजहाँ: संगमरमर का काल

शाहजहाँ के काल को 'मुगल स्थापत्य का स्वर्ण युग' कहा जाता है।

- **ताजमहल:** विश्व का सातवाँ अजूबा। इसमें दोहरे गुंबद, पिएत्रा-ड्यूरा और चारबाग का सर्वोत्तम समन्वय है।
- **लाल किला (दिल्ली):** यहाँ स्थित 'दीवान-ए-खास' में खुसरो की प्रसिद्ध पंक्ति उत्कीर्ण है— *"गर फिरदौस बर रूये ज़मी अस्त, हमी अस्तो हमी अस्तो हमी अस्त"* (यदि पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है, तो वह यहीं है)।

भाग 5: सजावट की अन्य शैलियाँ (Ornamentation)

इंडो-इस्लामिक शैली में जीवित प्राणियों के चित्रण का निषेध था (कुरान के अनुसार), अतः सजावट के लिए तीन मुख्य पद्धतियाँ अपनाई गईं:

1. **अरबस्क (Arabesque):** निरंतर मुड़ने वाली बेल-बूटों की ज्यामितीय नक्काशी।
2. **कैलीग्राफी (Calligraphy):** कुरान की आयतों को कलात्मक रूप से दीवारों पर लिखना (जैसे ताज महल के प्रवेश द्वार पर)।
3. **जाली कार्य:** पत्थर को काटकर बनाई गई महीन जालियाँ (जैसे सीदी सैयद मस्जिद, अहमदाबाद)।

---

wincompete

भाग 6:

शब्दावली	विवरण	ऐतिहासिक संदर्भ
पिएत्रा-ड्यूरा	संगमरमर में रत्नों की जड़ाई	शाहजहाँ कालीन वैभव
कुंज पत्थर (Keystone)	मेहराब के भार को थामने वाला मध्य पत्थर	मेहराब निर्माण तकनीक
चारबाग	चार भागों में विभाजित मुगल उद्यान शैली	हुमायूँ का मकबरा
दोहरा गुंबद	आंतरिक और बाहरी गुंबद का मेल	लोदी और मुगल स्थापत्य
छतरी (Chhatri)	गुंबद के साथ छोटी छतरीनुमा संरचना	इंडो-इस्लामिक समन्वय

भाग 7:

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला केवल निर्माण की तकनीक नहीं थी, बल्कि यह भारत की 'गंगा-जमुनी तहजीब' का पत्थर पर लिखा गया इतिहास है। जहाँ मेहराब और गुंबद ने मध्य पूर्व की भव्यता दी, वहीं कमल, कलश और स्वास्तिक जैसे प्रतीकों ने इसे भारतीय मिट्टी से जोड़े रखा। **सतीश चंद्र** के अनुसार, "यह स्थापत्य शैली भारत की सामासिक संस्कृति (Composite Culture) का सबसे सशक्त साक्ष्य है।" शाहजहाँ की पिएत्रा-ड्यूरा तकनीक ने पत्थर को रेशम जैसी कोमलता प्रदान की, जो विश्व वास्तुकला के इतिहास में अद्वितीय है।

---

wincompete

अध्याय 16: इंडो-इस्लामिक वास्तुकला - विकास और तकनीक (13वीं-17वीं शताब्दी)

सस्धतुयक दोवलोममात

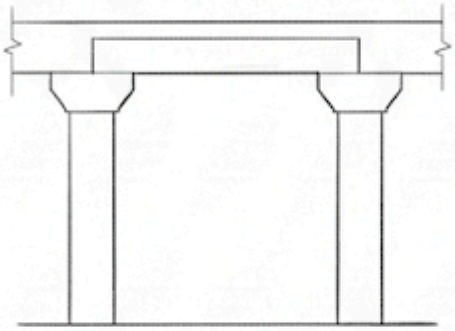

Indian 'Trabeate'
(Lintel and Beam)

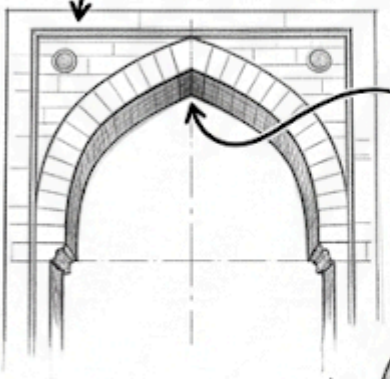

वास्तविक मेहराब (बलवन मकबरा संदर्भ, अलाई दरवाजा चरमोत्कर्ष)

कुंज पत्थर (Keystone)
- संरचनात्मक भार धारक

दोहरा गुंबद तकनीक
(हुमायूँ का मकबरा)

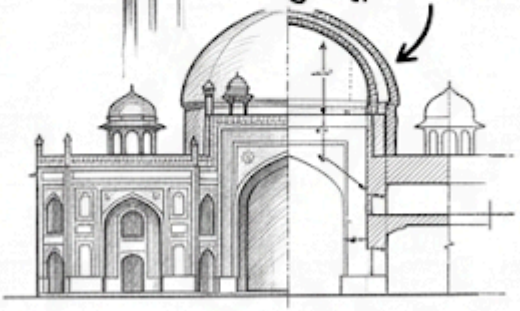

दोहरा गुंबद तकनीक
(हुमायूँ का मकबरा)

मुगगल Peak

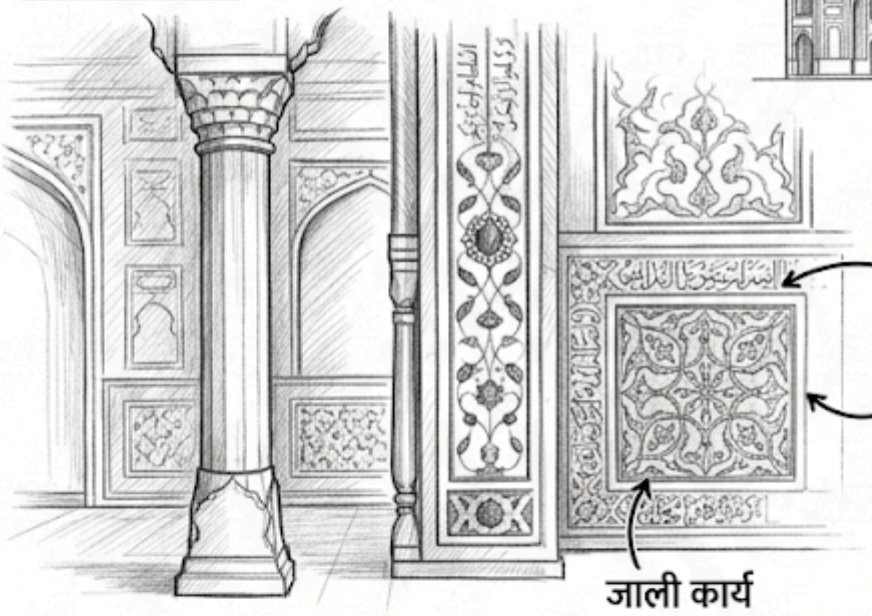

पिएत्रा-ड्यूरा जड़ाऊ काम
(ताजमहल, शाहजहाँ काल)

ज्यामितीय अरबस्क और
कैलीग्राफी सजावट

जाली कार्य

Synthesis

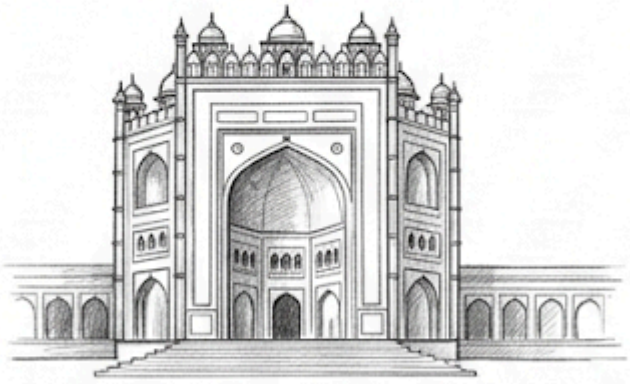

बुलंद दरवाजा (फतेहपुर सीकरी, अकबर, 1601 ई.)
- गुजरात विजय स्मृति

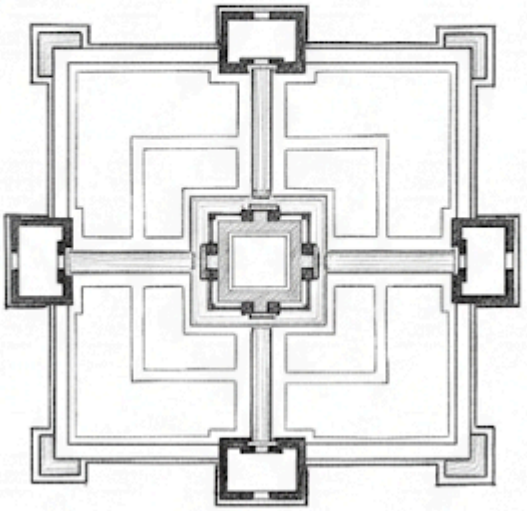

मुगल चारबाग पद्धति का लेआउट

सोत: ऐतिहासिक दस्तावेजों एवं आधिकारिक पुरातात्विक रेखाचित्रों पर आधारित प्रमाणिक चित्रण।

अध्याय 17: मुगल चित्रकला - हम्जनामा से जहाँगीर के स्वर्ण काल तक

मुगल चित्रकला का स्वरूप एवं दर्शन

मुगल चित्रकला मध्यकालीन भारत की सामासिक संस्कृति (Composite Culture) का सबसे परिष्कृत उदाहरण है। यह शैली न तो शुद्ध रूप से फारसी थी और न ही पूर्णतः भारतीय; यह फारसी रेखांकन की सूक्ष्मता और भारतीय रंगों की जीवंतता का एक अद्वितीय 'संश्लेषण' थी। मुगल चित्रकला मुख्य रूप से 'अभिजात वर्ग' की कला थी, जो पुस्तकों के चित्रण (**Manuscript Illustration**) और लघु-चित्रकला (**Miniature Painting**) पर केंद्रित थी। इतिहासकारों के अनुसार, मुगल चित्रकला का विकास एक ऐसी यात्रा थी जो हुमायूँ के साथ 'निर्वासन' से शुरू हुई, अकबर के साथ 'संस्थागत' बनी, जहाँगीर के साथ 'स्वर्ण शिखर' पर पहुँची और औरंगजेब के साथ 'क्षेत्रीय शैलियों' में विलीन हो गई।

भाग 1: नींव और प्रारंभिक विकास (बाबर एवं हुमायूँ)

मुगल चित्रकला के बीज भारत से बाहर, मध्य एशिया की तैमूरी कला में निहित थे।

1.1 बाबर का सौंदर्यबोध

यद्यपि बाबर के पास निरंतर युद्धों के कारण चित्रकला को व्यवस्थित करने का समय नहीं था, लेकिन उनकी आत्मकथा **'तुजुक-ए-बाबरी'** कला के प्रति उनकी सूक्ष्म दृष्टि को दर्शाती है। उन्होंने फारस के प्रसिद्ध चित्रकार **बिहजाद** (जिसे 'पूर्व का राफेल' कहा जाता है) की शैली की समीक्षा की, जो यह सिद्ध करता है कि मुगलों में कलात्मक चेतना आरंभ से ही विद्यमान थी।

1.2 हुमायूँ: फारसी कला का भारत आगमन

भारत में मुगल चित्रकला की वास्तविक नींव हुमायूँ के निर्वासन काल (ईरान में) के दौरान पड़ी। जब हुमायूँ 1555 में पुनः दिल्ली लौटा, तो वह अपने साथ दो महान फारसी चित्रकारों को लेकर आया:

1. **मीर सैय्यद अली** (तबरेज का निवासी)।
2. **ख्वाजा अब्दुस समद** (शिराज का निवासी, जिसे हुमायूँ ने **'शीरीं कलम'** की उपाधि दी)।
   इन दोनों चित्रकारों ने भारत में मुगल चित्रकला के पहले महान ग्रंथ **'दास्तान-ए-अमीर हम्जा'** (हम्जनामा) के चित्रण की योजना तैयार की।

भाग 2: अकबर काल - संस्थागत ढांचा और भारतीयकरण (1556–1605)

अकबर ने चित्रकला को एक राजकीय विभाग के रूप में संगठित किया और इसे 'धार्मिक कट्टरता' से मुक्त कर 'साहित्यिक एवं ऐतिहासिक' पहचान दी।

2.1 'तस्वीर खाना' (The Imperial Atelier)

अकबर ने फतेहपुर सीकरी में एक विशाल **'तस्वीर खाना'** की स्थापना की। यहाँ हिंदू और मुस्लिम चित्रकार एक साथ मिलकर कार्य करते थे। अबुल फजल ने 'आइने-अकबरी' में लिखा है कि— *"अकबर चित्रकला को ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करने का एक माध्यम मानता था।"*

2.2 'हम्जनामा' (Hamzanama) - मुगल शैली का शैशव काल

यह मुगल चित्रकला का पहला महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

- **विषय:** पैगंबर मोहम्मद के चाचा 'अमीर हम्जा' के वीरतापूर्ण कारनामे।
- **तकनीक:** इसमें लगभग 1200 चित्र थे जो **सूती कपड़े** पर बनाए गए थे। इसमें फारसी तकनीक और भारतीय रंगों का अद्भुत संगम था।

2.3 अकबर के प्रमुख चित्रकार

wincompete

अकबर के दरबार में 100 से अधिक चित्रकार थे, जिनमें अधिकांश हिंदू थे:

1. **दसवंत:** यह एक कहार का पुत्र था। अकबर ने उसकी प्रतिभा को पहचानकर उसे अब्दुस समद के अधीन प्रशिक्षण दिलाया। वह **'रज्मनामा'** (महाभारत का फारसी अनुवाद) का मुख्य चित्रकार था। मानसिक असंतुलन के कारण उसने बाद में आत्महत्या कर ली थी।
2. **बसावन:** यह आकृतियों के चित्रण (Face drawing) और पृष्ठभूमि (Background) बनाने में निपुण था। इसे अकबर काल का 'सर्वश्रेष्ठ चित्रकार' माना जाता है।
3. **मिस्किन और केशव:** ये भी अकबर कालीन कला के महत्वपूर्ण स्तंभ थे।

भाग 3: जहाँगीर का काल - चित्रकला का स्वर्ण युग (1605–1627)

जहाँगीर स्वयं एक उच्च कोटि का चित्र पारखी और कलाकार था। उसके शासनकाल में चित्रकला पुस्तकों के चित्रण (Manuscript) से हटकर **स्वतंत्र चित्रों** (Individual Portraits) और **प्रकृति चित्रण** की ओर मुड़ गई।

3.1 जहाँगीर का दावा

जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा **'तुजुक-ए-जहाँगीरी'** में गर्व से लिखा है— *"मेरी कला के प्रति रुचि ऐसी है कि यदि किसी मृत या जीवित चित्रकार की कोई कृति मेरे सामने लाई जाए, तो मैं केवल चित्र देखकर यह बता सकता हूँ कि वह किस कलाकार की है। यदि किसी चित्र में चेहरा किसी एक ने और आँखें किसी दूसरे ने बनाई हों, तो भी मैं पहचान सकता हूँ कि आँखें किसने बनाई हैं।"*

3.2 प्रमुख चित्रकार और उनकी विशेषज्ञता

चित्रकार	उपाधि	विशेषज्ञता (Specialization)
उस्ताद मंसूर	नादिर-उल-असर	पशु-पक्षी और दुर्लभ फूल (जैसे साइबेरियन सारस, बाज, बंगाल का पुष्प)।
अबुल हसन	नादिर-उज-जमाँ	मानवीय आकृतियाँ और व्यक्ति चित्र (Portraits)।
बिछित्र	-	प्रतीकात्मक और धार्मिक विषयों का चित्रण।
मनोहर एवं गोवर्धन	-	दरबारी दृश्यों और शिकार के दृश्यों के विशेषज्ञ।

3.3 यूरोपीय प्रभाव का प्रवेश

जहाँगीर के काल में पुर्तगाली व्यापारियों के माध्यम से यूरोपीय चित्रकला का प्रभाव मुगलों पर पड़ा।

- **विशेषताएँ:** चित्रों में 'छवि' के पीछे **प्रभामंडल** (Halo/Divine Light) बनाना, 'परिपेक्ष्य' (Perspective) का प्रयोग और दूर की वस्तुओं को छोटा दिखाना।

wincompete

भाग 4: शाहजहाँ और औरंगजेब - पतन के बीज

4.1 शाहजहाँ: अलंकरण और औपचारिकता

शाहजहाँ के काल में चित्रकला में 'आत्मा' के स्थान पर 'तड़क-भड़क' ने ले ली।

- **विशेषता:** चित्रों में सोने और चाँदी के रंगों का अत्यधिक प्रयोग होने लगा। चित्रों के हाशिए (Borders) अधिक अलंकृत होने लगे।
- **प्रमुख चित्रकार:** अनूप चित्र, फकीरुल्लाह खान और चिंतामणि।

4.2 औरंगजेब: कला का निष्कासन

औरंगजेब ने धार्मिक कट्टरता के कारण चित्रकला को 'इस्लाम विरोधी' मानकर राजकीय संरक्षण बंद कर दिया।

- **परिणाम:** मुगल कलाकार रोजगार की तलाश में राजस्थान, पहाड़ी क्षेत्रों (हिमाचल) और दक्कन की ओर चले गए। इसी पलायन से **राजस्थानी (मेवाड़, किशनगढ़ आदि) और पहाड़ी (कांगड़ा, बसोहली)** शैलियों का विकास हुआ।

भाग 5:

RPSC परीक्षाओं के लिए इन शब्दों का ज्ञान अनिवार्य है:

- **मुरक्का (Muraqqa):** चित्रों का एलबम। जहाँगीर के समय मुरक्का बनाने की परंपरा बहुत लोकप्रिय हुई।
- **स्याह कलम (Siyah Qalam):** केवल काले रंग (Inking) से बनाए जाने वाले रेखाचित्र।
- **नीम कलम (Nim Qalam):** हल्के रंगों का प्रयोग कर बनाया गया चित्र।
- **वस्ली (Wasli):** कागज की दो-तीन परतों को जोड़कर बनाया गया मोटा कागज जिस पर चित्रकारी की जाती थी।
- **मीरात-उल-कुद्स:** ईसा मसीह के जीवन पर आधारित चित्रित ग्रंथ जो अकबर के आदेश पर बनाया गया।

भाग 6:

मुगल चित्रकला का राजस्थान पर प्रभाव

मुगल चित्रकला और राजस्थानी चित्रकला के बीच गहरा संबंध रहा है। आमेर और बीकानेर की शैलियों पर मुगल प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। **किशनगढ़ शैली** (बणी-ठणी) पर जहाँगीर कालीन सौंदर्यबोध और यूरोपीय प्रभामंडल का प्रभाव देखा जा सकता है।

- **प्रश्न:** किस शासक ने चित्रकला के लिए पृथक विभाग 'तस्वीर खाना' बनाया? (उत्तर: अकबर)
- **प्रश्न:** 'नादिर-उल-असर' किसकी उपाधि थी? (उत्तर: उस्ताद मंसूर)
- **प्रश्न:** 'बणी-ठणी' को भारत की मोनालिसा किसने कहा? (उत्तर: एरिक डिकिंसन - यह मुगल-राजपूत समन्वय का उदाहरण है)।

मुगल चित्रकला केवल राजाओं के विलास का साधन नहीं थी, बल्कि यह मध्यकालीन भारत के जीवंत इतिहास का 'विजुअल डॉक्यूमेंटेशन' (Visual Documentation) था। हम्जनामा की जटिलता से लेकर मंसूर के दुर्लभ पक्षियों के चित्रण तक, मुगलों ने प्रकृति और मानव के सूक्ष्म संबंधों को रंगों में पिरोया। जहाँगीर के बाद यद्यपि इसकी तकनीकी बारीकी बनी रही, लेकिन औरंगजेब के काल में इसका बिखरना ही वास्तव में भारतीय उपमहाद्वीप में क्षेत्रीय चित्रकला शैलियों के उत्थान का कारण बना।

wincompete

Chapter 17: The Evolution of Mughal Painting'

The Foundation: Humayun & Akbar's Atelier

Hamzanama: The First Masterpiece

Jahangir: The Golden Age of Portraits

Ustad Mansur: Nature & Realism

Source: Based on Authentic Historical Records & Archaeological Sketches

अध्याय 18: मध्यकालीन संगीत - समन्वय, नवाचार और शास्त्रीय उत्कर्ष

प्रस्तावना: भारतीय संगीत का मध्यकालीन रूपांतरण

मध्यकालीन भारतीय इतिहास केवल राजनीतिक उथल-पुथल का काल नहीं था, बल्कि यह भारतीय संगीत के इतिहास का 'स्वर्ण युग' भी था। इस काल में भारतीय संगीत ने अपनी प्राचीन शास्त्रीयता (Ancient Classicism) को बनाए रखते हुए फारसी, अरबी और मध्य एशियाई सुरों के साथ एक अभूतपूर्व समन्वय किया। इसी काल में उत्तर भारत में **'हिंदुस्तानी संगीत'** और दक्षिण भारत में **'कर्नाटक संगीत'** के बीच स्पष्ट विभाजन रेखा खिंची। इतिहासकारों के अनुसार, मध्यकालीन संगीत का विकास सूफी संतों की साधना, दिल्ली के सुल्तानों के संरक्षण और मुगलों के परिष्कृत सौंदर्यबोध का परिणाम था।

भाग 1: दिल्ली सल्तनत और संगीत का समन्वय - अमीर खुसरो का युग

प्रारंभिक तुर्क शासक संगीत के प्रति बहुत उदार नहीं थे, लेकिन बलबन और विशेषकर खिलजी शासकों के समय संगीत को राजकीय सम्मान मिला। इस काल के सबसे दैदीप्यमान नक्षत्र **अमीर खुसरो** थे।

1.1 अमीर खुसरो (तूतिए हिन्द): संगीत के महान समन्वयवादी

अमीर खुसरो (1253-1325) केवल एक कवि और इतिहासकार नहीं थे, बल्कि वे एक क्रांतिकारी संगीतज्ञ थे जिन्होंने भारतीय और फारसी संगीत का मेल कराया।

- **सितार और तबला का आविष्कार:** लोक मान्यताओं और अकादमिक साक्ष्यों के अनुसार, खुसरो ने वीणा के विभिन्न रूपों को संशोधित कर **'सितार'** (सेह-तार: तीन तार वाला) बनाया। इसी प्रकार, उन्होंने प्राचीन मृदंग या पखावज को दो भागों में विभाजित कर **'तबला'** का स्वरूप दिया।
- **नई गायन शैलियों का विकास:** * **कव्वाली (Qawwali):** खुसरो ने सूफी 'समा' को संगीतबद्ध कर कव्वाली गायन शुरू किया। उन्होंने इसे 'कौल' और 'तल्ताना' जैसी विधाओं से जोड़ा।
    - **ख्याल (Khayal):** यद्यपि ख्याल का पूर्ण विकास बाद में हुआ, लेकिन इसके बीज खुसरो ने ही बोए थे।
    - **तराना (Tarana):** निरर्थक शब्दों (जैसे ता, न, देरे-ना) का प्रयोग कर लयबद्ध गायन की यह शैली खुसरो की अनूठी देन है।
- **नए रागों का सृजन:** खुसरो ने भारतीय रागों में फारसी धुनों (पर्दा) का मिश्रण कर नए राग बनाए, जैसे— **ऐमन, घोरा, साज़गिरी, मुज़ीर, और सनम।**

1.2 सूफी संगीत और 'समा' (Sufi Music & Sama)

चिश्ती सिलसिले के सूफी संतों, विशेषकर **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती** और **निजामुद्दीन औलिया** ने संगीत को ईश्वर (अल्लाह) तक पहुँचने का माध्यम माना।

- **समा की महत्ता:** सूफियों की संगीत गोष्ठियों को 'समा' कहा जाता था। इससे संगीत को धार्मिक मान्यता मिली और यह आम जनता के बीच लोकप्रिय हुआ। अमीर खुसरो निजामुद्दीन औलिया के ही प्रधान शिष्य थे।

भाग 2: क्षेत्रीय राज्यों में संगीत का संरक्षण - ग्वालियर और जौनपुर

15वीं शताब्दी में जब दिल्ली सल्तनत कमजोर हुई, तो संगीत का केंद्र क्षेत्रीय राज्यों की ओर स्थानांतरित हो गया।

2.1 ग्वालियर: राजा मानसिंह तोमर और 'मानकौतूहल'

RPSC परीक्षाओं के लिए ग्वालियर घराना और मानसिंह तोमर का योगदान 'कोर' विषय है।

- **ध्रुपद गायकी का उत्थान:** राजा मानसिंह तोमर (1486-1516) को **'ध्रुपद'** गायन शैली को परिष्कृत और प्रतिष्ठित करने का श्रेय दिया जाता है।

- **मानकौतूहल (Manakutuhala):** मानसिंह तोमर ने अपने समय के महान संगीतज्ञों की एक सभा बुलाई और संगीत के नियमों को लिपिबद्ध करवाया। इस ग्रंथ को 'मानकौतूहल' कहा जाता है। बाद में फकीरुल्लाह ने इसका फारसी अनुवाद **'राग दर्पण'** के नाम से किया।
- **बैजू बावरा:** तानसेन के समकालीन और महान संगीतज्ञ बैजू बावरा को भी ग्वालियर का ही संरक्षण प्राप्त था।

2.2 जौनपुर: सुल्तान हुसैन शाह शर्की

जौनपुर के शर्की सुल्तान संगीत के महान पारखी थे। सुल्तान हुसैन शाह शर्की ने **'ख्याल'** गायकी को लोकप्रिय बनाया और कई नए रागों (जैसे जौनपुरी तोड़ी) की रचना की।

भाग 3: मुगल काल - संगीत का चरमोत्कर्ष (1556–1658)

मुगल सम्राटों ने संगीत को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि एक 'शास्त्रीय साधना' के रूप में अपनाया।

3.1 अकबर का युग: तानसेन और नवतरंग

अकबर संगीत का महान संरक्षक था। अबुल फजल ने 'आइने-अकबरी' में 36 प्रमुख संगीतज्ञों के नाम दिए हैं।

- **मियाँ तानसेन (रामरतन पांडेय):** तानसेन अकबर के 'नवरत्नों' में से एक थे। वे स्वामी हरिदास के शिष्य थे और रीवा के राजा रामचंद्र के दरबार से अकबर के पास आए थे।
- **तानसेन की अमर रचनाएँ:** * **राग दरबारी कान्हड़ा** (अकबर के दरबार हेतु विशेष रूप से रचित)।
    - **मियाँ की तोड़ी, मियाँ की मल्हार, मियाँ की सारंग।**
- **उपाधि:** अकबर ने उन्हें **'कण्ठाभरणवाणीविलास'** की उपाधि दी थी। तानसेन ने प्राचीन 'ध्रुपद' शैली को अपनी गायकी से जीवंत बनाए रखा।

3.2 स्वामी हरिदास और भक्ति संगीत

वृंदावन के स्वामी हरिदास तानसेन के गुरु थे। वे भगवान कृष्ण की भक्ति में गाते थे और उन्होंने कभी राजदरबार में गाना स्वीकार नहीं किया। उन्हीं की परंपरा से 'हवेली संगीत' का विकास हुआ।

3.3 जहाँगीर और शाहजहाँ का काल

- **जहाँगीर:** वह स्वयं संगीत का प्रेमी था। उसके दरबार में **ग़ज़ल** गायकी को विशेष बढ़ावा मिला। 'चतर खान' उसके समय का प्रसिद्ध संगीतज्ञ था।
- **शाहजहाँ:** वह स्वयं एक अच्छा गायक था। उसके दरबार में **लाल खान** (तानसेन के दामाद) को 'गुण समन्दर' की उपाधि दी गई थी। इस काल में संगीत में भव्यता और सूक्ष्मता बढ़ी।

भाग 4: औरंगजेब और संगीत का कथित पतन - एक रक्षात्मक विश्लेषण

इतिहास की सामान्य पुस्तकों में लिखा जाता है कि औरंगजेब ने संगीत पर प्रतिबंध लगा दिया था, लेकिन RPSC के 'रक्षात्मक' (Defensible) विश्लेषण हेतु निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान देना आवश्यक है:

- **संगीत का दफन:** जब औरंगजेब ने दरबार से संगीतज्ञों को हटाया, तो उन्होंने एक 'संगीत की अर्थी' निकाली। औरंगजेब ने कहा— *"इसे इतना गहरा दफनाना कि इसकी आवाज दोबारा सुनाई न दे।"*
- **सच्चाई:** यह प्रतिबंध केवल **'सार्वजनिक और दरबारी'** संगीत पर था। औरंगजेब स्वयं एक कुशल **'वीणा वादक'** था। रोचक तथ्य यह है कि **मुगल काल में संगीत पर सबसे अधिक पुस्तकें औरंगजेब के शासनकाल में ही लिखी गईं।**
- **फकीरुल्लाह का 'राग दर्पण'** इसी काल की महान उपलब्धि है। औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुहम्मद शाह 'रंगीला' के समय संगीत पुनः अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा (सदारंग और अदारंग के माध्यम से)।

भाग 5: मध्यकालीन संगीत की प्रमुख विधाएं और शब्दावली

शब्दावली	विवरण	ऐतिहासिक संदर्भ
ध्रुपद	गंभीर और भक्तिपरक गायन शैली	मानसिंह तोमर और तानसेन
ख्याल	कल्पनाशील और चपल गायन शैली	खुसरो (बीज) और हुसैन शाह शर्की
ठुमरी	श्रृंगार रस प्रधान शैली	बाद के मुगल काल में विकसित
तप्पा	पंजाब के ऊँट सवारों की लोक शैली का शास्त्रीय रूप	मुगल काल
गुण समन्दर	शाहजहाँ द्वारा संगीतज्ञों को दी जाने वाली उपाधि	राजकीय सम्मान

भाग 6:

मध्यकालीन संगीत का राजस्थान की लोक कलाओं और दरबारी संगीत पर गहरा प्रभाव पड़ा:

1. **हवेली संगीत:** नाथद्वारा (राजसमंद) में पुष्टिमार्गीय संप्रदाय के मंदिरों में विकसित संगीत शैली जो स्वामी हरिदास की परंपरा से जुड़ी है।
2. **जयपुर घराना:** मुगलों के संरक्षण में रहने वाले कलाकारों ने ही आगे चलकर जयपुर घराने (अल्लादिया खान) की नींव रखी।
3. **प्रताप सिंह (जयपुर):** उन्होंने 'राधा गोविंद संगीत सार' जैसा महान ग्रंथ लिखवाया, जो मध्यकालीन और आधुनिक संगीत के बीच की कड़ी है।

मध्यकालीन भारत का संगीत 'विभाजन' का नहीं बल्कि 'विलेयता' (Fusion) का इतिहास है। अमीर खुसरो द्वारा शुरू किया गया हिंदुस्तानी संगीत का सफर तानसेन के माध्यम से अपनी शास्त्रीय पराकाष्ठा पर पहुँचा। संगीत ही वह माध्यम था जिसने मंदिर, मस्जिद और राजदरबार के बीच की दीवारों को गिरा दिया। **सतीश चंद्र** के अनुसार, "भारतीय संगीत की मध्यकालीन उपलब्धियां ही वह आधार हैं जिन्होंने इसे आज भी दुनिया की सबसे जटिल और समृद्ध संगीत प्रणाली बनाए रखा है।"

wincompete

अध्याय 19: क्षेत्रीय कला शैलियाँ - राजस्थानी और दक्कनी कला का उत्कर्ष

प्रस्तावना: क्षेत्रीय शैलियों का उद्भव एवं महत्व

मध्यकालीन भारतीय कला का इतिहास केवल दिल्ली और आगरा के दरबारों तक सीमित नहीं है। 16वीं और 17वीं शताब्दी में जब मुगल साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर था, तब समानांतर रूप से राजस्थान और दक्कन (दक्षिण भारत) में कला की ऐसी स्वतंत्र और मौलिक शैलियाँ विकसित हो रही थीं, जिन्होंने भारतीय कला को समृद्ध किया। जहाँ 'राजस्थानी कला' में भक्ति और शौर्य का समन्वय था, वहीं 'दक्कनी कला' में फारसी सूक्ष्मता और दक्कन की रहस्यमयी रंग-योजना का प्रभाव था। इन क्षेत्रीय शैलियों ने न केवल मुगलों से सीखा, बल्कि समय के साथ मुगल कला को भी प्रभावित किया।

भाग 1: राजस्थानी स्थापत्य - दुर्ग, प्रासाद और मंदिरों का समन्वय

राजस्थानी वास्तुकला मध्यकालीन भारत में 'सांस्कृतिक प्रतिरोध' और 'समन्वय' का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है।

1.1 दुर्ग स्थापत्य (Fort Architecture)

राजस्थान के किलों की वास्तुकला सामरिक आवश्यकता और कलात्मक अभिरुचि का संगम है।

- **प्रमुख तत्व:** बुर्ज, प्राचीर, कंगूरे और गुप्त प्रवेश द्वार।
- **कुम्भलगढ़ और चित्तौड़गढ़:** महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित किलों में प्राचीन भारतीय 'शतीरी' (Trabeate) पद्धति का प्रयोग हुआ है। विजय स्तंभ भारतीय मूर्तिकला का 'शब्दकोश' माना जाता है।
- **आमेर और जयगढ़:** इन किलों में मुगल मेहराबों और राजपूत छतरियों का अद्भुत मेल मिलता है।

1.2 प्रासाद स्थापत्य (Palatial Architecture)

राजपूत राजाओं के महल अपनी विलासिता और सूक्ष्म नक्काशी हेतु प्रसिद्ध थे।

- **झरोखा और छतरी:** महलों की ऊपरी मंजिलों पर बने झरोखे और छतरियाँ राजस्थानी स्थापत्य की पहचान हैं। अकबर ने इन तत्वों को अपने फतेहपुर सीकरी के महलों में अपनाया।
- **बारीक जाली कार्य:** पत्थर को काटकर बनाई गई महीन जालियाँ (जैसे जैसलमेर के पटवों की हवेली) प्रकाश और वायु के प्रबंधन हेतु तकनीकी रूप से श्रेष्ठ थीं।

1.3 मंदिर स्थापत्य: पुनर्जागरण काल

मुगल काल के दौरान राजस्थान में मंदिरों का निर्माण 'महा-मारू' और 'मारू-गुर्जर' शैलियों के पुनरुद्धार के रूप में हुआ।

- **जगत शिरोमणि मंदिर (आमेर):** यह मंदिर वैष्णव स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण है।
- **श्रीनाथजी मंदिर (नाथद्वारा):** यह 'हवेली स्थापत्य' का एक नया स्वरूप था, जहाँ सुरक्षा और भक्ति का मेल था।

भाग 2: राजस्थानी चित्रकला - भक्ति और श्रृंगार का संगम

राजस्थानी चित्रकला (Rajput School of Painting) मुगल शैली की समकालीन थी, लेकिन इसका मूल आधार भारतीय जनजीवन और धर्म (राधा-कृष्ण, लोक गाथाएँ) था।

2.1 विभिन्न स्कूल और शैलियाँ

RPSC परीक्षाओं में यहाँ से 'विशेषताओं' पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं:

1. **मेवाड़ शैली:** यह सबसे प्राचीन और मौलिक शैली है। इसमें लाल और पीले रंगों की प्रधानता और कलीला-दमना (पंचतंत्र) जैसे विषयों का चित्रण मिलता है।

2. **मारवाड़ (जोधपुर/बीकानेर) शैली:** इसमें रेत के टीलों, ऊँटों और झाड़ियों का अंकन मिलता है। बीकानेर शैली पर मुगल प्रभाव सर्वाधिक था, जहाँ चित्रकार अपना नाम और तिथि अंकित करते थे।
3. **किशनगढ़ शैली:** इसका चरमोत्कर्ष राजा सावंत सिंह (नागरीदास) के समय हुआ। **'बणी-ठणी'** के चित्र में नारी सौंदर्य का जो चित्रण निहाल चंद ने किया, वह विश्व चित्रकला में अद्वितीय है।
4. **बूंदी-कोटा शैली:** इसे 'पशु-पक्षियों की चित्रशैली' कहा जाता है। सघन वन और शिकार के दृश्यों का सजीव चित्रण यहाँ की विशेषता है।

2.2 मुगल-राजपूत कलात्मक समन्वय

अकबर और जहाँगीर के काल में राजपूत राजा मुगल दरबार के अभिन्न अंग बन गए थे। इससे चित्रकला में 'समन्वय' आया:

- **तकनीक:** राजपूतों ने मुगलों से 'परिपेक्ष्य' (Perspective) और 'छाया-प्रकाश' (Shading) की तकनीक सीखी।
- **विषय:** मुगलों ने राजपूतों से 'प्रकृति चित्रण' और 'धार्मिक आख्यानों' के प्रति संवेदनशीलता ग्रहण की।

भाग 3: दक्कनी कला शैली - बीजापुर, गोलकुंडा और अहमदनगर

दक्कन की कला उत्तर भारत की तुलना में अधिक रहस्यमयी, स्वप्निल और गहरे रंगों वाली थी।

3.1 दक्कनी वास्तुकला: विशालता और भव्यता

दक्कन के सुल्तानों ने इंडो-इस्लामिक वास्तुकला में 'विशाल गुंबदों' का एक नया रिकॉर्ड बनाया।

- **गोल गुंबज (बीजापुर):** मोहम्मद आदिल शाह का मकबरा। इसका गुंबद विश्व के सबसे बड़े गुंबदों में से एक है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता **'फुसफुसाने वाला गैलरी' (Whispering Gallery)** है, जहाँ एक कोने में बोली गई बात दूसरे कोने में स्पष्ट सुनाई देती है।
- **चारमीनार (गोलकुंडा/हैदराबाद):** कुली कुतुब शाह द्वारा निर्मित। यह दक्कनी और ईरानी वास्तुकला का चरम है। इसमें चार मीनारें और विशाल मेहराबें हैं।

3.2 दक्कनी चित्रकला (Deccani School of Painting)

दक्कनी चित्रकला मुगलों से भिन्न थी। इसमें 'सुनहरे रंगों' का अत्यधिक प्रयोग और 'लंबे चेहरों' का अंकन मिलता है।

- **इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय (बीजापुर):** इन्हें 'अब्ला बाली' (निर्धनों का मित्र) कहा जाता था। वे संगीत और कला के महान संरक्षक थे। उन्होंने **'किताब-ए-नवरस'** की रचना की।
- **गोलकुंडा शैली:** यहाँ के चित्रों में विलासिता, उद्यान और स्त्रियों के आभूषणों का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। रंगों का चुनाव (बैंगनी, गहरा नीला) इसे मुगलों से अलग करता है।

भाग 4: मुगल-दक्कन कलात्मक आदान-प्रदान

औरंगजेब की दक्कन विजय के बाद दक्कनी कला का मुगल शैली के साथ विलय हो गया।

- **प्रभाव:** मुगलों ने दक्कन से 'सुनहरे रंग' की तकनीक और 'प्रतीकात्मकता' सीखी।
- **प्रसार:** दक्कन के कलाकारों ने उत्तर भारत में जाकर 'मराठा चित्रकला' और 'हैदराबादी शैली' की नींव रखी।

भाग 5:

शब्दावली	विवरण	ऐतिहासिक संदर्भ

wincompete

पिछावाई (Pichwai)	नाथद्वारा शैली में कपड़ों पर किया गया चित्रण	राजस्थानी चित्रकला
मथेरणा कला	बीकानेर में धार्मिक भित्ति चित्रण की परंपरा	जैन चित्रकार
विस्परिंग गैलरी	गोल गुंबज की ध्वनिक विशेषता	दक्कनी स्थापत्य
रागमाला	विभिन्न रागों पर आधारित चित्रों की श्रृंखला	राजस्थानी एवं मुगल समन्वय
अष्टदिग्गज	कृष्णदेव राय के दरबारी कवि (विजयनगर संदर्भ से प्रभावित)	क्षेत्रीय गौरव

भाग 6:

क्षेत्रीय कला शैलियों का विकास यह सिद्ध करता है कि मध्यकालीन भारत में कला केवल राजदरबारों की बपौती नहीं थी, बल्कि वह स्थानीय मिट्टी और भावनाओं से उपजी थी। राजस्थानी किलों की मजबूती और दक्कनी गुंबदों की विशालता भारतीय स्थापत्य के दो अलग-अलग ध्रुव हैं जो 'विविधता में एकता' को दर्शाते हैं। **सतीश चंद्र** के अनुसार, "क्षेत्रीय शैलियों ने ही भारतीय कला को उस समय जीवित रखा जब औरंगजेब के काल में केंद्रीय संरक्षण समाप्त हो गया था।" राजस्थानी चित्रकला ने जहाँ भारतीय आत्मा को सुरक्षित रखा, वहीं दक्कनी वास्तुकला ने इंजीनियरिंग के नए मानक स्थापित किए।

---

wincompete

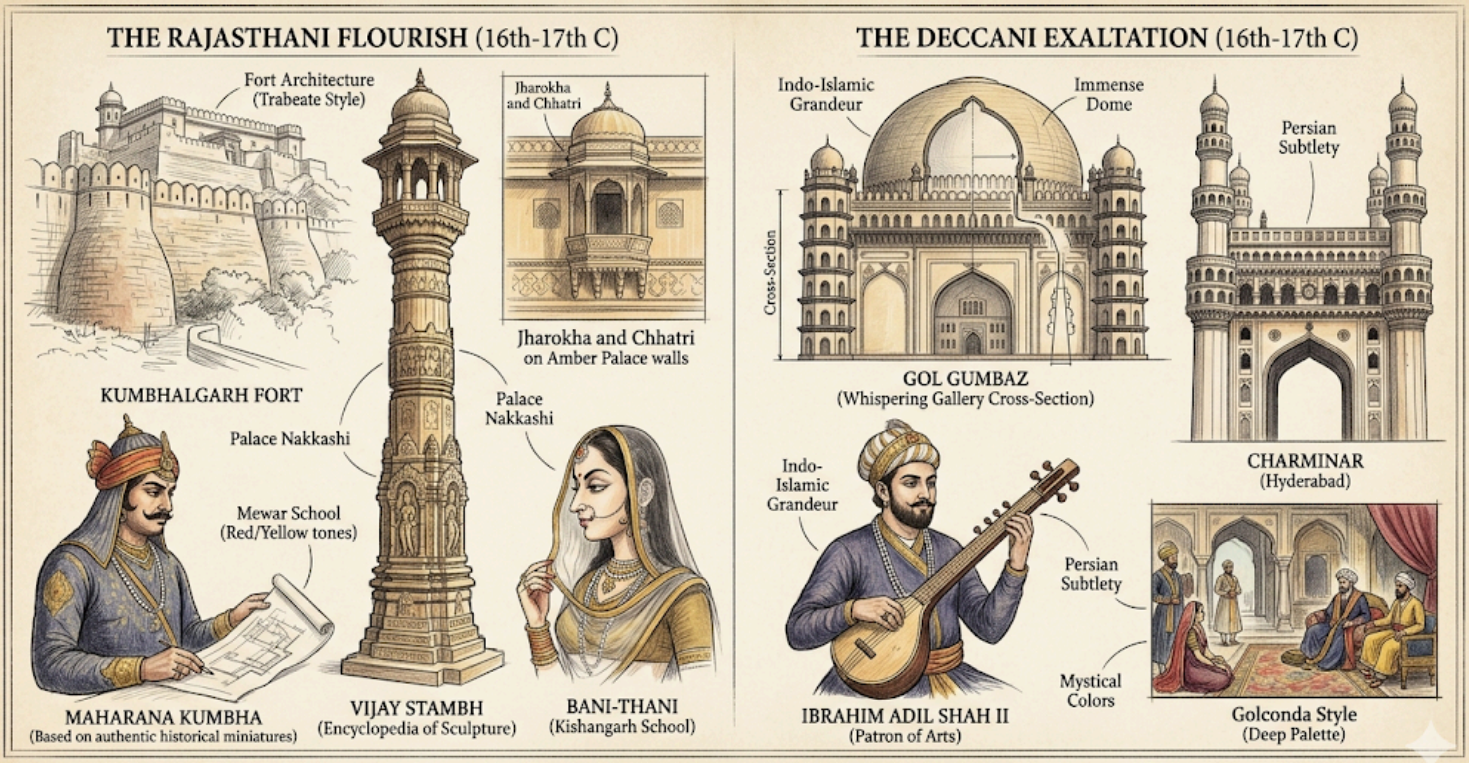

Plate 19: *Synthesis of Bhakti, Valor, and Mystical Aesthetics*

wincompete

अध्याय 20: मुगल उद्यानों और सार्वजनिक निर्माण की स्थापत्य विशेषताएँ

प्रस्तावना: मुगलों का भू-दृश्य स्थापत्य (Landscape Architecture)

मुगल स्थापत्य कला केवल पत्थरों की जड़ाई और ऊँचे गुंबदों का नाम नहीं है; यह प्रकृति को सुव्यवस्थित करने और मानव बस्तियों को सुविधा प्रदान करने का एक वैज्ञानिक प्रयास था। बाबर से लेकर शाहजहाँ तक, मुगलों ने भारत के शुष्क और अर्ध-शुष्क परिदृश्य को 'स्वर्ग के बगीचों' (Hasht-Bihisht) में बदलने की कला पेश की। साथ ही, साम्राज्य के व्यापारिक और प्रशासनिक नेटवर्क को सुदृढ़ करने के लिए सड़कों, सरायों, पुलों और नहरों का जो जाल बिछाया गया, वह मध्यकालीन भारत के 'इंजीनियरिंग कौशल' का उत्कृष्ट साक्ष्य है। इतिहासकारों के अनुसार, मुगल उद्यानों ने आधुनिक 'अर्बन लैंडस्केपिंग' की आधारशिला रखी।

भाग 1: मुगल उद्यान स्थापत्य - 'चारबाग' पद्धति का विज्ञान

मुगल उद्यान केवल सौंदर्य के लिए नहीं थे, बल्कि वे ज्यामितीय संतुलन और जल प्रबंधन के उत्कृष्ट उदाहरण थे।

1.1 चारबाग (Charbagh) की अवधारणा

मुगलों ने 'चारबाग' शैली को भारत में लोकप्रिय बनाया। इस शैली का मूल आधार कुरान में वर्णित 'जन्नत के बगीचे' हैं।

- **संरचना:** एक विशाल वर्गाकार क्षेत्र को नहरों या रास्तों द्वारा चार समान भागों में विभाजित किया जाता था। इन चार भागों को पुनः उप-भागों में बाँटा जा सकता था।
- **जल प्रवाह:** उद्यानों में जल का निरंतर प्रवाह सुनिश्चित किया जाता था। पानी केवल सिंचाई के लिए नहीं, बल्कि 'ध्वनि' (कल-कल का स्वर) और 'शीतलता' (Cooling effect) के लिए भी प्रवाहित होता था।
- **प्रतीकात्मकता:** बहता पानी 'जीवन' का और चार बाग 'स्वर्ग की चार नदियों' का प्रतिनिधित्व करते थे।

1.2 उद्यानों का विकासक्रम (बाबर से शाहजहाँ)

1. **बाबर (आराम बाग, आगरा):** बाबर ने भारत की भीषण गर्मी से बचने के लिए आगरा में 'आराम बाग' (राम बाग) बनवाया। यह भारत का पहला सुव्यवस्थित मुगल उद्यान था।
2. **अकबर (हुमायूँ का मकबरा उद्यान):** यहाँ पहली बार उद्यान और मकबरे का समन्वय देखा गया। यह 'गार्डन-टॉम्ब' (Garden-Tomb) का पहला सफल प्रयोग था।
3. **जहाँगीर (कश्मीर के उद्यान):** जहाँगीर और नूरजहाँ ने कश्मीर में **'शालीमार बाग'** और **'निशांत बाग'** का निर्माण करवाया। ये उद्यान 'छतनुमा' (Terraced) शैली में बने थे, जहाँ पहाड़ी ढलानों का उपयोग जल प्रपातों (Waterfalls) के लिए किया गया।
4. **शाहजहाँ (चश्म-ए-शाही):** शाहजहाँ ने उद्यानों में 'पिएत्रा-ड्यूरा' और 'संगमरमर' की बारादरियों का समावेश कर उन्हें विलासिता के शिखर पर पहुँचाया।

भाग 2: सार्वजनिक निर्माण - साम्राज्य की धमनियां

साम्राज्य के आर्थिक विकास और सैन्य गतिशीलता के लिए मुगलों ने सार्वजनिक बुनियादी ढांचे (Infrastructure) पर विशेष ध्यान दिया।

2.1 सराय स्थापत्य (Sarai Architecture)

सराय मध्यकालीन भारत के 'होटल' और 'सुरक्षा चौकी' का मिश्रित रूप थीं।

- **उद्देश्य:** व्यापारियों, यात्रियों और सरकारी दूतों को ठहरने की सुरक्षित जगह प्रदान करना।
- **संरचना:** सराय एक विशाल चतुर्भुज अहाता होती थी जिसके चारों ओर कमरे बने होते थे। बीच में एक कुआँ, मस्जिद और कभी-कभी एक हम्माम (स्नानघर) होता था।
- **प्रशासनिक महत्व:** प्रत्येक सराय में एक 'शिकदार' (अधिकारी) और 'भाटियारा' (रसोइया) नियुक्त होता था। शेरशाह सूरी द्वारा शुरू की गई इस परंपरा को मुगलों ने और अधिक सुदृढ़ किया।

wincompete

2.2 पुल और जल सेतु (Bridges and Aqueducts)

मुगल इंजीनियरों ने नदियों पर स्थायी पुल बनाने की तकनीक में महारत हासिल की थी।

- **शाही पुल (जौनपुर):** मुनीम खान द्वारा अकबर के काल में निर्मित यह पुल आज भी मुगल इंजीनियरिंग का उत्कृष्ट नमूना है। इसकी ढलानों पर 'छतरियाँ' बनी हुई हैं जहाँ लोग विश्राम कर सकते थे।
- **तकनीक:** पुलों के स्तंभों (Piers) को नाव के आकार का बनाया जाता था ताकि पानी के बहाव का दबाव कम हो सके।

भाग 3: जल प्रबंधन और नहर तंत्र (Hydraulic Engineering)

मुगल काल में सिंचाई और शहरों में जल आपूर्ति के लिए व्यापक इंजीनियरिंग कार्य किए गए।

3.1 नहर-ए-बहश्त (Canal of Paradise)

शाहजहाँ ने फिरोज तुगलक की पुरानी नहरों की मरम्मत करवाई और दिल्ली के लाल किले में जल आपूर्ति हेतु **'नहर-ए-बहश्त'** का निर्माण करवाया।

- **नवाचार:** यमुना नदी से पानी को कई मील दूर तक ढलान वाली नालियों के माध्यम से लाया जाता था। किले के भीतर यह पानी संगमरमर की नालियों में बहता था, जिसे **'नहर-ए-सादत'** कहा जाता था।

3.2 रहट और साकिया (The Persian Wheel)

कुओं से पानी निकालने के लिए मुगलों ने **'रहट'** (Persian Wheel) तकनीक का व्यापक प्रचार किया। गियर और गिट्टियों की इस प्रणाली ने कृषि उत्पादन में क्रांतिकारी वृद्धि की और उद्यानों के ऊँचे फव्वारों तक पानी पहुँचाना संभव बनाया।

भाग 4: हम्माम और जन-सुविधाएँ

मुगलों ने 'हम्माम' (शाही स्नानघर) की परंपरा को भारत में स्थापित किया।

- **विशेषता:** इन हम्मामों में गर्म और ठंडे पानी की आपूर्ति हेतु ताँबे के पाइपों का जाल बिछा होता था। इनमें भाप स्नान (Steam Bath) की भी व्यवस्था थी। फतेहपुर सीकरी के हम्माम अपनी वास्तुकला और इंजीनियरिंग के लिए प्रसिद्ध हैं।

भाग 5:

शब्दावली	विवरण	ऐतिहासिक महत्व
बारादरी	12 द्वारों वाली उद्यान इमारत	विश्राम और सांस्कृतिक केंद्र
चबूतर-ए-नसिरी	सार्वजनिक घोषणाओं हेतु बना ऊँचा मंच	प्रशासनिक संचार

wincompete

कोस मीनार	सड़क के किनारे मील के पत्थर	दूरी मापन की शाही इकाई
आब-ए-रवां	बहता हुआ शुद्ध जल	उद्यान स्थापत्य की आत्मा
छतरी	सजावटी स्तंभों वाली गुंबददार संरचना	इंडो-इस्लामिक समन्वय

भाग 6:

मुगल उद्यानों और सार्वजनिक निर्माणों का विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि मध्यकालीन भारत का शासन केवल 'युद्ध और विजय' पर नहीं, बल्कि 'संसाधन प्रबंधन' पर आधारित था। मुगलों ने जल को एक 'वास्तु तत्व' (Architectural element) के रूप में प्रयोग किया। **पर्सी ब्राउन** के अनुसार, "मुगलों ने प्रकृति को अपना गुलाम नहीं बनाया, बल्कि उसे वास्तुकला के माध्यम से एक नया अनुशासन और सौंदर्य दिया।" उनकी सराय और सड़कें आज भी आधुनिक परिवहन नेटवर्क के ऐतिहासिक पूर्वज हैं।

---

wincompete

http://www.wincompete.com

अध्याय 21: भक्ति आंदोलन - वैचारिक पृष्ठभूमि, दार्शनिक आधार एवं निर्गुण-सगुण समन्वय

मध्यकालीन आध्यात्मिक क्रांति

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में 'भक्ति आंदोलन' केवल एक धार्मिक सुधार नहीं था, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक क्रांति थी जिसने समाज के सबसे निचले तबके को ईश्वर से सीधे संबंध जोड़ने का अधिकार दिया। इसकी जड़ें दक्षिण भारत के 'अल्वार' और 'नयनार' संतों की परंपरा में थीं, जिसे बाद में उत्तर भारत के निर्गुण और सगुण संतों ने एक व्यापक जन-आंदोलन का रूप दिया। इतिहासकारों के अनुसार, इस आंदोलन ने 'बहुदेववाद' और 'कर्मकांड' के स्थान पर **'एकेश्वरवाद'** और **'निस्वार्थ प्रेम'** को प्रतिस्थापित किया।

भाग 1: भक्ति आंदोलन की उत्पत्ति और दक्षिण का आधार

भक्ति का प्रादुर्भाव दक्षिण भारत में हुआ। एक प्रसिद्ध उक्ति है— *"भक्ति द्राविड़ ऊपजी, लाये रामानन्द।"*

1.1 अल्वार और नयनार संत

सातवीं से नवीं शताब्दी के मध्य दक्षिण भारत में दो प्रकार के भक्त संतों ने आंदोलन का नेतृत्व किया:

- **अल्वार (Alvars):** ये विष्णु के भक्त थे। इनकी संख्या **12** थी। इनमें एकमात्र महिला संत **'अंडाल'** (दक्षिण की मीरा) थीं। इनका मुख्य काव्य संकलन **'नलयिरा दिव्य प्रबंधम'** है।
- **नयनार (Nayanars):** ये शिव के भक्त थे। इनकी संख्या **63** थी। अप्पार, सम्बन्दर और सुन्दरार इनके प्रमुख नाम हैं। इनका काव्य संकलन **'तेवरम'** और **'तिरुवाचकम'** कहलाता है।

भाग 2: दार्शनिक आधार - भक्ति के प्रमुख मत (Schools of Philosophy)

भक्ति आंदोलन को बौद्धिक और दार्शनिक शक्ति दक्षिण के आचार्यों ने प्रदान की। RPSC परीक्षाओं में 'मत' और 'आचार्य' के मिलान वाले प्रश्न यहाँ से अनिवार्य रूप से पूछे जाते हैं।

2.1 आदि शंकराचार्य: अद्वैतवाद (8वीं शताब्दी)

- **दर्शन:** 'अद्वैत' (Monism) - ब्रह्म और जीव एक ही हैं। "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या"।
- **योगदान:** उन्होंने ज्ञान मार्ग पर बल दिया और भारत के चार कोनों में **चार पीठों** की स्थापना की:
    1. **शृंगेरी (कर्नाटक):** दक्षिण।
    2. **द्वारका (गुजरात):** पश्चिम।
    3. **पुरी (ओडिशा):** पूर्व।
    4. **ज्योतिर्मठ/बद्रीनाथ (उत्तराखंड):** उत्तर।

2.2 रामानुजाचार्य: विशिष्टाद्वैतवाद (11वीं शताब्दी)

- **दर्शन:** 'विशिष्टाद्वैत' - ईश्वर सगुण है और जीव उसका अंश है।
- **संप्रदाय:** 'श्री संप्रदाय'। उन्होंने शूद्रों को भी भक्ति का अधिकार दिया, जिसे **'प्रपत्ति मार्ग'** (शरणगति) कहा गया।

2.3 माधवाचार्य: द्वैतवाद (13वीं शताब्दी)

- **दर्शन:** 'द्वैत' (Dualism) - आत्मा और परमात्मा दो अलग-अलग सत्ताएँ हैं।
- **संप्रदाय:** 'ब्रह्म संप्रदाय'।

2.4 निम्बार्काचार्य: द्वैताद्वैतवाद

wincompete

- **दर्शन:** 'भेदाभेद' (द्वैताद्वैत) - आत्मा और परमात्मा भिन्न भी हैं और अभिन्न भी।
- **संप्रदाय:** 'सनक संप्रदाय'। इनका राजस्थान के **सलेमाबाद (अजमेर)** से गहरा संबंध है।

भाग 3: भक्ति का उत्तर भारत में आगमन - रामानंद (14वीं-15वीं शताब्दी)

रामानंद को दक्षिण और उत्तर के बीच **'सेतु' (Bridge)** माना जाता है। उन्होंने भक्ति के द्वार सभी जातियों और लिंगों के लिए खोल दिए।

3.1 रामानंद के क्रांतिकारी सुधार

- **भाषा:** उन्होंने संस्कृत के स्थान पर जनता की भाषा **'हिंदी'** में उपदेश दिए।
- **शिष्य परंपरा:** उनके 12 प्रमुख शिष्यों में समाज के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व था:
    - **कबीर** (जुलाहा), **रैदास** (चर्मकार), **धन्ना** (जाट-किसान), **सेना** (नाई), **पीपा** (राजपूत राजा)।
- **विशेष तथ्य:** रामानंद ने राम को सगुण रूप में पूजा, लेकिन उनकी परंपरा से ही निर्गुण धारा (कबीर) का भी विकास हुआ।

भाग 4: निर्गुण भक्ति धारा - संत कबीर (1398–1518)

कबीर भक्ति आंदोलन के सबसे क्रांतिकारी और प्रभावशाली संत थे। वे निर्गुण निराकार ईश्वर (राम) के उपासक थे।

4.1 कबीर का दर्शन और सामाजिक सुधार

कबीर ने धर्म के बाहरी आडंबरों, मूर्ति पूजा, और जाति-पाति पर कड़ा प्रहार किया।

- **एकेश्वरवाद:** उनके लिए राम, अल्लाह, हरि और साहिब एक ही थे।
- **भाषा:** उनकी भाषा को **'सधुक्कड़ी'** या 'पंचमेल खिचड़ी' कहा जाता है।

4.2 साहित्यिक कृतियाँ: 'बीजक' (Bijak)

कबीर की शिक्षाओं का संकलन उनके शिष्य धर्मदास ने 'बीजक' के रूप में किया, जिसके तीन भाग हैं:

1. **साखी (Sakhi):** इसमें दोहे हैं, जो 'साक्षी' या ज्ञान के प्रतीक हैं।
2. **सबाद (Sabad):** इसमें गेय पद (भजन) हैं।
3. **रमैनी (Ramaini):** इसमें चौपाइयां हैं, जो दार्शनिक सिद्धांतों की व्याख्या करती हैं।

भाग 5: निर्गुण और सगुण धारा का तुलनात्मक विश्लेषण

मध्यकालीन भक्ति दो धाराओं में विभाजित थी:

1. **निर्गुण धारा:** ईश्वर निराकार है, उसे ज्ञान और अंतर्मन की साधना से पाया जा सकता है। (कबीर, नानक, दादू दयाल)।
2. **सगुण धारा:** ईश्वर साकार है (राम या कृष्ण), उसकी मूर्ति पूजा और कीर्तन के माध्यम से आराधना की जाती है। (तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, चैतन्य महाप्रभु)।

---

wincompete

भाग 6: तकनीकी शब्दावली

शब्दावली	विवरण	ऐतिहासिक संदर्भ
प्रपत्ति	ईश्वर के प्रति पूर्ण आत्मसमर्पण	रामानुजाचार्य का मार्ग
माया	अज्ञानता या भ्रम जो सत्य को छुपाता है	शंकराचार्य का अद्वैत
अभंग	विट्ठल की स्तुति में गाए जाने वाले मराठी छंद	महाराष्ट्र का भक्ति आंदोलन
पुष्टिमार्ग	ईश्वर की कृपा (अनुग्रह) का मार्ग	वल्लभाचार्य (राजस्थान संदर्भ)
उलटबांसी	कबीर द्वारा प्रयुक्त प्रतीकात्मक और विरोधाभासी शैली	निर्गुण साहित्य

भाग 7: भक्ति आंदोलन का प्रभाव (Critical Analysis)

7.1 भाषाई विकास

भक्ति आंदोलन ने स्थानीय भाषाओं (हिंदी, बंगाली, मराठी, तेलुगु) को समृद्ध किया। तुलसी की 'अवधी' और सूर की 'ब्रज' ने आधुनिक साहित्य की नींव रखी।

7.2 सामाजिक समरसता

जाति व्यवस्था की कठोरता को कम करने में संतों का महान योगदान रहा। मंदिरों के द्वार जो केवल उच्च वर्गों के लिए थे, भक्ति ने ईश्वर के द्वार सबके लिए खोल दिए।

7.3 राजस्थान पर प्रभाव

राजस्थान में **दादू दयाल, मीराबाई, और जाम्भोजी** जैसे संतों ने भक्ति की लौ जलाई। विशेषकर दादू दयाल को 'राजस्थान का कबीर' कहा जाता है। भक्ति आंदोलन मध्यकालीन भारत की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक प्रक्रिया थी। इसने सिद्ध किया कि अध्यात्म किसी विशेष वर्ग की संपत्ति नहीं है। शंकराचार्य के बौद्धिक वेदांत से लेकर कबीर की सहज साखियों तक, इस आंदोलन ने भारतीय संस्कृति को 'समावेशी' बनाया। **सतीश चंद्र** के अनुसार, "भक्ति आंदोलन ने भारतीय समाज को उस मानसिक दासता से मुक्त किया जो बाहरी आक्रमणों और आंतरिक कुरीतियों के कारण पैदा हुई थी।"

अध्याय 22: सगुण भक्ति धारा एवं क्षेत्रीय विस्तार - साकार भक्ति का लोक-दर्शन

प्रस्तावना: सगुण भक्ति का स्वरूप एवं सामाजिक आधार

मध्यकालीन भारत में सगुण भक्ति धारा (Saguna Bhakti Stream) ने ईश्वर को मानवीय गुणों, स्वरूप और लीलाओं से युक्त मानकर 'साकार' रूप में प्रतिष्ठापित किया। जहाँ निर्गुण धारा (कबीर, नानक) ने बुद्धि और तर्क के माध्यम से निराकार ब्रह्म की साधना की, वहीं सगुण धारा ने 'राग' (प्रेम) और 'भाव' (Emotions) को आधार बनाया। इस धारा ने राम और कृष्ण के अवतारों को केंद्र में रखकर न केवल मंदिरों और मूर्तिकला को पुनर्जीवित किया, बल्कि 'रामचरितमानस' और 'सूरसागर' जैसे ग्रंथों के माध्यम से भारतीय समाज को एक नई नैतिकता और जीवन-दृष्टि प्रदान की।

भाग 1: राम भक्ति धारा - गोस्वामी तुलसीदास (1532–1623)

राम भक्ति धारा के सर्वोपरि संत तुलसीदास थे। उन्होंने राम को एक 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के रूप में लोक-मानस में स्थापित किया।

1.1 समन्वयवाद के कवि

तुलसीदास को भारतीय संस्कृति का महान **'समन्वयकारी' (Coordinator)** माना जाता है। उन्होंने शैव और वैष्णव मतों, ज्ञान और भक्ति, तथा राजा और प्रजा के बीच समन्वय स्थापित किया।

- **दार्शनिक आधार:** तुलसीदास का दर्शन 'विशिष्टाद्वैतवाद' (रामानुजाचार्य) से प्रभावित था, लेकिन उन्होंने इसे 'लोक-धर्म' से जोड़ दिया।

1.2 रामचरितमानस: सांस्कृतिक प्रभाव (The Epic of Humanity)

1574 ई. (संवत 1631) में अयोध्या में रचित यह ग्रंथ न केवल धार्मिक पुस्तक है, बल्कि मध्यकालीन भारत का 'सामाजिक संविधान' माना जाता है।

- **भाषा:** उन्होंने संस्कृत की विद्वता को त्यागकर जनभाषा **'अवधी'** को अपनाया ताकि संदेश गाँव-गाँव तक पहुँचे।
- **आदर्श समाज:** 'रामराज्य' की अवधारणा के माध्यम से उन्होंने एक न्यायप्रिय और शोषण-मुक्त समाज का खाका खींचा।
- **परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण कृतियाँ:** रामचरितमानस के अतिरिक्त विनय पत्रिका (ब्रजभाषा), कवितावली, गीतावली और दोहावली उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

भाग 2: कृष्ण भक्ति धारा - सूरदास एवं पुष्टिमार्ग

कृष्ण भक्ति धारा ने ईश्वर को 'सखा', 'बालक' और 'प्रेमी' के रूप में देखा। इस धारा ने 'ब्रजमंडल' को केंद्र बनाकर पूरे भारत को कृष्ण-मय कर दिया।

2.1 वल्लभाचार्य और पुष्टिमार्ग (Path of Grace)

वल्लभाचार्य (1479-1531) ने 'पुष्टिमार्ग' की स्थापना की।

- **दर्शन:** 'शुद्धाद्वैतवाद' (Pure Non-dualism)।
- **पुष्टि का अर्थ:** भगवान की कृपा या अनुग्रह (Grace)। "पोषणं तदनुग्रहः" अर्थात् ईश्वर की कृपा ही आत्मा का पोषण है।
- **राजस्थान संदर्भ:** पुष्टिमार्ग का मुख्य केंद्र **नाथद्वारा (राजसमंद)** है, जहाँ 'श्रीनाथजी' की सात ध्वजाओं का स्वामी माना जाता है।

2.2 सूरदास एवं अष्टछाप (Eight Pillars of Krishna Bhakti)

वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ ने **'अष्टछाप'** के कवियों की स्थापना की। सूरदास इनमें 'पुष्टिमार्ग के जहाज' कहे जाते हैं।

- **सूरसागर:** इसमें कृष्ण की बाल-लीलाओं और 'भ्रमरगीत' प्रसंग का अनूठा वर्णन है।

- **वात्सल्य सम्राट:** सूरदास को 'वात्सल्य रस' का सम्राट माना जाता है क्योंकि उन्होंने बंद आँखों से बाल-कृष्ण का जैसा सजीव चित्रण किया, वैसा विश्व साहित्य में दुर्लभ है।

भाग 3: राजस्थान की मीराबाई (1498–1547) - प्रेम और विद्रोह की प्रतिमूर्ति

मीराबाई सगुण भक्ति धारा की सबसे सशक्त महिला आवाज़ थीं। उन्होंने 'माधुर्य भाव' (ईश्वर को पति मानना) की पराकाष्ठा को छुआ।

3.1 जीवनी एवं साधना

कुड़की (पाली) में जन्मी मीरा का विवाह मेवाड़ के भोजराज (राणा सांगा के पुत्र) से हुआ।

- **विद्रोह:** मीरा ने सामंती बंधनों और पर्दा प्रथा को त्यागकर 'गिरधर गोपाल' की भक्ति को सर्वोपरि माना। यह मध्यकालीन पितृसत्ता के विरुद्ध एक बड़ा धार्मिक विद्रोह था।
- **पदावली:** उनकी रचनाएँ राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा में हैं, जिनमें विरह और समर्पण का अद्भुत समन्वय है।

3.2 सांस्कृतिक प्रभाव

मीरा ने सिद्ध किया कि भक्ति का मार्ग केवल पुरुषों के लिए नहीं है। उनकी भक्ति ने राजस्थान और गुजरात (द्वारका) के लोक-जीवन को गहराई से प्रभावित किया।

भाग 4: गौड़ीय संप्रदाय - चैतन्य महाप्रभु (1486–1534)

पूर्वी भारत (बंगाल और ओडिशा) में भक्ति की लहर चैतन्य महाप्रभु ने फैलाई।

4.1 संकीर्तन आंदोलन (Kirtan Movement)

चैतन्य महाप्रभु ने 'कीर्तन' (ढोलक और झांझ के साथ सामूहिक गायन) को ईश्वर प्राप्ति का सबसे सरल माध्यम बनाया।

- **दर्शन:** 'अचिन्त्य भेदाभेदवाद' (Inconceivable Oneness and Difference)।
- **सामाजिक सुधार:** उन्होंने जाति के बंधनों को तोड़कर चांडालों को भी अपना शिष्य बनाया। 'हरिदास' (मुस्लिम) उनके प्रमुख शिष्य थे।

4.2 वृंदावन का पुनरुद्धार

चैतन्य महाप्रभु ने ही अपने शिष्यों (छह गोस्वामियों) को भेजकर वृंदावन के लुप्त तीर्थों की खोज करवाई। गौड़ीय संप्रदाय का राजस्थान के **जयपुर (गोविंद देवजी)** से गहरा संबंध है।

भाग 5: महाराष्ट्र का भक्ति आंदोलन - वारकरी एवं धारकरी संप्रदाय

महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन ने मराठा शक्ति के उदय हेतु सांस्कृतिक आधार तैयार किया।

5.1 संत ज्ञानेश्वर एवं नामदेव

- **ज्ञानेश्वर:** उन्होंने मराठी भाषा में गीता पर टीका 'ज्ञानेश्वरी' लिखी। उन्हें 'वारकरी संप्रदाय' का संस्थापक माना जाता है।
- **नामदेव:** इन्होंने उत्तर भारत की यात्रा की। इनकी कुछ रचनाएँ सिखों के पवित्र ग्रंथ **'गुरु ग्रंथ साहिब'** में संकलित हैं।

5.2 तुकाराम एवं समर्थ रामदास

- **तुकाराम:** ये शिवाजी के समकालीन थे। उनके **'अभंग'** (मराठी भक्ति गीत) आज भी महाराष्ट्र की जीवन रेखा हैं।
- **रामदास:** ये शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु थे। उन्होंने **'दासबोध'** की रचना की और 'धारकरी' (शक्ति उपासक) संप्रदाय को पुनर्जीवित किया।

wincompete

भाग 6:

शब्दावली	विवरण	ऐतिहासिक/सांस्कृतिक संदर्भ
अष्टछाप	कृष्ण भक्त 8 कवियों का समूह	विट्ठलनाथ द्वारा स्थापित
वारकरी	पंढरपुर के विट्ठल (विष्णु) के उपासक	महाराष्ट्र का भक्ति आंदोलन
गौड़ीय संप्रदाय	चैतन्य महाप्रभु द्वारा बंगाल में स्थापित	कृष्ण भक्ति
अभंग	मराठी भाषा के भक्ति छंद	संत तुकाराम की रचनाएँ
माधुर्य भाव	ईश्वर को प्रेमी या पति के रूप में भजना	मीराबाई का भक्ति भाव

भाग 7: सगुण भक्ति का सामाजिक एवं भाषाई प्रभाव (Critical Analysis)

7.1 लोक भाषाओं का स्वर्ण युग

सगुण संतों ने संस्कृत के 'विद्वत-जाल' से भक्ति को मुक्त कर अवधी, ब्रज, राजस्थानी और मराठी को 'शास्त्रीय' गरिमा प्रदान की। सूर और तुलसी के बिना आधुनिक हिंदी भाषा की कल्पना असंभव है।

7.2 लोकतांत्रिक धर्म

भक्ति ने मंदिर के गर्भगृह को जन-सामान्य के लिए खोल दिया। मूर्ति पूजा और उत्सवों (जैसे होली, दिवाली, रथयात्रा) ने समाज में 'सामूहिक चेतना' पैदा की।

7.3 राजस्थान पर विशिष्ट प्रभाव

वल्लभ संप्रदाय के कारण राजस्थान में 'हवेली संगीत' का विकास हुआ। मीरा के पदों ने राजस्थान की मरू-संस्कृति में प्रेम और करुणा के सुर भरे।

सगुण भक्ति धारा केवल एक आध्यात्मिक विचार नहीं था, बल्कि वह मध्यकालीन भारत की **'सांस्कृतिक ढाल'** थी। जब बाहरी आक्रमणों से समाज हतोत्साहित था, तब तुलसी के 'राम' ने शक्ति और सूर-मीरा के 'कृष्ण' ने जीवन का उल्लास प्रदान किया। **आचार्य रामचंद्र शुक्ल** के अनुसार, "सगुण भक्ति ने धर्म को कर्मकांड की शुष्कता से बचाकर उसे हृदय का विषय बना दिया।"

अध्याय 23: सूफी आंदोलन - रहस्यवाद, मानवीय प्रेम और सांस्कृतिक संश्लेषण

प्रस्तावना: सूफीवाद का स्वरूप एवं परिभाषा

मध्यकालीन भारत में सूफी आंदोलन इस्लाम के भीतर एक उदार, रहस्यवादी और प्रेम-आधारित सुधारवादी धारा के रूप में उभरा। 'सूफी' शब्द की व्युत्पत्ति को लेकर विद्वानों में मतभेद है; कुछ इसे **'सफ'** (पवित्रता) से जोड़ते हैं, तो कुछ **'सूफ'** (ऊन) से, क्योंकि प्रारंभिक सूफी संत सादगी के प्रतीक स्वरूप मोटे ऊनी वस्त्र पहनते थे। सूफीवाद का मूल दर्शन **'इश्क-ए-हकीकी'** (ईश्वर के प्रति प्रेम) और **'इंसान-ए-कामिल'** (पूर्ण मानव) की अवधारणा पर टिका है। इतिहासकारों के अनुसार, सूफी संतों ने तलवार के स्थान पर 'सद्भाव' के माध्यम से भारतीय जनमानस को प्रभावित किया।

भाग 1: सूफी दर्शन और वैचारिक आधार

सूफी मत के विकास में दो प्रमुख दार्शनिक सिद्धांतों की भूमिका रही है, जो अक्सर RPSC की मुख्य परीक्षा (RAS Mains) में पूछे जाते हैं:

1.1 वहदत-उल-वजूद (Unity of Being)

- **प्रतिपादक:** स्पेन के दार्शनिक **इब्न-अल-अरबी**।
- **दर्शन:** "ईश्वर और उसकी सृष्टि (मानव) एक ही हैं।" यह भारतीय 'अद्वैतवाद' के समान है। अकबर की उदार नीतियों पर इसी दर्शन का गहरा प्रभाव था।

1.2 वहदत-उल-शुहूद (Unity of Witness)

- **दर्शन:** यह 'वजूद' के विपरीत कट्टरपंथी विचारधारा है, जो मानती है कि ईश्वर और मानव कभी एक नहीं हो सकते; मानव केवल ईश्वर का दास है। **नक्शबंदी सिलसिले** ने इसे बढ़ावा दिया।

भाग 2:

सूफी संतों के जीवन और उनकी कार्यप्रणाली को समझने के लिए इन पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान 'अभेद्य' है:

शब्द	अर्थ/विवरण
पीर/मुरशिद	आध्यात्मिक गुरु या मार्गदर्शक।
मुरीद	गुरु का शिष्य।
खानकाह	वह स्थान जहाँ सूफी संत निवास करते थे और उपदेश देते थे।

wincompete

वल्लीयत	पीर का उत्तराधिकारी नियुक्त करने की प्रक्रिया।
समा	आध्यात्मिक संगीत गोष्ठी (खुसरो द्वारा विकसित कव्वाली इसका अंग है)।
फना	ईश्वर में पूर्ण विलीन हो जाना (अद्वैत की अवस्था)।
बरकत	सूफी संत की आध्यात्मिक शक्ति या आशीर्वाद।
मलफूजात	सूफी संतों के कथनों या उपदेशों का संग्रह।
ज़ियारत	सूफी संतों की दरगाहों की तीर्थयात्रा।

भाग 3: भारत के प्रमुख सूफी सिलसिले (Sufi Orders)

अबुल फजल ने 'आइने-अकबरी' में **14 सूफी सिलसिलों** का उल्लेख किया है, जिनमें से 4 भारत में सर्वाधिक प्रभावशाली रहे:

3.1 चिश्ती सिलसिला - सादगी और समन्वय का प्रतीक

यह भारत का सबसे प्राचीन और लोकप्रिय सिलसिला है। इसकी स्थापना भारत में **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती** ने की थी।

- **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती (1142–1236):** 1192 ई. में मोहम्मद गौरी के साथ भारत आए और अजमेर को अपनी कर्मभूमि बनाया। उन्हें **'गरीब नवाज'** और **'सुल्तान-उल-हिंद'** कहा जाता है।
- **राजस्थान संदर्भ (Special Point):** ख्वाजा साहब के गुरु उस्मान हारुनी थे। उनकी दरगाह पर पहली पक्की इमारत गयासुद्दीन तुगलक ने बनवाई थी और अकबर ने यहाँ 'बड़ी देग' भेंट की थी।
- **अन्य प्रमुख चिश्ती संत:**
    1. **शेख हमीदुद्दीन नागौरी:** इन्होंने नागौर के 'सुवाल' गाँव को केंद्र बनाया। ख्वाजा साहब ने इन्हें **'तारीकीन'** (सन्यासियों का सुल्तान) की उपाधि दी थी।
    2. **बाबा फरीद:** इनके उपदेशों को सिखों के पवित्र ग्रंथ **'गुरु ग्रंथ साहिब'** में संकलित किया गया है।
    3. **निजामुद्दीन औलिया:** इन्हें 'महबूब-ए-इलाही' कहा जाता है। इन्होंने दिल्ली के 7 सुल्तानों का शासन देखा लेकिन कभी किसी के दरबार में नहीं गए।
    4. **अमीर खुसरो:** औलिया के प्रधान शिष्य, जिन्होंने संगीत और साहित्य के माध्यम से समन्वय किया।

wincompete

3.2 सुहरावर्दी सिलसिला - राज्याश्रय और अनुशासन

इसकी स्थापना **शेख शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी** ने की थी, लेकिन भारत में इसका प्रसार **बहाउद्दीन जकरिया** ने किया।

- **विशेषता:** चिश्तियों के विपरीत, ये संत गरीबी में विश्वास नहीं रखते थे। वे राजकीय पदों को स्वीकार करते थे और शासकों के निकट रहते थे। इनका मुख्य केंद्र **मुल्तान (पंजाब)** था।

3.3 कादिरी सिलसिला - उदारता और बौद्धिकता

इसकी स्थापना **सैय्यद अब्दुल कादिर जिलानी** ने की थी।

- **भारत में प्रभाव:** मुगलों के समय यह बहुत लोकप्रिय हुआ। शाहजहाँ का पुत्र **दारा शिकोह** इसी सिलसिले का अनुयायी था। दारा ने 'मज्म-उल-बहरीन' (दो समुद्रों का मिलन) लिखकर हिंदू और सूफी मत के बीच समानता सिद्ध की।

3.4 नक्शबंदी सिलसिला - कट्टरपंथ और प्रतिक्रिया

यह सिलसिला भारत में ख्वाजा बाकी बिल्लाह द्वारा लाया गया, लेकिन इसे प्रभावी **शेख अहमद सरहिंदी** ने बनाया।

- **अकबर का विरोध:** अहमद सरहिंदी (मुजद्दिद अलिफ सानी) ने अकबर की 'सुलह-ए-कुल' और 'दीन-ए-इलाही' का कड़ा विरोध किया।
- **विशेषता:** यह संगीत (समा) का विरोध करते थे और शरीयत के कड़ाई से पालन पर जोर देते थे। औरंगजेब इसी सिलसिले का अनुयायी था।

भाग 4: सूफीवाद का सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

सूफी आंदोलन ने भारतीय समाज में 'परिवर्तन' के गहरे बीज बोए:

4.1 हिंदू-मुस्लिम सांस्कृतिक संश्लेषण

सूफी संतों ने भारतीय योग, प्राणायाम और ध्यान पद्धतियों को अपनाया। चिश्ती संतों ने 'योगियों' से संवाद किया। इससे दोनों धर्मों के बीच वैचारिक दूरियाँ कम हुईं।

4.2 संगीत और भाषा का विकास

- **कव्वाली:** अमीर खुसरो ने भारतीय और फारसी धुनों को मिलाकर कव्वाली को जन्म दिया, जो सूफी भक्ति का मुख्य अंग बनी।
- **उर्दू/हिंदी का उदय:** सूफी संतों ने जनभाषा (हिंदवी) का प्रयोग किया, जिससे **उर्दू** के प्रारंभिक स्वरूप और **अवधी/ब्रज** के सूफी काव्य (जैसे मलिक मोहम्मद जायसी का 'पद्मावत') का विकास हुआ।

4.3 लोकतांत्रिक अध्यात्म

सूफी खानकाहें सभी जातियों और धर्मों के लिए खुली थीं। यहाँ होने वाला 'लंगर' (सामूहिक भोज) सामाजिक समानता का प्रतीक था।

भाग 5:

व्यक्तित्व	काल/केंद्र	उपाधि/विशेषता
ख्वाजा मोइनुद्दीन	1236 ई. (मृत्यु)	सुल्तान-उल-हिंद

wincompete

हमीदुद्दीन नागौरी	नागौर	सन्यासियों का सुल्तान
बहाउद्दीन जकरिया	मुल्तान	शेख-उल-इस्लाम
दारा शिकोह	दिल्ली	कादिरी अनुयायी, उपनिषदों का अनुवादक
शेख अहमद सरहिंदी	सरहिंद	मुजद्दिद अलिफ सानी (द्वितीय सहस्राब्दी का सुधारक)

भाग 6:

सूफी आंदोलन केवल एक धार्मिक धारा नहीं थी, बल्कि वह मध्यकालीन भारत की **'मानवीय आत्मा'** थी। जहाँ तलवार ने विभाजन किया, वहाँ सूफी प्रेम ने घावों को भरा। अजमेर की दरगाह से लेकर नागौर के गाँवों तक, सूफी संतों ने जो 'सामासिक संस्कृति' विकसित की, वही आज भारत की धर्मनिरपेक्षता का आधार है। **सतीश चंद्र** के अनुसार, "सूफीवाद ने इस्लाम के कठोर ढांचे को भारतीय मिट्टी के अनुकूल बनाकर उसे जन-स्वीकार्य बनाया।"

---

wincompete

अध्याय 24: मध्यकालीन भारत में सामाजिक संरचना एवं जनजीवन

प्रस्तावना: सामाजिक निरंतरता और परिवर्तन

मध्यकालीन भारतीय समाज (1206-1707 ई.) स्थिरता और गतिशीलता का एक अनूठा मिश्रण था। जहाँ एक ओर ग्रामीण समाज अपनी प्राचीन जातिगत संरचना को बनाए हुए था, वहीं दूसरी ओर तुर्क-अफगान और मुगल प्रभाव के कारण शहरों में एक नई 'सामासिक संस्कृति' (Composite Culture) का उदय हो रहा था। इस काल का समाज स्पष्ट रूप से तीन स्तरों में विभाजित था: उच्च वर्ग (शासक और अमीर), मध्यम वर्ग (व्यापारी और पेशेवर), और निम्न वर्ग (किसान, दस्तकार और दास)। इतिहासकारों के अनुसार, मध्यकाल में 'शहरीकरण' और 'व्यावसायिक विविधता' ने भारतीय समाज को वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ा।

भाग 1: सामाजिक पदानुक्रम और श्रेणियाँ

1.1 शासक और अभिजात वर्ग (The Nobility)

मध्यकालीन समाज के शीर्ष पर सुल्तान/बादशाह और उसके अमीर (Noblility) थे।

- **सल्तनत काल:** अमीर मुख्य रूप से तुर्क, ताजिक और बाद में अफगान थे। वे इक्तादार के रूप में शक्तिशाली थे।
- **मुगल काल:** अकबर ने 'मनसबदारी' के माध्यम से अभिजात वर्ग को एक बहु-नस्लीय स्वरूप दिया, जिसमें तुर्क, ईरानी, राजपूती और भारतीय मुसलमानों का संतुलन था।
- **जीवनशैली:** इस वर्ग का जीवन विलासितापूर्ण था। बड़े महल, हरम, और कला को संरक्षण देना इनकी पहचान थी।

1.2 मध्यम वर्ग का उदय

हालिया शोधों (विशेषकर **सतीश चंद्र** और **मोरेलैंड**) के अनुसार, मध्यकाल में एक सुदृढ़ मध्यम वर्ग विद्यमान था।

- **व्यापारी:** हिंदू बनिया और मुस्लिम बोहरा/खोजा व्यापारी अंतरराष्ट्रीय व्यापार को नियंत्रित करते थे।
- **पेशेवर:** हकीम (चिकित्सक), लेखक, संगीतकार और प्रशासनिक अधिकारी इस श्रेणी में आते थे।

1.3 निम्न वर्ग और कृषक समाज

समाज का सबसे बड़ा हिस्सा 'बलाहार' (साधारण किसान) और दस्तकारों का था। **इरफान हबीब** के अनुसार, गाँवों में 'खुत' और 'मुकद्दम' जैसे बिचौलिए किसानों का शोषण करते थे, लेकिन ग्राम समुदाय की अपनी आंतरिक स्वायत्तता बनी रही।

भाग 2: मध्यकालीन शहरीकरण (Medieval Urbanization)

मुगल काल को भारत में 'द्वितीय नगरीकरण' का विस्तार माना जाता है।

2.1 शहरों का विकास और प्रकार

मध्यकाल में शहरों का विकास तीन मुख्य कारणों से हुआ:

1. **प्रशासनिक केंद्र:** दिल्ली, आगरा, फतेहपुर सीकरी और लाहौर।
2. **धार्मिक केंद्र:** बनारस, मथुरा, अजमेर और कांचीपुरम।
3. **व्यापारिक एवं औद्योगिक केंद्र:** अहमदाबाद (कपड़ा), ढाका (मलमल), सूरत (बंदरगाह) और मछलीपट्टनम।

wincompete

2.2 शहरी जीवन की विशेषताएँ

- **बाजार (Mandis):** शहरों के केंद्र में 'नखास' (पशु बाजार) और अनाज मंडियाँ होती थीं।
- **मोहल्ला प्रणाली:** शहर विभिन्न जातियों और व्यवसायों के आधार पर 'मोहल्लों' में विभाजित थे।
- **नगर कोटवाल:** शहरों की सुरक्षा और स्वच्छता का उत्तरदायित्व 'कोटवाल' का होता था।

भाग 3: दास प्रथा - स्वरूप और प्रभाव (Slavery)

मध्यकालीन भारत में दास प्रथा एक स्वीकृत सामाजिक और प्रशासनिक संस्था थी, लेकिन इसका स्वरूप यूरोपीय दासता से भिन्न था।

3.1 सल्तनत काल में दासता

- **दीवान-ए-बंदगान:** फिरोज शाह तुगलक ने दासों की देखरेख के लिए एक पृथक विभाग बनाया। उसके पास **1,80,000 दास** थे।
- **उपयोगिता:** दासों को केवल घरेलू कार्य ही नहीं, बल्कि सैन्य और प्रशासनिक कार्यों में भी लगाया जाता था। कुतुबुद्दीन ऐबक और इल्तुतमिश जैसे दास स्वयं सुल्तान बने।

3.2 मुगल काल में परिवर्तन

अकबर ने 1562 ई. में युद्धबंदियों को दास बनाने की प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया था। मुगलों के समय घरेलू दासों की संख्या अधिक थी, जिन्हें अक्सर परिवार के सदस्य के रूप में देखा जाता था।

भाग 4: महिलाओं की स्थिति - गरिमा और प्रतिबंध

मध्यकालीन समाज पुरुष-प्रधान था, फिर भी महिलाओं ने राजनीति और साहित्य में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

4.1 पर्दा प्रथा और सामाजिक रीति-रिवाज

- **पर्दा:** तुर्क आक्रमण के बाद सुरक्षात्मक कारणों से हिंदू और मुस्लिम दोनों समाजों में पर्दा प्रथा और 'घूंघट' का चलन बढ़ा।
- **सती और जौहर:** राजस्थान के संदर्भ में सती और जौहर प्रथाएँ 'शौर्य' और 'प्रतिष्ठा' का प्रतीक मानी गईं। अकबर ने सती प्रथा को नियंत्रित करने का प्रयास किया था।
- **बाल विवाह:** समाज के निचले और मध्यम वर्गों में बाल विवाह अत्यंत प्रचलित था।

4.2 शिक्षा और राजनीति में महिलाएं

उच्च वर्ग की महिलाओं को शिक्षा और कला का प्रशिक्षण दिया जाता था।

- **रजिया सुल्तान:** दिल्ली की पहली महिला शासिका।
- **गुलबदन बेगम:** हुमायूँ की बहन, जिन्होंने **'हुमायूँनामा'** की रचना की।
- **नूरजहाँ:** जहाँगीर के शासनकाल में वास्तविक शक्ति 'नूरजहाँ गुट' (Junta) के पास थी।
- **जहाँआरा:** शाहजहाँ की पुत्री, जिन्होंने सूफी मत पर ग्रंथ लिखे और वास्तुकला (चाँदनी चौक) को प्रभावित किया।

भाग 5: दैनिक जीवन, खान-पान और मनोरंजन

5.1 आहार और वेशभूषा

- **भोजन:** मुगलों ने 'पुलाव', 'बिरयानी' और 'कबाब' जैसे माँसाहारी व्यंजनों को लोकप्रिय बनाया। शाकाहारी भोजन में दाल, रोटी और दूध के उत्पादों की प्रधानता थी। फल (विशेषकर आम और खरबूजा) और 'पान' का सेवन शिष्टाचार का अंग था।
- **वस्त्र:** मखमल और रेशम का प्रयोग उच्च वर्ग में था। सामान्य जनता सूती कपड़े पहनती थी। 'पगड़ी' सम्मान का सूचक थी।

5.2 मनोरंजन के साधन

- **चौगान (Polo):** यह सुल्तानों का प्रिय खेल था (कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु इसी खेल के दौरान हुई थी)।
- **शिकार (Qamarghah):** मुगल बादशाहों के लिए शिकार एक सैन्य अभ्यास और मनोरंजन दोनों था।
- **शतरंज और पासा:** ये घर के भीतर खेले जाने वाले लोकप्रिय खेल थे।
- **त्योहार:** दीपावली, होली, ईद और 'नौरोज' (फारसी नववर्ष) को सामूहिक रूप से मनाया जाता था।

wincompete

भाग 6:

शब्दावली	विवरण	ऐतिहासिक संदर्भ
मदद-ए-माश	विद्वानों को दी जाने वाली कर-मुक्त भूमि।	सामाजिक-शैक्षिक सहायता
नखास	पशुओं का क्रय-विक्रय केंद्र (बाजार)।	आर्थिक-शहरी जीवन
बलाहार	साधारण या निम्न स्तर का किसान।	सल्तनतकालीन कृषक वर्ग
हुक्का	17वीं सदी में पुर्तगालियों द्वारा तंबाकू लाने के बाद प्रसिद्ध।	सामाजिक व्यसन/मनोरंजन
हरम	राजमहल का वह भाग जहाँ महिलाएँ रहती थीं।	मुगल राजसी जीवन

भाग 7:

मध्यकालीन भारतीय समाज 'जड़' नहीं था, बल्कि वह बाहरी प्रभावों और आंतरिक नवाचारों के बीच समन्वय कर रहा था। जहाँ एक ओर जाति प्रथा ने हिंदू समाज को संगठित रखा, वहीं सूफी और भक्ति संतों ने समाज में 'सद्भाव' का संचार किया। शहरीकरण ने भारत को एक 'कारखाना' बना दिया जिसकी मांग पूरे विश्व में थी। **बर्नियर** और **टैवर्नियर** जैसे यात्रियों ने जहाँ भारत की गरीबी का वर्णन किया, वहीं उन्होंने यहाँ के बाजारों की चकाचौंध को भी स्वीकार किया।

wincompete

अध्याय 25: मध्यकालीन भारत की आर्थिक स्थिति - उत्पादन, विनिमय और समृद्धि

प्रस्तावना: 'सोने की चिड़िया' का आर्थिक आधार

मध्यकालीन भारतीय अर्थव्यवस्था (1206-1707 ई.) एक आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था और एक गतिशील शहरी व्यापारिक तंत्र का अद्भुत समन्वय थी। जहाँ यूरोप 'अंधकार युग' से गुजर रहा था, भारत वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (Global GDP) में लगभग **25%** का योगदान दे रहा था। मध्यकालीन आर्थिक ढांचे के चार मुख्य स्तंभ थे— उन्नत कृषि तकनीक, संगठित लघु उद्योग (कारखाने), वैश्विक व्यापार मार्ग और एक परिष्कृत बैंकिंग प्रणाली (हुंडी)। इतिहासकारों के अनुसार, मुगलों द्वारा दी गई राजनीतिक स्थिरता ने भारत को एक 'आर्थिक महाशक्ति' के रूप में स्थापित किया।

भाग 1: कृषि - साम्राज्य की जीवनरेखा

मध्यकालीन भारत की लगभग 85% जनसंख्या गाँवों में निवास करती थी और कृषि ही राज्य की आय का मुख्य स्रोत थी।

1.1 फसलें और नवाचार

भारतीय किसान अपनी मेहनत और भूमि की उर्वरता के लिए प्रसिद्ध थे।

- **खाद्यान्न:** गेहूँ, चावल, जौ और बाजरा मुख्य फसलें थीं।
- **नकदी फसलें (Cash Crops):** कपास, गन्ना, नील (Indigo) और अफीम का उत्पादन अंतरराष्ट्रीय व्यापार हेतु किया जाता था।
- **नया परिचय:** 17वीं शताब्दी में पुर्तगालियों के प्रभाव से **तंबाकू, मक्का, आलू, मिर्च और टमाटर** जैसी फसलें भारतीय कृषि का हिस्सा बनीं। (RPSC हेतु महत्वपूर्ण तथ्य)।

1.2 सिंचाई तकनीक: रहट (Persian Wheel)

मध्यकाल में सिंचाई के क्षेत्र में 'रहट' का प्रयोग एक बड़ी क्रांति थी। **बाबर** ने अपनी आत्मकथा में इसका विस्तृत वर्णन किया है। गियर और बाल्टियों की इस प्रणाली ने सूखे क्षेत्रों में भी वर्ष में दो से अधिक फसलें लेना संभव बनाया।

1.3 भू-राजस्व प्रणालियाँ (Land Revenue Systems)

- **बटाई (Crop Sharing):** उपज का सीधा बँवारा।
- **जब्ती (Zabti):** अकबर द्वारा शुरू की गई 'दहसाला' प्रणाली, जिसमें पिछले 10 वर्षों की औसत उपज और कीमतों के आधार पर लगान नकद में वसूला जाता था।
- **कंकूत:** खड़ी फसल का अनुमान लगाकर लगान निर्धारित करना।

भाग 2: उद्योग और शिल्प - कारखानों का स्वर्ण काल

मध्यकालीन भारत अपने हस्तशिल्प और वस्त्र उद्योग के लिए विश्वप्रसिद्ध था।

2.1 वस्त्र उद्योग (Textiles)

वस्त्र उद्योग भारत का सबसे बड़ा और संगठित उद्योग था।

- **प्रमुख केंद्र:** ढाका (मलमल), गुजरात (पटोला), और चंदेरी (महीन सूती वस्त्र)।
- **रंगाई एवं छपाई:** सांगानेर (राजस्थान) और मसूलीपट्टनम अपने कलात्मक प्रिंटों के लिए जाने जाते थे।

wincompete

2.2 शाही कारखाने (Karkhanas)

सुल्तानों और मुगल बादशाहों ने विलासिता की वस्तुओं के उत्पादन हेतु राजकीय कारखाने स्थापित किए।

- **प्रबंधन:** इन कारखानों में हजारों कारीगर वेतन पर कार्य करते थे। **बर्नियर** ने मुगल कारखानों की कार्यकुशलता की तुलना यूरोपीय कारखानों से की है।
- **उत्पाद:** अस्त्र-शस्त्र, सोने-चाँदी के आभूषण, जरी के वस्त्र और इत्र।

भाग 3: व्यापार और वाणिज्य - आंतरिक एवं वैश्विक संपर्क

3.1 व्यापारिक समुदाय (Merchants)

- **बंजारे:** ये घुमक्कड़ व्यापारी थे जो बैलगाड़ियों के काफिले (टांडा) में अनाज और नमक का परिवहन करते थे।
- **सेठ और बोहरा:** पश्चिमी भारत (गुजरात/राजस्थान) के व्यापारिक घराने जो बड़े पैमाने पर थोक व्यापार करते थे।

3.2 अंतरराष्ट्रीय व्यापार मार्ग

- **स्थल मार्ग:** मध्य एशिया और फारस से जुड़ने वाला 'सिल्क रूट'। (मुल्तान और लाहौर मुख्य केंद्र थे)।
- **समुद्री मार्ग:** सूरत (मक्का का द्वार), कोचीन और चटगाँव बंदरगाहों से दक्षिण-पूर्वी एशिया और यूरोप तक व्यापार होता था।
- **निर्यात:** सूती वस्त्र, मसाले, नील, और चीनी।
- **आयात:** घोड़े (अरब और मध्य एशिया से), सोना-चाँदी (यूरोप से), और मेवे।

भाग 4: बैंकिंग प्रणाली और मुद्रा (Banking and Currency)

मध्यकाल में भारत में एक अत्यंत जटिल और विश्वसनीय वित्तीय प्रणाली विकसित हुई थी।

4.1 हुंडी (Hundi - Bill of Exchange)

यह मध्यकालीन बैंकिंग की सबसे बड़ी देन थी।

- **कार्यप्रणाली:** हुंडी एक ऋण पत्र या विनिमय पत्र होता था जिसके माध्यम से एक व्यापारी दूसरे शहर में नकद राशि प्राप्त कर सकता था। इससे धन के भौतिक परिवहन का जोखिम कम हो गया।
- **सर्राफ (Sarrafs):** ये मध्यकालीन 'बैंकर' थे जो मुद्रा बदलने, हुंडी जारी करने और ऋण देने का कार्य करते थे। उनकी साख इतनी मजबूत थी कि उनकी हुंडियाँ विदेश में भी स्वीकार की जाती थीं।

4.2 मुद्रा प्रणाली (Coinage)

- **सल्तनत काल:** इल्तुतमिश का **'टका'** (चाँदी) और 'जीतल' (ताँबा)।
- **शेरशाह का सुधार:** उसने शुद्ध चाँदी का **'रुपया'** (178 ग्रेन) चलाया, जो आधुनिक भारतीय मुद्रा का पूर्वज है।
- **मुगल काल:** अकबर की स्वर्ण मुद्रा **'मुहर'** और चाँदी का 'रुपया'। लेनदेन का सबसे छोटा माध्यम ताँबे का **'दाम'** था।

भाग 5: शहरों की आर्थिक भूमिका (The Urban Economy)

मध्यकालीन शहर केवल प्रशासनिक केंद्र नहीं थे, बल्कि वे 'आर्थिक उपभोग' के केंद्र थे। **मोरेलैंड** के अनुसार, शहरों की मांग ने ग्रामीण उत्पादन को प्रोत्साहित किया।

- **नगर सेठ:** प्रत्येक शहर का एक प्रभावशाली व्यापारिक प्रमुख होता था जो सरकार और व्यापारियों के बीच कड़ी का काम करता था।

wincompete

भाग 6:

शब्दावली	विवरण	ऐतिहासिक संदर्भ
दहसाला	10 वर्षीय राजस्व प्रणाली (टोडरमल)	कृषि वित्त
हुंडी	विनिमय पत्र (Bill of Exchange)	बैंकिंग
तकावी/सोनधर	किसानों को दिया जाने वाला अग्रिम कृषि ऋण	आपदा प्रबंधन
बीमा	17वीं सदी में समुद्री व्यापार हेतु बीमा प्रणाली का उदय	जोखिम प्रबंधन
दाम	ताँबे का सिक्का (1 रुपया = 40 दाम)	मुद्रा व्यवस्था

भाग 7: मध्यकालीन अर्थव्यवस्था का पतन या विकास? (Critical Analysis)

इतिहासकारों में इस बात पर बहस है कि क्या 18वीं शताब्दी में भारतीय अर्थव्यवस्था गिर रही थी?

- **सकारात्मक पक्ष:** कृषि उत्पादन और व्यापारिक जाल औरंगजेब के समय तक विस्तृत था।
- **नकारात्मक पक्ष:** जागीरदारी संकट और निरंतर युद्धों ने वित्तीय संसाधनों को सोख लिया।
- **निष्कर्ष:** भारत की आर्थिक समृद्धि ही वह मुख्य कारण था जिसने यूरोपीय शक्तियों (पुर्तगाली, डच, अंग्रेज) को भारत की ओर आकर्षित किया।

मध्यकालीन भारत की आर्थिक स्थिति एक 'परिपक्व सामंतवाद' और 'उभरते व्यापारिक पूंजीवाद' का मिश्रण थी। हुंडी प्रणाली और रुपया जैसी मुद्रा ने भारत को एक एकीकृत बाजार में बदला। **इरफान हबीब** के अनुसार, "मुगल भारत एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था थी जहाँ अधिशेष (Surplus) उत्पादन ने विश्व के बाजारों को हिला दिया था।" यही आर्थिक आधार था जिसने ताजमहल जैसी भव्य इमारतों और तानसेन जैसे कलाकारों के संरक्षण को संभव बनाया।